Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 01 • 06 अक्टूबर - 12 अक्टूबर, 2025 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 04-10-2025 • पेज 20 ₹ 10 रुपये

दुःषमाकाल

वैराग घट्यो ने भेष बधियो,
हाथ्यांरो भार गधां लदियो।
थक गया बोझ दियो रालो,
एहवा भेषधारी पांच में कालो।।

वैराग्य घटा है, भेख बढ़ा है हाथियों का भार गधों पर लादा गया है। गधे थक गए और भार को उतार फेंका। ऐसे ही हैं भेखधारी पंचमकाल में।

– आचार्यश्री भिक्षु

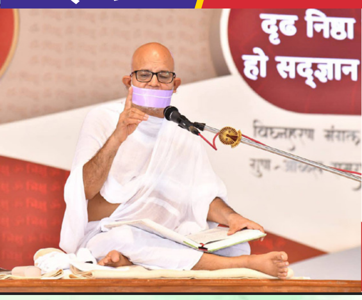

व्यक्ति जैसा करता है, वैसा ही भोगता है : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

शक्ति का उद्देश्य हो स्व और पर कल्याण : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 18

Address Here

मीडिया का व्यक्ति हो निर्भीक : आचार्यश्री महाश्रमण

इण्डिया टीवी के प्रधान संपादक रजत शर्मा को आचार्यश्री तुलसी सम्मान से किया गया सम्मानित

कोबा, गांधीनगर।
28 सितम्बर, 2025

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, महातपस्वी, शान्तिदूत, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि में गुजरात व महाराष्ट्र के राज्यपाल आचार्य देवव्रत, गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र भाई पटेल और इंडिया टीवी के अध्यक्ष व प्रधान संपादक रजत शर्मा का पदार्पण हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में सर्वप्रथम साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि जैन आगमों में प्रवृत्ति के तीन स्रोत बताए गए हैं – मन, वचन और काय। इस प्रवृत्ति को जैन दर्शन में योग कहा जाता है। इन तीनों में सबसे अधिक प्रवृत्ति मन की होती है। मन तीन कार्य संपादित करता है – स्मृति, चिंतन और कल्पना। चिंतन नकारात्मक और सकारात्मक हो सकता है। नकारात्मक चिंतन हमें विनाश की ओर, और सकारात्मक चिंतन विकास की ओर ले जाने वाला होता है। अतः जीवन और साधना के क्षेत्र में हमें अपने चिंतन को सकारात्मक बनाए रखना चाहिए।

तत्पश्चात् नवरात्रि के संदर्भ में आचार्य प्रवर द्वारा आध्यात्मिक अनुष्ठान का प्रारंभ मंगल मंत्रों के समुच्चारण से हुआ। इसी बीच गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र भाई पटेल गुरुदेव की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुए। अनुष्ठान संपन्न होने तक श्री पटेल बैठे रहे और संपन्नता पर आचार्यश्री के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।तदुपरान्त आचार्य प्रवर की मंगल सन्निधि में गुजरात व महाराष्ट्र के राज्यपाल आचार्य देवव्रत तथा इंडिया टीवी के अध्यक्ष व प्रधान संपादक रजत शर्मा उपस्थित हुए।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन संबोध प्रदान करते हुए कहा कि धर्म उत्कृष्ट मंगल है। अहिंसा, संयम और तप धर्म हैं। यह अहिंसा, संयम और तप रूपी धर्म सम्प्रदायातीत हैं। जिसके जीवन में धर्म है, उसके साथ मंगल है। भारत में अनेक संत और महर्षि हुए हैं, और यह संत परंपरा चल रही है – यह सौभाग्य की बात है। साधुओं का अभाव दुनिया में कभी भी नहीं होता। बीसवीं शताब्दी में आचार्यश्री तुलसी हुए। बाल्यावस्था में वे संत बने और उसके बाद आचार्य बने। उन्होंने अणुव्रत आंदोलन शुरू किया, जिसमें छोटे-छोटे संकल्पों को स्वीकार कर व्यक्ति अच्छा बन सकता है।

(शेष पेज 17 पर)

आज्ञा में हो पुरुषार्थ का प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
26 सितम्बर, 2025

नवरात्र के संदर्भ में चल रहे आध्यात्मिक अनुष्ठान का उपक्रम संपन्न कर परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि दो शब्द हैं – एक है आज्ञा और दूसरा है अनाज्ञा। शास्त्रों का उपदेश, ज्ञानियों की वाणी ही आज्ञा है। अपनी उच्छृंखलता से कोई कार्य करना अर्थात् अनुपदेश ही अनाज्ञा का कार्य हो जाता है। जो मुनि दीक्षा ले लेते हैं, वे कभी अनाज्ञा में उद्यमी और आज्ञा में अनुद्यमी हो जाते हैं। अर्थात् साधु शास्त्रों की और गुरु की आज्ञा में नहीं चलता, ऐसी स्थिति हो सकती है, परन्तु शास्त्र में कहा गया है कि यह बात मन में भी नहीं आनी चाहिए कि मैं अनाज्ञा में उद्यम करूं और आज्ञा में अनुद्यम करूं।

विद्यार्थी, संगठन के कार्यकर्ता या परिवार के सदस्य जब एक आज्ञा और अनुशासन में चलते हैं तो अच्छा कार्य कर पाते हैं। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अनुशासन में नहीं रहते, सन्मार्ग पर नहीं चलते और भौतिकता में रुचि लेते हैं। विद्यालय का विद्यार्थी यदि शिक्षक के अनुशासन में चलकर अध्ययनशील बनता है तो वह आगे बढ़ता है, जबकि अनुशासनहीन विद्यार्थी प्रगति से वंचित रह जाते हैं। अतः धर्म, राजनीति या समाज – किसी भी क्षेत्र में अनुशासन अनिवार्य है। आदमी के जीवन में स्वयं का अनुशासन होना चाहिए।

अणुव्रत का घोष है – निज पर शासन, फिर अनुशासन। दूसरों पर वही व्यक्ति शासन कर सकता है जो स्वयं अनुशासित होता है। वाणी पर, आचरण पर अनुशासन आवश्यक है। शास्त्र और गुरु की आज्ञा के अनुरूप संदेश-निर्देशों का पालन करते हुए अनुशासन में रहना और अनुशासन के प्रति जागरूक बने रहना चाहिए। जिसमें आज्ञा न हो उसमें पुरुषार्थ नहीं करना चाहिए।

सेना, चिकित्सा, वकालत आदि क्षेत्रों की सफलता भी प्रशिक्षण पर निर्भर होती है। जैसे यदि प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षकों की सही ट्रेनिंग हो जाए तो वे उत्तम प्रशिक्षण प्रदान कर सकते हैं। ठीक उसी प्रकार किसी भी क्षेत्र में सम्यक् पुरुषार्थ आवश्यक है। पुरुषार्थ का फल तत्काल न भी मिले, फिर भी हमें सत्पुरुषार्थ करते रहना चाहिए।

(शेष पेज 17 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
06 अक्टूबर - 12 अक्टूबर, 2025

शुद्धोपयोग से संभव है साधना का उत्तम अनुभव : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
25 सितम्बर, 2025

सिद्धसाधक, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि में नवरात्र के संदर्भ में चतुर्थ दिवस भी आध्यात्मिक अनुष्ठान का उपक्रम हुआ। पूज्य गुरुदेव ने विशाल जन समूह को वीर भिक्षु समवसरण में मंत्र जाप करवाते हुए अनुष्ठान संपन्न करवाया। इसके पश्चात् आचार्यश्री ने 'आयारो' आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा— 'जो आत्मा है, वह ज्ञाता है और जो ज्ञाता है, वह आत्मा है। जिस साधन से आत्मा जानती है, वह ज्ञान आत्मा है।'

जैन दर्शन में आठ आत्माएं बताई गई हैं, जिनमें एक द्रव्य आत्मा है और शेष सात भाव आत्माएं हैं। द्रव्य आत्मा, उपयोग आत्मा और दर्शन आत्मा हर जीव में प्राप्त होती है। द्रव्य आत्मा और उपयोग आत्मा का अविनाभावी संबंध बताया गया—द्रव्य आत्मा के बिना उपयोग आत्मा और उपयोग आत्मा के बिना द्रव्य आत्मा का अस्तित्व संभव नहीं।

इस प्रकार प्रत्येक जीव में कम से कम चार आत्माएं तो अवश्य होती हैं:

1. द्रव्य आत्मा
2. उपयोग आत्मा
3. ज्ञान आत्मा
4. दर्शन आत्मा

आचार्य प्रवर ने आगे कहा कि हर जीव में न्यूनतम बोध होता ही है। यदि ज्ञानावरणीय कर्म का थोड़ा भी क्षयोपशम न हो तो जीव और अजीव में कोई भेद ही न रहे। आचार्यश्री ने प्रेक्षाध्यान की साधना पर बल देते हुए कहा—

प्रेक्षाध्यान में उपयोग आत्मा रहनी चाहिए, कषाय आत्मा सक्रिय नहीं रहनी चाहिए।

उपयोग आत्मा निर्मल रहे, उसके साथ कषाय न जुड़े।

प्रिय-अप्रिय की प्रवृत्ति से बचना चाहिए।

ज्ञाता-द्रष्टा भाव से साधना हो तो अध्यात्म की उन्नति संभव है।

पूज्य गुरुदेव ने समझाया कि यदि कषाय प्रबल हो जाए तो उपयोग पर आवरण आ जाता है। साधना का उद्देश्य शुद्धोपयोग में रहना होना चाहिए— 'न शुभ योग, न अशुभ योग और न कषाय—केवल शुद्धोपयोग। साधक जितना अधिक शुद्धोपयोग में रहेगा, उतना ही उत्तम साधना का अनुभव करेगा।' प्रेक्षाध्यान शिविर के संदर्भ में पूज्य गुरुदेव ने कहा— 'शिविर चल रहा है, जितना संभव हो सके शुद्धोपयोग में रहें। ध्यान में विचारों का प्रवाह कम करने का प्रयास करें।' मंगल प्रवचन के पश्चात् आचार्य प्रवर ने समुपस्थित शिविरार्थियों को प्रेक्षाध्यान का प्रयोग भी करवाया।

व्यक्ति जैसा करता है, वैसा ही भोगता है : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
24 सितम्बर, 2025

शक्ति के अजस्र स्रोत युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में नवरात्र के संदर्भ में चल रहे आध्यात्मिक अनुष्ठान का क्रम तीसरे दिवस भी जारी रहा। परम पूज्य गुरुदेव ने हजारों श्रद्धालुओं को मंत्र जाप कर आध्यात्मिक अनुष्ठान करवाया। पूज्य गुरुदेव ने आयारो आगम के माध्यम से पावन देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि अपना किया हुआ कर्म, अपने को ही भुगतना होता है इसलिए किसी के हनन की इच्छा मत करो। व्यक्ति आक्रोश, द्वेष या लोभ आने से हिंसा में प्रवृत्त हो जाता है। शास्त्र में कहा गया है कि जैसा संवेदन तुमने दूसरे को कराया है, वही संवेदन तुम्हें करना पड़ेगा। व्यक्ति हिंसा करता है तो यह सोचे कि इस जीव के प्राण हनन करने पर इसे कैसा संवेदन होगा? कितना दुःख होगा? यदि मैं आज इस जीव को मारूंगा तो कभी मुझे भी वैसी ही संवेदना करनी पड़ेगी। इसलिए यही श्रेयस्कर है कि मैं इस प्रकार प्राणी की हत्या न करूं। मैं संकल्पजा हिंसा न करूं।

व्यक्ति जैसा करता है, वैसा ही उसे भोगना होता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए हिंसा और हत्या से बचने का प्रयास करना चाहिए। छोटे-छोटे कार्य भी हम करते हैं वे रिकॉर्ड होते हैं और उनका परिणाम हमें भुगतना होता है। साधु जिन्दगी भर के लिए अहिंसा महाव्रत स्वीकार करता है। अनजाने में भी किसी प्राणी की साधु से हिंसा न हो जाए, यह जागरूकता रखता है। भोजन पकाना नहीं, पकवाना नहीं, पैदल चलना, मुख वस्त्रिका, रजोहरण, आदि अहिंसा के पालन के लिए ही रखे जाते हैं।

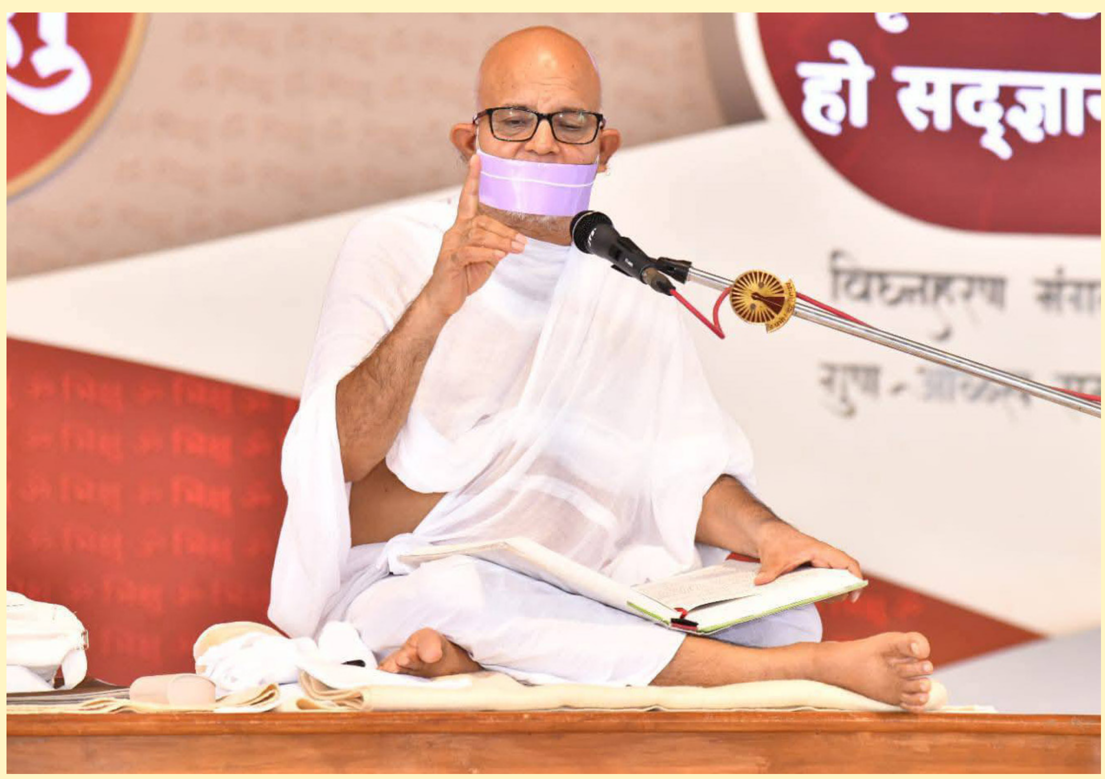

गृहस्थों के लिए हिंसा से पूर्णतया बचना बहुत मुश्किल है, उसे कई ऐसे सांसारिक कार्य करने पड़ते हैं जिनमें हिंसा होती है। कभी आत्म रक्षा या देश रक्षा के लिए भी हिंसा करनी पड़ सकती है। परन्तु गृहस्थों को संकल्पजा हिंसा से बचने का प्रयास करना चाहिए। गृहस्थ जीवन में हिंसा, चोरी, छल-कपट से बचने का प्रयास करना चाहिए। दुःख की उत्पत्ति का एक कारण हिंसा है, जहां अहिंसा होगी वहां शान्ति रहेगी किसी प्रकार का भय नहीं रहेगा। अतः जहां तक हो सके जीवन में ईमानदारी, नैतिकता व अहिंसा के पालन का प्रयास करना चाहिए। न्यायालय में किसी के विरुद्ध झूठी गवाही नहीं देनी चाहिए क्योंकि व्यक्ति जो भी कार्य करता है, उसे वैसा ही फल भोगना होता है। अतः व्यक्ति को अधिक से अधिक पापों से बचने और स्वयं के कल्याण का प्रयास करना चाहिए।

पूज्य प्रवर की अमृत देशना से पूर्व पश्चात् साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी ने उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा कि आत्म निरीक्षण, अध्यात्म निष्ठा का एक महत्त्वपूर्ण घटक तत्त्व है। आत्म निरीक्षण करना, स्वयं को देखना बहुत कठिन कार्य है।

आत्म निरीक्षण से हम हमारा भीतरी सौन्दर्य निखार सकते हैं, अपना स्वयं का परिष्कार कर सकते हैं, अपना आत्म विकास कर सकते हैं।

पांच बिन्दुओं से हम अपने दोषों का परिष्कार कर सकते हैं, ये पांच बिन्दु हैं - संकल्प, शमन, संकल्प का स्मरण, प्रतिक्रमण और जागरण। हमें आत्म निरीक्षण के इन बिन्दुओं को जीवन में उतार कर अपने दोषों का परिष्कार करना चाहिए।

मृत्यु को महोत्सव मनाने की कला है जैन दर्शन में

संथारा साधिका तारा देवी बैद की 77 दिन की संलेखना और संथारा साधना हुई पूर्ण

गंगाशहर।

संथारा साधिका तारा देवी बैद की स्मृति सभा में उद्बोधन देते हुए उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि संसार में जैन धर्म ही ऐसा धर्म है जो जीने की कला के साथ मरने की भी कला सिखाता है। मृत्यु को महोत्सव मनाने की कला केवल जैन दर्शन में ही है।

मुनि श्री ने कहा कि जब व्यक्ति शरीर की नश्वरता को समझकर समता और शांति के साथ मृत्यु का वरण करता है, तब वह संथारे के माध्यम से जीवन का परम लक्ष्य प्राप्त करता है। इसमें न जीने की कामना होती है, न मरने की— केवल समभाव से आत्मा की उन्नति की भावना रहती है। संथारा वास्तव में मृत्यु की सर्वोत्तम कला है, जिससे मृत्यु भी महोत्सव बन जाती है।

उन्होंने कहा कि तारा देवी धार्मिक, सेवाभावी, सादगीपूर्ण और कषाय रहित जीवन जीने वाली महिला थीं। उन्होंने उच्च मनोबल, समता और सहिष्णुता के साथ संथारा की साधना पूर्ण की। मुनि श्री ने उनकी आत्मा की मोक्षगामिता की कामना करते हुए एक लोगस्स का ध्यान करवाया।

बीकानेर निवासी माणकचन्द जतनदेवी आरी की सुपुत्री गंगाशहर निवासी रतनलाल केशर देवी बैद के सुपुत्र एवं मुनि कमलकुमार जी के संसार पक्षीय छोटे भाई विजयकुमार बैद की धर्मपत्नी संथारा साधिका श्राविका तारादेवी का अनशन दिनांक 29 सितम्बर 2025, सोमवार प्रातः 3:38 बजे सानंद संपन्न हुआ। उन्होंने 54 दिन की संलेखना तपस्या और 23 दिन के तिविहार अनशन की साधना की। 14 जुलाई 2025 को उन्होंने तपस्या का आरंभ किया था। 6 सितम्बर 2025 को उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने सेवाकेन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी विशदप्रज्ञा जी, साध्वी लब्धियशा जी तथा श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति में तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान करवाया था।

मुनि श्री ने कहा कि तारादेवी ने अपने जीवन को धर्ममय बनाया। उन्होंने अपने सास-ससुर और 'शासनश्री' साध्वी सोमलता जी की अंतिम समय तक सेवा की, परिवार का आदर-सम्मान बनाए रखा और आत्मीय संबंधों की मिसाल कायम की।

मुनि श्री ने उनके जीवन को आदर्श बताते हुए कहा कि 'जीवन जीना एक कला है, तो मृत्यु भी अपने आप में एक कला है।' उन्होंने विजय कुमार जी बैद के धैर्य और श्रद्धा की प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्होंने स्वाध्याय और प्रतिक्रमण के सहारे संथारे में निरंतर साधना का वातावरण बनाए रखा।

इस अवसर पर मुनि श्रेयांस कुमार जी ने मुक्तकों के माध्यम से तारादेवी के संथारे की अनुमोदना की, तथा मुनि विमलविहारी जी ने मंगल भावना व्यक्त की। कार्यक्रम में परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी एवं साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी के पावन संदेश भी का भी वाचन किया गया। देशभर से साधु-साध्वियों के मंगल संदेश पहुंचे।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा गंगाशहर से पवन छाजेड़, तेरापंथ न्यास से जैन लूणकरण छाजेड़, तेयुप से मांगीलाल बोथरा, महिला मंडल से प्रेम बोथरा, टीपीएफ से रतन छल्लाणी, अणुव्रत समिति से कन्हैयालाल बोथरा, नागरिक समिति से जतनलाल दूगड़ तथा शांति प्रतिष्ठान से धर्मेन्द्र डाकलिया ने अपने विचार व्यक्त किए। गायक मंडली ने भक्ति गीतों के माध्यम से श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

परिवार की ओर से ललिता देवी बोथरा, कान्ता देवी नाहटा, पुत्री वर्षा बेताला, नेमचंद जी चोपड़ा सहित अन्य सदस्यों ने तारा देवी के संथारे की अनुमोदना करते हुए सभी का आभार व्यक्त किया।

तेरह दिवसीय प्रवास रहा प्रभावक

हांगकांग।

डॉ. समणी निर्देशिका ज्योतिप्रज्ञा जी एवं डॉ. समणी मानसप्रज्ञा जी का त्रयोदश दिवसीय प्रवास हांगकांग में अत्यंत प्रभावक रहा। समणी ज्योतिप्रज्ञा जी का प्रथम कार्यक्रम सकल जैन समाज के बीच भव्य स्टार हाउस में आयोजित हुआ। आपने 'चतुर्विंशति स्तव' अर्थात चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति पर प्रवचन दिया और कहा कि तीर्थंकर धरती की सर्वोत्कृष्ट पुण्यात्मा का नाम है। चतुर्विंशति स्तवना से सम्यक्त्व की विशुद्धि होती है। आपने लोगस्स पाठ का गूढ़ विश्लेषण करते हुए बताया कि 'आरोग्गबोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु' इस एक चरण के जप से आठों कर्मों का क्षय संभव है।

डॉ. समणी मानसप्रज्ञा जी ने पर्युषण के अवसर पर बाह्य शुद्धि से अधिक अंतरंग शुद्धि पर बल देते हुए कहा कि वास्तविक सफाई आत्मा की आंतरिक मलिनताओं से होती है। पर्युषण महापर्व का प्रथम दिवस खाद्य संयम दिवस के रूप में मनाया गया। समणी ज्योतिप्रज्ञा जी ने आहार शुद्धि के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा— 'गुड फूड, गुड मूड।' भोजन सात्विक होगा तो विचार भी सात्विक होंगे। आपने विशेष रूप से रात्रि भोजन त्याग की प्रेरणा दी। द्वितीय दिवस स्वाध्याय दिवस पर समणी ज्योतिप्रज्ञा जी ने आगम स्वाध्याय की प्रेरणा दी और कहा कि आगम श्रवण व पठन महानिर्जरा का हेतु है। आपने आवश्यक सूत्र प्रतिक्रमण की महत्ता बताते हुए समझाया कि यह अशुभयोग से शुभयोग की ओर, और विज्ञान से स्वभाव की ओर ले जाने वाला साधन है। भाई-बहिनों ने पंचरंगी स्वाध्याय किया।

तृतीय दिवस सामायिक दिवस के रूप में मनाया गया। स्थानकवासी समाज के मध्य आयोजित कार्यक्रम में समणी ज्योतिप्रज्ञा जी ने कहा— 'समता ही धर्म है, समता ही कर्म है।' क्रोध तन-मन को असंतुलित कर अधोगति का कारण बनता है, जबकि समता में ही जीवन का संतुलन संभव है। रात्रिकालीन कार्यक्रम में आपने बताया कि एक सामायिक से आठों कर्मों का क्षय संभव है। चतुर्थ दिवस वाणी संयम दिवस पर समणी ज्योतिप्रज्ञा जी ने कहा—'शब्द यात्रा करते हैं। पवित्र शब्द शत्रु को भी मित्र बना सकते हैं।' सॉरी कहने से ग्लोरी बढ़ती है और आत्मपरक गीतों की धुन जीवन को अंतर्मुखी बनाने में सहायक हो सकती है।

पंचम दिवस अणुव्रत दिवस पर आपने जैन धर्म की आधारशिला 'नव तत्व' का सुंदर विवेचन किया। आपने कहा कि संवर और निर्जरा ही आत्मकल्याण के हेतु हैं। संवर कर्मागमन को रोकता है और अणुव्रती बनना संवर की साधना का ही रूप है। जप दिवस पर 40 से अधिक भाई-बहिनों ने आचार्य भिक्षु की 300वीं जयंती के उपलक्ष्य में 'भिक्खू स्याम' के सवा लाख जप का संकल्प लिया। समणी ज्योतिप्रज्ञा जी ने 'उपसर्गहर स्तोत्र' का अनुष्ठान करवाया और उसका अर्थ व रहस्य समझाया।

सप्तम दिवस ध्यान दिवस पर कई तपस्वियों ने अठाई की तपस्या कर नया कीर्तिमान स्थापित किया। समणी जी ने दीर्घश्वास प्रेक्षा का महत्व बताते हुए कहा कि श्वास भोजन और जल से भी अधिक महत्वपूर्ण है। दीर्घश्वास प्रेक्षा तन को स्वस्थ, मन को प्रसन्न और आत्मा को निर्मल बनाती है। संवत्सरी के दिन पैंसठिया छंद का अनुष्ठान हुआ। आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा रचित 'आत्मा की पोथी' का संगान हुआ। आपने कहा कि यह दिन आत्मचिंतन और क्षमायाचना का है। समणी मानसप्रज्ञा जी ने आचार्य वज्रस्वामी का रोचक इतिहास सुनाया, जबकि समणी ज्योतिप्रज्ञा जी ने सुलसा महासती का प्रसंग प्रस्तुत करते हुए प्रियधर्मा और दृढ़धर्मा बनने की प्रेरणा दी।

समणी जी के प्रवास के दौरान लगभग सभी कार्यक्रम प्रोजेक्टर की सहायता से हुए, जो विशेष आकर्षण का केंद्र बने, प्रतिदिन ध्यान की कक्षाएं भी चली। प्रवास के अंतिम दिन अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने समणीद्वय के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। प्रवास के सफल प्रबंधन में विकास बेगवानी एवं मंत्री धनपत बोरड़ का विशेष योगदान रहा।

सत्य और सुधार के निर्भीक पथप्रदर्शक थे आचार्य भिक्षु

शाहदरा-दिल्ली।

ओसवाल भवन, विवेक विहार में तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु का 223वां निर्वाण दिवस बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। मुनिश्री ने अपने प्रवचन में कहा— 'आचार्य भिक्षु केवल एक साधु नहीं, बल्कि युगपुरुष और विचार-क्रांति के प्रणेता थे। उन्होंने शिथिलाचार का विरोध कर सत्य, अहिंसा और अनुशासन की एक नवीन धारा का प्रवाह किया। उनका निर्भीक, सत्यनिष्ठ और सुधारवादी जीवन प्रत्येक साधक एवं समाज के लिए दीपस्तंभ है। आज के समय में जब समाज को नैतिकता और शुद्ध आचरण की सर्वाधिक आवश्यकता है, तब आचार्य भिक्षु के विचार ही हमारे लिए पथप्रदर्शक बन सकते हैं।'

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुआ। इस पावन अवसर पर जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा दिल्ली के उपाध्यक्ष रंजीत भंसाली, जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा-शाहदरा के अध्यक्ष राजेंद्र सिंघी, जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा-गांधीनगर के अध्यक्ष निर्मल छलाणी, जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा गाज़ियाबाद के मंत्री रमेश बैंगानी, जैन श्वेतांबर तेरापंथ महिला मंडल पूर्वी दिल्ली की अध्यक्ष मंगला कुंडलिया, तेरापंथ युवक परिषद दिल्ली के अध्यक्ष पवन श्यामसुखा, तेरापंथ युवक परिषद गांधीनगर के अध्यक्ष क्रांति बरडिया, विजया मालू तथा अन्य वक्ताओं ने आचार्य भिक्षु को श्रद्धांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम का समापन संघगान के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री सुरेश भंसाली ने किया। रात्रि में विशेष 'भिक्षु स्वरांजलि' का आयोजन हुआ, जिसका संयोजकीय दायित्व जयसिंह दुगड़ ने संभाला। जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया एवं मंत्री प्रमोद घोड़ावत ने अपने प्रासंगिक विचार रखे। इस कार्यक्रम में दिल्ली के सुप्रसिद्ध गायक कलाकारों और श्रद्धालुओं ने गीत, भजन और कविताओं के माध्यम से आचार्य भिक्षु के प्रति अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त कीं। कार्यक्रम का संचालन दीपिका नाहटा ने किया।

❖ आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।

– आचार्य श्री महाश्रमण

क्षितिज 2.0 सीपीएस ट्रेनर्स कॉनक्लेव का हुआ आयोजन

अहमदाबाद।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में CPS एकेडमी के दो दिवसीय 'क्षितिज 2.0 ट्रेनर्स कॉनक्लेव' का आयोजन आचार्य श्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में हुआ। पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने सभी प्रशिक्षकों को मंगल उद्बोधन देते हुए फरमाया कि वक्तृत्व कला को यदि शरीर मानें तो उसकी आत्मा है ज्ञान। यदि आत्मा स्वस्थ रहेगी तो शरीर स्वस्थ रहेगा। आचार्य प्रवर ने सभी प्रशिक्षकों को निरंतर अध्ययन और विनम्र रहने की प्रेरणा दी।

मुख्यमुनि श्री महावीरकुमार जी ने सभी प्रशिक्षकों को भौतिक ज्ञान ग्रहण करने के साथ आध्यात्मिक ज्ञान ग्रहण करने की प्रेरणा दी। साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने प्रेरणा देते हुए कहा कि प्रशिक्षक तत्वज्ञान, 25 बोल, तेरापंथ दर्शन और सिद्धान्त सीखें। साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने कहा की सभी धर्म संघ के प्रति समर्पित रहकर लक्ष्य को प्राप्त करें। अभातेयुप आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेशकुमार जी ने कहा कि सीपीएस एकेडमी अब केवल एक आयाम नहीं है यह तेरापंथ धर्म संघ की प्रभावना और युवाओं को संघ से जोड़ने का सशक्त माध्यम है।

उद्घाटन सत्र में राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि सीपीएस केवल वक्तृत्व कला नहीं अपितु व्यक्तित्व को भी निखारती है और पिछले 2 वर्षों में CPS एकेडमी द्वारा उल्लेखनीय कार्य हुआ है। राष्ट्रीय महामंत्री अमित नाहटा ने सीपीएस टीम को बधाई देते हुए कहा कि सीपीएस ने इस कार्यकाल ने देशभर में धूम मचाई है और निरंतर कार्य कर रही है। राष्ट्रीय प्रभारी दिनेश मरोठी ने सीपीएस एकेडमी के बारे में जानकारी देते हुए कहा की अब सीपीएस में अनेक नई कार्यशालाओं का समावेश किया गया है। जिसमे लीडरशिप, मैनेजमेंट, रिलेशनशिप, संगठन आदि अनेक कार्यशालाएं होगी। राष्ट्रीय सहप्रभारी सोनू डागा ने पिछले 2 वर्ष में हुई कार्यशालाओं की जानकारी दी। मुख्य प्रशिक्षक अरविंद मांडोत ने सीपीएस एवं अन्य कार्यक्रमों के बारे में सभी प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित किया एवं कहा कि जब भी आपको अवसर मिले अपना सर्वश्रेष्ठ देने का प्रयत्न करे और अपने आपको अपडेट करते रहें।

कार्यक्रम के प्रारंभ में सभी प्रशिक्षकों का सीपीएस एकेडमी की तरफ़ से स्वागत किया गया। इस कॉनक्लेव में विभिन्न सत्रों में राष्ट्रीय प्रशिक्षकों ने अनेक विषयों पर अपनी प्रस्तुति दी। पिछले 2 वर्ष में सेवा देने वाले सभी प्रशिक्षकों का स्मृति चिह्न से सम्मान किया गया। आचार्य प्रवर के सान्निध्य में इस वर्ष बनने वाले 13 नए प्रशिक्षकों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

इस कॉनक्लेव में आगामी एक वर्ष के लक्ष्य का निर्धारण के साथ 'कैसे सोचें?' पुस्तक पर अध्ययन की प्रेरणा दी गई। कॉनक्लेव के सफल आयोजन में अहमदाबाद से कुलदीप नौलखा, अमराईवाड़ी से आकाश शाह, मुकेश जैन, हितेश चपलोत, भरत जैन आदि कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा।

चरित्र को परिपक्व बनाती है तपस्या

शाहदरा-दिल्ली।

बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में विवेक विहार के ओसवाल भवन, दिल्ली में दो तपस्वियों – विमल सिंह बैद (75 दिन की तपस्या) एवं हनुमान सेठिया (38 दिन की तपस्या) – के तप अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण के साथ प्रारंभ हुए इस कार्यक्रम में धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि उदित कुमार जी ने कहा – तपस्या वह अमूल्य साधना है, जो व्यक्ति के जीवन को संवारती है। उन्होंने कहा कि केवल साहस, संयम और दृढ़ निश्चय वाले व्यक्ति ही सच्ची तपस्या कर सकते हैं। मुनिश्री ने तपस्या का महत्व बताते हुए कहा कि यह व्यक्ति के चरित्र को परिपक्व बनाती है और मानसिक शक्ति को मजबूत करती है।समारोह में उन्होंने तपस्वियों के अनुमोदन में रचित दो गीतों का संगान किया। इस अवसर पर साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन संपत नाहटा एवं महावीर दुगड़ ने किया। गांधीनगर तेरापंथ सभा अध्यक्ष निर्मल छलानी, तेरापंथ सभा गाजियाबाद मंत्री रमेश बैंगानी, तेयुप दिल्ली अध्यक्ष पवन श्यामसुखा, तेयुप गांधीनगर उपाध्यक्ष अंकित श्यामसुखा, ओसवाल समाज अध्यक्ष आनंद बुच्चा, तेरापंथ सभा दिल्ली मंत्री प्रमोद घोड़ावत, अणुव्रत समिति ट्रस्ट अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा, तेरापंथ सभा शाहदरा अध्यक्ष राजेंद्र सिंघी आदि परिवारजन और शुभचिंतकों ने तपस्वियों के प्रति अपनी आध्यात्मिक मंगलकामना व्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री सुरेश भंसाली ने किया। तेरापंथ सभा शाहदरा-दिल्ली द्वारा तपस्वियों का सम्मान किया गया।

वॉइस ऑफ़ तेरापंथ बैंगलोर' के सेमी फाइनल में गूंजे श्रद्धा स्वर

गांधीनगर, बैंगलोर।

तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य श्री भिक्षु की जन्म त्रिशताब्दि वर्ष के अंतर्गत तेरापंथ सभा गांधीनगर बैंगलोर के तत्वावधान में गतिमान वॉइस ऑफ तेरापंथ के सेमी फाइनल का प्रथम चरण का तेरापंथ सभा भवन गांधीनगर में आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि डॉ पुलकित कुमार जी के सन्निध्य में आयोजन हुआ। नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से यह आयोजन प्रारंभ हुआ। बैंगलोर स्तरीय इस प्रतियोगिता के प्रथम चरण के चयनित 42 प्रतिभागियों में से 21 ने सेमीफाइनल राउंड एक में आचार्य भिक्षु एवं आचार्य तुलसी पर आधारित गीतों की प्रस्तुति दी। प्रतियोगिता के प्रथम चरण में 9 से 15 वर्ष के 6 बालक बालिकाओं ने प्रस्तुति दी जिनमें से शशांक जैन, प्रांजल भंडारी एवं रीत मेहर का चयन फाइनल राउंड के लिए किया गया। 16 से 50 वर्ष के 15 प्रतिभागियों ने अपनी प्रस्तुति दी जिनमें से हर्ष पगारिया, मनीषा भंसाली, निकिता बरड़िया, नूतन बेंगानी, प्रज्ञा दुधेड़िया एवं दिशा एन का चयन फाइनल राउंड के लिए किया गया। निर्णायक की भूमिका अशोक सुराणा एवं ललित सेठिया ने निभाई । मुनि पुलकित कुमारजी ने उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि इस आयोजन से बैंगलोर की अनेक नई प्रतिभाएं उभर कर सामने आएगी । मुनि आदित्य कुमारजी ने आराध्य भिक्षु के प्रति श्रद्धा अर्पण की। इससे पूर्व सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली ने सभी का स्वागत किया। गायक मनीष पगारिया एवं प्रज्ञा संगीत सुधा के सदस्यों ने भी अपनी प्रस्तुति दी। आयोजन के प्रभारी नवनीत मुथा ने अपने विचार व्यक्त किए। विजेता प्रतिभागी, सभी प्रतिभागियों एवं निर्णायक गणों का सम्मान अध्यक्ष पारसमल भंसाली, मंत्री विनोद छाजेड़, पदाधिकारियों एवं गणमान्य व्यक्तियों ने किया। कार्यक्रम का संचालन रोहित कोठारी ने किया तथा तकनीकी सहयोग गगन बरडिया, दीक्षित सोलंकी ने दिया। सभा मंत्री विनोद छाजेड़ ने आभार व्यक्त किया ।

आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष पर विशेष

● साध्वी कल्पमाला ●

ॐ भिक्षु जय भिक्षु मंत्र बड़ा चमत्कारी रे।
तन्मय हो जपने से हो बेड़ा पार लगाये रे।
भिक्षु मेरे सांवरिया हो जाये तेरी बलिहारी रे।।

1. भिक्षु तू मेरा राम है, तूं ही मेरा घनश्याम है,
मेरे दिल की धड़कन में, बसा हुआ तेरा नाम है।
तूं ही जीवन की ज्योति हो तू प्यारा भिक्खू स्याम रे।।

2. विष की घूटों को पीकर, जन-जन को अमृत बांटा,
आगम मन्थन कर तुमने, भ्रम का निकाला था कांटा।
तू है समता का सागर हो गुण रत्नों की माला रे।।

3. वीर पथ पर बढ़ते गये, कष्टों से ना घबराएं।
भूले भटके श्रावकों को, आध्यात्मिक पथ दिखलाए।
तेरापंथ मेरापंथ हो ये बोध पाठ पढ़ाए रे।।
तेरह की संख्या देख हो, तेरापंथ नाम मन भाये रे।।

4. नहीं मिला आहार पानी, फिर भी हार नहीं मानी,
पहला वास शमशान भूमि, चले भिक्षु बन निरभिमानी।
केलवा की अंधेरी ओरी है में नव इतिहास बनाया रे।।

5. तेरस को भिक्षु जन्मा था, तेरस को ही सोया था,
भिक्षु ने अपने जीवन में, क्रांतिकारी कदम उठाया था।
सिरियारी गाँव तेरा हो तीरथ धाम कहलाए रे।।

6. नंदनवन भिक्षु शासन पाया, महाश्रमण सा गणमाली,
भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष आया, चारों तीर्थ में खुशहाली।
भिक्षु-भिक्षु जपने वाला हो भव सिंधु तर जाये रे।।

तर्ज- जीवन है पानी की बूंद

शपथ ग्रहण समारोह

हुबली। तेरापंथ भवन हुबली में मुनि विनीत कुमारजी के सान्निध्य में एवं TPF दक्षिण अंचल अध्यक्ष विक्रम कोठारी की अध्यक्षता में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सबसे पहले मुनि पुनीत कुमारजी ने सभा को संबोधित किया। तत्पश्चात मंगलाचरण के बाद विक्रम कोठरी ने अंकित खीवेसरा को उत्तर कर्नाटक के अध्यक्ष के रूप में और उनकी पूरी टीम को शपथ ग्रहण कराया। TPF उत्तर कर्नाटक के पूर्व अध्यक्ष विनोद वेदमुथा ने सभी का स्वागत किया। विक्रम कोठारी ने सभा को TPF के आयामों और कार्यों की जानकारी दी। दक्षिण अंचल मंत्री भरत भंसाली, अंकित खीवेसरा, UKTAS के अध्यक्ष राजेंद्र जीरावाला, हुबली सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली और विशाल बोहरा ने अपने विचार व्यक्त किए। मुनि विनीत कुमारजी ने सभी छात्रों और प्रोफेशनल्स को प्रेरणा दी और सभा को संबोधित करते हुए कहा - विद्या और आचरण से ही मोक्ष बताया गया है। जिस प्रकार चलने के लिए चक्षु और चरण आवश्यक हैं, उसी प्रकार मोक्ष की प्राप्ति के लिए भी ज्ञान और क्रिया दोनों आवश्यक हैं। क्रिया के बिना ज्ञान पंगु है और ज्ञान के बिना क्रिया अंधी है। अतः ज्ञानी को आचरण की उतनी ही आवश्यकता है, जितनी सदाचारी को ज्ञान की। कार्यक्रम में 35 छात्रों का सम्मान किया गया, जिनमें 9 प्रोफेशनल और 26 दसवीं एवं बारहवीं के छात्र उपस्थित थे। कोप्पल, बल्लारी, गुलबर्गा, रायचूर, सिंधनूर, हावेरी, गदग, हिरियूर, हुबली आदि स्थानों से श्रावक समाज उपस्थित था। सभी का आभार TPF के मंत्री विशाल कटारिया ने व्यक्त किया। कार्यक्रम के संयोजक विशाल बोहरा, सह-संयोजक अनिल वेदमुथा और कोषाध्यक्ष चिराग कटारिया का कार्यक्रम में पूर्ण सहयोग रहा। खुशी जैन ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

गंगाशहर। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम बीकानेर का शपथ ग्रहण समारोह उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए मुनि कमलकुमारजी ने प्रोफेशनल्स को समाज व संघ की सेवा करने तथा आत्मकल्याण करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि टीपीएफ के सदस्य सक्रियता से कार्य करते हुए बीकानेर का नाम धर्मसंघ व समाज में आगे बढ़ाएं। कार्यक्रम में स्वागत भाषण नवमनोनीत अध्यक्ष रतनलाल छलाणी ने किया। राष्ट्रीय सह मंत्री राकेश सुतरिया ने रतनलाल छलाणी को टीपीएफ बीकानेर का अध्यक्ष घोषित किया और नवमनोनीत अध्यक्ष रतनलाल छलाणी ने मंत्रिमंडल की घोषणा की। उन्होंने एडवाइजरी बोर्ड के लिए एडवोकेट बच्छराज कोठारी, एडवोकेट गणेशमल बोथरा, डॉ. गुलाब बोथरा, डॉ. जतनलाल बाफना, डॉ. जेठमल मरोटी, एडवोकेट नारायण चोपड़ा, सीए सोहनलाल बैद; उपाध्यक्ष के लिए एमबीए प्राशु दफ्तरी, एडवोकेट विद्या चौरडिया, इंजीनियर कुशल बोथरा; सचिव के लिए इंजीनियर अजीत संचेती सहित संपूर्ण कार्यकारिणी की घोषणा की। राष्ट्रीय सह सचिव राकेश सुतरिया ने अध्यक्ष एवं पूरी कार्यकारिणी को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। उन्होंने कहा कि बीकानेर के लिए हर्ष की बात है कि नई टीम उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी के सान्निध्य में शपथ लेकर अपने आयामों को पूरा करेगी। सेंट्रल जोन के अध्यक्ष लक्ष्मीलाल गांधी ने अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि बीकानेर टीपीएफ अब और अधिक सक्रियता से कार्य करेगी। आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने टीपीएफ को रत्नों की माला की उपमा दी थी और कहा था कि इसमें समाज के रत्न जुड़ते रहें। आचार्य श्री महाश्रमणजी ने विशेष रूप से बुद्धिजीवी वर्ग को धर्मसंघ के संस्कार और धर्मानुरागी बनकर मानवता के उत्थान के कार्य करने का लक्ष्य दिया है।

सेंट्रल जोन के सह सचिव मनोज चोपड़ा ने अपने विचार रखते हुए कहा कि गंगाशहर में एक बड़ा शिक्षा केंद्र बनकर तैयार हो रहा है। आभार ज्ञापन पूर्व महापौर एवं पूर्व अध्यक्ष नारायण चोपड़ा ने किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन देवेंद्र डागा ने किया। अतिथियों का सम्मान श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल एवं अणुव्रत समिति के पदाधिकारियों द्वारा किया गया।

- जहां तक संभव हो सके, परावलंबी बनने से बचें।
- जो व्यक्ति भाग्य भरोसे बैठ जाता है, पुरुषार्थ नहीं करता, मेरी दृष्टि में वह दुनिया का अभागा व्यक्ति है।

– आचार्य श्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

नालासोपारा। मदनलाल कोठारी के नूतन प्रतिष्ठान हिमशिखा केमिकल एंड मिनरल्स कंपनी का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक पारस बाफना ने निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया।

नूतन गृह प्रवेश

बेंगलुरु। सुषमा-शशि भूतोडिया के पुत्र एवं पुत्रवधु परिधि- श्रेयस भूतोडिया का नूतन ग्रह प्रवेश डोडाकनहल्ली बेंगलुरु में आयोजित किया गया। कोलकाता- बीदासर से संस्कारक महावीर प्रताप दुगड़ और परिषद् से संस्कारक अमित भंडारी ने निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया।

223वाँ आचार्य श्री भिक्षु चरमोत्सव के उपलक्ष्य में विविध आयोजन

टिटिलागढ़

तेरापंथ महिला मंडल टिटिलागढ़ ने 223वें चरमोत्सव के अवसर पर 'एक शाम भिक्षु के नाम' कार्यक्रम का आयोजन किया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। बहनों ने सर्वप्रथम 'ओम भिक्षु' का सामूहिक जाप एवं प्रेरणा गीत का संगान किया। सुंदरी जैन, दीपिका जैन, भावना जैन, खुशबू जैन, पूजा जैन, लक्ष्मी जैन, संजू जैन ने सामूहिक एवं एकल प्रस्तुतियों के द्वारा श्रद्धा भक्ति से बाबा के प्रति अपनी भक्ति की। सुमन जैन ने अपने विचार रखते हुए कहा कि आज जो हम संघ में सुख की अनुभूति कर रहे हैं यह स्वामीजी के अथक परिश्रम का ही फल है। कई बहनों ने उपवास एवं एकासन तप की भेंट चढ़ाई। अध्यक्ष भावना जैन ने स्वामी जी के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष दीपिका जैन ने किया।

श्रीडूंगरगढ़

भिक्षु चेतना वर्ष के अवसर पर 'भिक्षु भावांजलि – एक संगीतमय श्रद्धांजलि' कार्यक्रम का आयोजन साध्वी संगीतश्रीजी एवं साध्वी डॉ. परमप्रभाजी के सान्निध्य में अत्यंत श्रद्धा और उत्साह के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर आयोजित विशाल भिक्षु भजन संध्या में भक्ति रस की अविरल धारा प्रवाहित हुई। मुख्य कलाकार पुलकित बरडिया (दिल्ली) ने अपनी मधुर प्रस्तुति से वातावरण को भावविभोर कर दिया। साथ ही साध्वी संगीतश्रीजी, साध्वी कर्तव्ययशाजी, साध्वी श्रेयसप्रभाजी, स्वरलहरी टीम श्रीडूंगरगढ़, सुमित बरडिया, पारुल लूनिया, बोथरा ब्रदर्स, अंजू पारख, संजय झाबक, मोहनलाल सेठिया तथा तेयुप टीम सहित अनेक कलाकारों ने अपने सुरों से संध्या को अविस्मरणीय बना दिया। तेयुप सदस्य सुमित श्यामसुखा ने अपनी अद्भुत चित्रकला द्वारा आचार्य भिक्षु की सुंदर तस्वीर प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया। यह आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् एवं तेरापंथ किशोर मंडल टीम के संयुक्त तत्वावधान में हुआ। महेंद्र, जितेंद्र मालू परिवार द्वारा यह कार्यक्रम प्रायोजित किया गया। संयोजन अध्यक्ष विक्रम मालू एवं उपाध्यक्ष रजत सिंघी ने किया।

राउरकेला

तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक महामना आचार्य भिक्षु के 223वें चरमोत्सव पर तेरापंथ सभा, तेयुप एवं महिला मंडल द्वारा तेरापंथ भवन राउरकेला में धम्म जागरण का आयोजन किया गया। अभातेममं द्वारा सितंबर माह की कार्यशाला के तहत 13 घंटे का 'ओम् भिक्षु जय भिक्षु' जाप महिला मंडल द्वारा किया गया। महिला मंडल की अध्यक्ष संगीता दूगड़ ने सभी को तेरापंथ प्रबोध कंठस्थ करने का आहवान किया। मंत्री नीतू कोठारी ने आभार ज्ञापन किया।

हैदराबाद

साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तथा तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद के आयोजन में महामना आचार्य भिक्षु के 223वें चरमोत्सव पर भावांजलि स्वरूप जप आयोजन किया गया। इस अवसर पर 13 घंटे का सामूहिक 'ॐ भिक्षु - जय भिक्षु' जप तेरापंथ भवन हैदराबाद में संपन्न हुआ। साथ ही, श्रावक-श्राविकाओं ने अपने-अपने घरों में भी जप किया। एक ही दिन में लगभग आठ लाख मंत्रोच्चार हुए। आचार्य श्री तुलसी द्वारा रचित 'तेरापंथ प्रबोध' का संगान भी घर-घर में गूंजा। इसके अतिरिक्त उपवास, पौषध, द्रव्य सीमा, जमींकंद त्याग और रात्रि भोजन परिहार जैसे प्रत्याख्यानों का पालन करते हुए बहनों ने इस अवसर को और भी पावन बनाया। तेरापंथ महिला मंडल हैदराबाद की अध्यक्ष नमिता सिंघी ने श्रावक समाज से 'तेरापंथ प्रबोध' को कंठस्थ करने का आह्वान किया। मंत्री निशा सेठिया ने जप व प्रत्याख्यान करने वाले सभी श्रद्धालुओं के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम संयोजिका सुनीता कठोतिया, चांद बैद एवं प्रेम संचेती का सराहनीय श्रम रहा।

इरोड

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में, तेरापंथ महिला मंडल इरोड द्वारा आचार्य श्री भिक्षु के 223वें चरमोत्सव के उपलक्ष्य में विशेष आयोजन संपन्न हुआ। स्थानीय तेरापंथ भवन में आयोजित इस कार्यक्रम में बहनों ने सामायिक के साथ सामूहिक ॐ भिक्षु – जय भिक्षु जप अनुष्ठान एवं 'तेरापंथ प्रबोध' का संगान किया। अध्यक्षा समता जीरावला के नेतृत्व में बहनों ने आचार्य भिक्षु को भावांजलि स्वरुप गीतिकाओं का संगान किया।

नागपुर

तेरापंथ के आद्यप्रवर्तक महामना आचार्य श्री भिक्षु के पावन चरणों में श्रद्धासिक्त अभिवंदना स्वरूप 'भिक्षु धम्म जागरण' का आयोजन तेरापंथ भवन, नागपुर में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक ॐ भिक्षु - जय भिक्षु जप के साथ हुआ। परिषद् के सदस्यों ने महामना आचार्य भिक्षु को श्रद्धासुमन अर्पित किए और अपने भावपूर्ण भजनों से संपूर्ण वातावरण को भिक्षुमय बना दिया। सभी ने सामूहिक रूप से आचार्य भिक्षु को समर्पित गीतों का संगान किया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद् एवं कार्यकारिणी सदस्य, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के पदाधिकारी तथा श्रावक समाज की उत्साहपूर्ण उपस्थिति रही।

223वाँ आचार्य श्री भिक्षु चरमोत्सव के उपलक्ष्य में विविध आयोजन

राजराजेश्वरी नगर

साध्वी पुण्ययशाजी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु चरमोत्सव का कार्यक्रम स्थानीय तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। साध्वीश्री ने उद्बोधन में कहा कि आचार्य भिक्षु अध्यात्म के शिखर पुरुष थे। वे सत्य के प्रति सर्वात्मना समर्पित थे। वे एक अनूठे त्यागी, वैरागी और योगी पुरुष थे। उन्होंने तेरापंथ को एक गुरु, एक आचार और एक विचार की परम्परा देकर एक आदर्श धर्मसंघ के रूप में प्रतिष्ठित किया। उक्त विचार व्यक्त करते हुए साध्वीश्री ने आचार्य भिक्षु की संघ को अंतिम शिक्षाओं का उल्लेख किया। साध्वी बोधिप्रभा जी ने वक्तव्य के द्वारा अपने भावों की प्रस्तुति दी। सभाध्यक्ष राकेश छाजेड़ ने मर्यादा और अनुशासन से सिंचित एक सुदृढ़ संघ देने हेतु तेरापंथ के आद्य प्रणेता आचार्य भिक्षु के प्रति कृतज्ञता के रूप में अपनी श्रद्धा समर्पित की। तेरापंथ महिला मण्डल की बहनों द्वारा 'आचार्य भिक्षु की बोलती तस्वीरें' कार्यक्रम की रोचक प्रस्तुति दी गई। निखिल जैन ने गीत का संगान किया। इस अवसर पर लगभग 200 उपवास, बेले-तेले का तप, सामायिक नौ-रंगी की 5 लड़ी अर्थात् 1620 सामायिक, अष्टप्रहरी पौषध, चार प्रहरी पौषध आदि तपस्याएं की गई। कार्यक्रम का प्रारम्भ भिक्षु अष्टकम् के सामूहिक संगान से हुआ। कार्यक्रम का संचालन साध्वी वर्धमानयशा जी ने किया।

गांधीनगर, बेंगलुरु

डॉ. मुनि पुलकित कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन गांधीनगर में 223वां आचार्य श्री भिक्षु चरमोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा कि आचार्य भिक्षु सत्यखोजी और अंतर्मुखी साधक थे। उन्होंने भगवान महावीर की आगम वाणी को अपनी धर्म क्रांति का आधार बनाया था। उनके मन में वीतराग वाणी के प्रति अगाध श्रद्धा थी। आचार्य भिक्षु ने तेजस्वी जीवन जीते हुए विक्रम संवत 1860 भाद्रपद शुक्ला तेरस को सिरियारी, राजस्थान में सात प्रहर का अनशन पूरा किया। आचार्य भिक्षु के समर्पण भाव को व्याख्यायित करते हुए मुनिश्री ने कहा कि आचार्य भिक्षु की धर्म क्रांति का प्रसिद्ध वाक्य था – 'हे प्रभो! यह तेरापंथ।' अर्थात इस पंथ में मेरा कुछ भी नहीं है, सब कुछ आपका ही बताया हुआ सत्य मार्ग है, हम तो केवल इस पथ पर चलने वाले पथिक मात्र हैं। यह आचार्य भिक्षु के अहंकार मुक्ति का उत्कृष्ट भाव था। मुनि आदित्य कुमार ने भिक्षु स्तुति प्रस्तुत की। मुनिश्री के महामंत्र उच्चारण से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। तेरापंथ सभा अध्यक्ष पारसमल भंसाली ने स्वागत भाषण दिया। उपासक विनोद कोठारी, बहादुर सेठिया, सिंधनूर ज्ञानशाला प्रशिक्षिका कीर्ति नाहर तथा अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल से वीणा बैद ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन मंत्री विनोद छाजेड़ ने किया। तेयुप गांधीनगर द्वारा 24 घंटे का ओम भिक्षु जय भिक्षु अखंड जाप का आयोजन किया गया।

साहूकारपेट, चेन्नई

आचार्य भिक्षु का 223वां चरमोत्सव दिवस तेरापंथ भवन साहूकारपेट में साध्वी उदितयशा जी के सान्निध्य में मनाया गया। भिक्षु स्तुति से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। केन्द्र द्वारा निर्दिष्ट विषय 'आचार्य भिक्षु की अंतिम शिक्षा' को व्याख्यायित करते हुए साध्वीश्री ने कहा कि आचार्य भिक्षु जीवनभर साधना में रत रहे। संगठन के विकास के लिए बनाए गए नीति-नियमों को उन्होंने स्वयं पर लागू कर संघ के लिए मर्यादाओं का निर्माण किया। अंतरध्यान के माध्यम से भिक्षु के अंतिम समय का साक्षात्कार करवाते हुए साध्वीश्री ने कहा कि उनकी अंतिम शिक्षा थी – 'हेत परस्पर राखीज्यो, मत ओगुण किण रा ढूंढज्यो।' अर्थात हमें धर्मसंघ के साथ-साथ परिवार, समाज और संगठन में भी परस्पर सौहार्द से रहना चाहिए। छोटी-मोटी बातों पर ध्यान देने के बजाय सामने वाले के अच्छे कार्यों की प्रशंसा करनी चाहिए और उसे प्रोत्साहित करना चाहिए। राग-द्वेष मुक्त रहकर, अपना-पराया छोड़कर संघ सेवा में योगभूत बने। मर्यादा, निष्ठा, आज्ञा और अनुशासन में आगे बढ़े। प्रयोगधर्मी बने। ध्यान और संकल्प से जीवन में परिवर्तन लाकर शुद्ध और स्वस्थ बन सकते हैं।

साध्वी संगीतप्रभा जी ने कहा कि यदि कोई हमारे अवगुण या दोष निकालता है तो हमें यह चिंतन करना चाहिए कि हम साधक हैं और हमारा लक्ष्य कर्म के बंधन से मुक्त होना है। अतः सामने वाले को उपकारी, हितैषी और अपना कल्याण मित्र मानना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन करते हुए साध्वी भव्ययशा जी ने कहा कि आज का दिवस शिक्षक दिवस के रूप में भी मनाया जा रहा है। माता-पिता और विद्यालय के अध्यापक हमें सामाजिक ज्ञान देते हैं, वहीं आध्यात्मिक संतजन हमें संसार-सागर से तरने की राह बताते हैं। हमारे गुरुदेव आचार्य महाश्रमण जी हमें स्वकल्याण की दिशा में गतिशील बनाते हैं। साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने सुमधुर गीत के माध्यम से आचार्य भिक्षु की शिक्षाओं को आत्मसात करने का आह्वान किया। इस विशिष्ट दिवस पर सैकड़ों श्रावकों ने उपवास, आयंबिल, एकासन, पौषध आदि तप-त्याग और प्रत्याख्यान स्वीकार कर अपने आराध्य की अभिवंदना में अर्ध्य अर्पित किया। सभा मंत्री गजेंद्र खांटेड ने आगामी सूचनाएँ दीं।

गंगाशहर

आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष के अन्तर्गत त्रिदिवसीय कार्यक्रम तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। इस अवसर पर उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी ने अपने वक्तव्य में आचार्य भिक्षु की शिक्षाओं के बारे में विचार रखते हुए कहा कि अगर इन शिक्षाओं को आत्मसात किया जाए तो संघ समाज में ही नहीं, परिवारों में भी अमन-चैन का वातावरण बन सकता है। वे एक संघ के अनुशास्ता थे। उन्होंने अपने पीछे भारीमाल जी को अपना उत्तराधिकारी बनाया था। इसीलिए सबसे पहले यही शिक्षा दी कि भारीमाल जी को मेरी तरह ही मानना। वे पाप-भीरु और उत्तम प्राणी हैं। इनके इंगित आकार की आराधना करते रहना तथा आपस में एक-दूसरे से हेत रखना, किसी के अवगुण नहीं देखना। दीक्षा देने से पहले उनकी योग्यता का ध्यान रखना। केवल संख्या बढ़ाने से संघ का प्रभुत्व नहीं बढ़ता है। जो धर्मसंघ से अलग हो जाए या अलग कर दिया जाए, उसके साथ संपर्क नहीं रखना। उनके द्वारा अनेक शिक्षाएं दी गईं। आज उन्हीं शिक्षाओं के कारण धर्मसंघ की एकता बरकरार है। मुनिश्री ने इस अवसर पर आज के दिन के लिए विशेष गीत का निर्माण कर संगान किया। इस अवसर पर सेवा केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी विशद्प्रज्ञा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु एक क्रांतिकारी पुरुष थे। उन्होंने ऐसी धर्म-क्रांति की कि तेरापंथ का उदय हो गया। जीवन भर पुरुषार्थ की लौ जलती रही और पूर्ण सजग अवस्था में सिरीयारी में अंतिम सांस ली। आज सिरीयारी तीर्थधाम बन गया है। साध्वी लब्धिशाजी ने कहा कि आचार्य भिक्षु एक असाधारण पुरुष थे। जन्म से लेकर मृत्यु तक उनका जीवन असाधारण घटनाओं से ओतप्रोत रहा। आचार्य भिक्षु सिंह पुरुष थे। सिंह की तरह वे पराक्रमी थे। 77 वर्ष की उम्र में भी वे प्रतिदिन व्याख्यान देना, गोचरी जाना, खड़े-खड़े प्रतिक्रमण करना उनकी दिनचर्या का अंग था। सिंह की तरह कभी उन्होंने विरोधियों और आलोचकों को पीछे मुड़कर नहीं देखा, उनकी परवाह नहीं की। साध्वी विधिप्रभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु सत्य की राह पर चले और सत्य का संदेश दिया। साध्वी वृंद ने समूहगीत प्रस्तुत किया। मुनि श्रेयांस कुमार जी, मुनि मुकेशकुमार जी एवं गंगाशहर के युवा गायकों ने गीत का संगान किया। अणुव्रत समिति गंगाशहर के मंत्री मनीष बाफना ने अपनी बात रखी। जतनलाल दूगड़ ने आचार्य भिक्षु की जीवन-झांकी अवलोकन की प्रेरणा दी। जतनलाल संचेती ने रात्रि जाप की व्यवस्थित सूचना दी। मुनि श्रेयांस कुमार जी ने 8, विनय चौपड़ा ने 17, सारिका चौपड़ा ने 17, प्रियंका रांका ने 17, तारादेवी बैद ने 54 दिन की तथा अन्य अनेक लोगों ने एकाशन, आयम्बिल, उपवास, बेले-तेले के प्रत्याख्यान किए।

पूर्वांचल, कोलकाता

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में भिक्षु चेतना वर्ष के द्वितीय चरण में 223वाँ आचार्य भिक्षु चरमोत्सव समारोह का भव्य आयोजन जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा (कोलकाता-पूर्वांचल) ट्रस्ट द्वारा भिक्षु विहार में किया गया। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को 'आचार्य भिक्षु के जीवनकाल के अंतिम भाद्रपद की शिक्षाएँ' विषय पर संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा - आचार्य भिक्षु का जीवन निर्मलता, तेजस्विता, गहराई, ऊँचाई व प्रकाश का संगम था। वे सत्य के महान आराधक व विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने अपनी पैनी दूरदृष्टि से जिन ठोस मर्यादाओं की नींव पर तेरापंथ धर्मप्रासाद की आधारशिला रखी, उसी का पुण्य प्रसाद आज लाखों-लाखों लोगों को मिल रहा है।

मुनिश्री ने आगे कहा - आचार्य भिक्षु के जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आए, लेकिन उन्होंने हर परिस्थिति में अपने आपको संतुलित रखा। उन्होंने 70 वर्ष की उम्र तक स्वयं का वजन उठाया। 77 वर्ष की उम्र तक गोचरी की। उन्होंने अपने पीछे भारमल जी स्वामी को उत्तराधिकारी बनाया। साधुओं के प्रति प्रमोद भावना प्रकट की। अपने शिष्यों को अंतिम शिक्षा देते हुए उन्होंने कहा - सभी साधु-साध्वियां एक आचार्य की आज्ञा में रहना, परस्पर प्रेम से रहना, शुद्ध आचारवान साधुओं की संगति करना, दीक्षा परीक्षा करने देना, दलबंदी मत करना। श्रद्धा, आचार, कल्प और अन्य की कोई बात समझ न आए तो उसे गुरु तथा बुद्धिमान साधुओं के विश्वास से मन लेना आदि अनेक उपयोगी शिक्षाएँ प्रदान कीं। इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा - आचार्य भिक्षु साधना के सजग प्रहरी थे। उनकी साधना सिद्ध हो चुकी थी। इसीलिए आज 200 वर्ष बाद भी उनके नाम का जप लाखों-लाखों लोग करते हैं और अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त करते हैं। मुनि कुणाल कुमार जी ने 'तेरस आई रे' गीत का सुमधुर संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल, पूर्वांचल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। इस अवसर पर जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा (कोलकाता-पूर्वांचल) ट्रस्ट के अध्यक्ष संजय सिंघी, तेरापंथ युवक परिषद, पूर्वांचल के अध्यक्ष राजीव बोथरा, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष बबीता तातेड़, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, पूर्वांचल के अध्यक्ष राकेश सिंघी ने अपने वक्तव्यों के माध्यम से आचार्य भिक्षु के प्रति भावांजलि अर्पित की।

सिकंदराबाद

आचार्य भिक्षु का 223वां चरमोत्सव दिवस तेरापंथ भवन डी वी कॉलोनी, सिकंदराबाद में साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा कि आचार्य श्री भिक्षु उस व्यक्तित्व का नाम है, जिन्होंने तेरापंथ संघ के लिए मर्यादाएं लिखीं, संविधान बनाया, कष्टों को उपहार के रूप में स्वीकार किया। आचार्य भिक्षु ने अपने मौलिक चिंतन के आधार पर नए मूल्यों की स्थापना की। भिक्षु एक कुशल विधिवेत्ता के साथ-साथ सहज कवि एवं महान साहित्यकार भी थे। वे जब तक जिए, ज्योति बनकर जिए। उनके जीवन का हर पृष्ठ पुरुषार्थ की गौरवमयी गाथाओं से भरा पड़ा है। आचार्य भिक्षु का उदय एक नए आलोक की सृष्टि है।

साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा - आचार्य भिक्षु ने अंतिम समय में शिक्षा देते हुए कहा कि मर्यादा, आज्ञा, संगठन, समर्पण और अनुशासन का पालन करना। जब तक इनका आचरण करोगे, जीवन अपने आप ज्योतिर्मय बन जाएगा। आचार्य भिक्षु उसका नाम है, जिसके आदि, अंत और मध्य में आत्मा ही है, जिसके अणु-अणु में पराक्रम ही पराक्रम है।

साध्वी दक्षप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत करते हुए आचार्य भिक्षु के जीवन-दर्शन को प्रकट किया। साध्वी मेरुप्रभा जी ने कुशलतापूर्वक कार्यक्रम का संचालन किया।

223वाँ आचार्य श्री भिक्षु चरमोत्सव के उपलक्ष्य में विविध आयोजन

आमेट

तेरापंथ भवन में विराजित साध्वी सम्यकप्रभा जी के सानिध्य में तेरापंथ के आद्यप्रणेता आचार्य श्री भिक्षु का 223वां चरमोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार मंत्र से हुआ। साध्वी सम्यकप्रभा जी ने अपने प्रवचन में कहा – स्वामी जी ने केवल आचार और विचार के कारण सत्यमार्ग पर चलने तथा भगवान महावीर के सिद्धांतों पर साधना हेतु अभिनिष्क्रमण किया। अंत में संथारा स्वीकार कर आत्मकल्याण किया। उनके अंतिम समय में उन्हें अवधि ज्ञान भी हुआ।साध्वी मलयप्रभा जी ने कहा – सिरियारी की पावन धरा पर वह अद्वितीय सूर्य अस्त होने से पूर्व अपने व्यक्तित्व की रश्मियां बिखेर गया। बाबा भिक्षु के अवदानों को नमन करते हैं, जिन्होंने सत्य का मार्ग नहीं छोड़ा और संघ को आज शिखरों पर पहुंचा दिया। साध्वी दीक्षितप्रभा जी ने तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक, श्रमण परंपरा के महान संवाहक आचार्य भिक्षु चरमोत्सव पर श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए बाबा भिक्षु के नाम के चमत्कार को बताया। साध्वी सौम्यप्रभा जी ने बाबा भिक्षु की आराधना करते हुए सुमधुर गीत प्रस्तुत किया।

केजीएफ

जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा के तत्वावधान में साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में भिक्षु चरमोत्सव दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी श्री ने नमस्कार महामंत्रोच्चार से की। मंगलाचरण में भिक्षु स्वामी की सुंदर गीतिका की प्रस्तुति संदीप सेठिया ने दी। तत्पश्चात साध्वीवृंद और सभी श्रावक-श्राविकाओं ने एक साथ सामूहिक 'ॐ भिक्षु' का सवा लाख जप अनुष्ठान किया।

साध्वी पावनप्रभा जी ने कहा – आज आचार्य श्री भिक्षु स्वामी का चरमोत्सव दिवस है। चरम का अर्थ है अंतिम। आचार्य भिक्षु का जीवन जन्म से मृत्यु तक संघर्षपूर्ण रहा। अपनी औत्पातिक बुद्धि से उन्होंने अनेक संकटों का निवारण किया। उनकी चारित्र, साधना और आगम के प्रति श्रद्धा प्रशंसनीय थी। उनकी वाणी आज हमारे लिए आगम बनी और उनके वचन दिशा-सूचक यंत्र। उन्होंने आगे कहा – भिक्षु स्वामी ने जीवन को तो कलात्मक बनाया ही, मृत्यु को भी कलात्मक बनाया। उन्होंने साधु-साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं को शिक्षा दी। साध्वीश्री ने कहा – आचार्य भिक्षु ने जो मर्यादा-बंदी की, उसका आज भी सभी साधु-साध्वियों द्वारा वाचन होता है। आपस में प्रीति-भाव रखना, राग-द्वेष न करना, कलह से बचना। मधुरता से रहना, दलबंदी और अविनीत का समर्थन न करना। बिना वैराग्य के किसी को नहीं मूड़ना। आचार, कल्प और सूत्र की कोई बात समझ न आए तो बुद्धिमान साधु से चर्चा करना, अन्यथा केवली गम्य कर देना। अंतिम शिक्षा में आचार्य भिक्षु ने कहा – सभी एक गुरु की आज्ञा में रहना, मर्यादाओं का पूर्ण पालन करना। साध्वी पावनप्रभा जी ने कहा – ये सभी अंतिम शिक्षाएं ही तेरापंथ धर्मसंघ के लिए जन्मगुटी के समान हैं। जो इस गुटी को पीता है वह सदा आनंदमय जीवन जीता है। अंत में संघगान का सामूहिक उच्चारण हुआ तथा रात्रिकाल में धम्मजागरणा का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में 21 जोड़े सहित अनेक श्रावक-श्राविकाओं और बच्चों ने भाग लिया।

विजयनगर, बैंगलोर

साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में विजयनगर तेरापंथ भवन में आचार्य श्री भिक्षु का 223वाँ भिक्षु चरमोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी श्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। महिला मंडल ने मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। साध्वी संयमलता जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य भिक्षु अनुभव सिद्ध आचार्य, कुशल मनोवैज्ञानिक और सिंह समान पराक्रमी पुरुष थे। उनकी शिक्षाएं साधकों के लिए अमृत के समान हैं। संघ के अंतिम पड़ाव में उन्होंने महत्वपूर्ण शिक्षाएं प्रदान कीं—परस्पर सौहार्द बनाए रखना और कलह से बचना, क्योंकि कलह संघ की नींव को खोखला कर देता है। उन्होंने अपने उत्तराधिकारी भारमल जी को पूर्ण सम्मान देने और चेलों में ममत्व भावना से दूर रहने की प्रेरणा दी। यही कारण है कि आज 250 वर्षों के बाद भी आचार्य परंपरा निर्बाध रूप से आगे बढ़ रही है।

साध्वी मार्दवश्री जी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु संघर्षों और तूफानों से डरे नहीं, बल्कि दृढ़ता से डटे रहे। उनकी शिक्षाओं ने तेरापंथ धर्म संघ को सशक्त बनाया और उच्च शिखर तक पहुँचाया। साध्वी मनीषाप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु गुरु-निष्ठा, संघ-निष्ठा और आगम-निष्ठा के अनुपम उदाहरण थे। साध्वी रौनकप्रभा जी और सुमित्रा बरडिया ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर त्रिशताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में श्रावक-श्राविकाओं ने एक ही दिन में 300 उपवास कर अपने आराध्य की अभिवंदना की। सभा अध्यक्ष मंगल कोचर ने आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी। रात्रि में आचार्य भिक्षु चरमोत्सव के उपलक्ष में धम्म जागरणा का आयोजन किया गया। गुलाब बांठिया, देवेन्द्र नाहटा, तूफान मांडोत व निधि चावत आदि कलाकारों ने प्रस्तुति दी। सभी का स्वागत सभा अध्यक्ष मंगल कोचर ने किया। आभार मंत्री दिनेश हींगड ने तथा संचालन सुमित्रा बरडिया ने किया।

पडिहारा

साध्वी संघप्रभा जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु का 223वाँ चरमोत्सव स्थानीय भवन में भव्य रूप से आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंजू देवी दूगड़ द्वारा सुमधुर गीतिका के मंगलाचरण से हुआ। साध्वी संघप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा—'महान थे आचार्य भिक्षु, महान था उनका जन्म, महान था उनका जीवन और महान था उनका मरण। ऐसे व्यक्तित्व कभी महाकाल के नेपथ्य में छिपते नहीं, अपितु अपने कालजयी कर्तृत्व से सदियों-सहस्राब्दियों तक समय के क्षितिज पर चमकते रहते हैं। उनकी महानता का रहस्य शाश्वत सत्य की साधना, विशुद्ध आत्माराधना और चिरंतन मूल्यों की स्थापना में निहित है। तेरापंथ धर्मसंघ उनकी धर्मक्रांति का ही जीवन रूप है। वे अंतिम क्षण तक सक्रिय और लक्ष्य के प्रति जागरूक रहे।'

तेरापंथ महिला मंडल ने 'थांने याद करां दिन-रात, आओ म्हारा स्वामीजी' गीतिका से वातावरण को भिक्षुमय बना दिया। पन्नालाल दूगड़ ने आचार्य भिक्षु के जीवन प्रसंगों का उल्लेख करते हुए उन्हें निर्भीक और साहसी बताया। प्रीति देवी सुराणा, सुपार्श्व सुराणा सहित अन्य वक्ताओं ने मुक्तक, संस्मरण और गीतिका के माध्यम से अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं।

साध्वी सोमश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य भिक्षु सत्य के वेत्ता और आगम के उद्गाता थे। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने किया। कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं की सराहनीय उपस्थिति रही। दोपहर में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा 'ॐ भिक्षु' का सामूहिक जप किया, वहीं रात्रि में वृहद् 'भिक्षु धम्म जागरण' का आयोजन हुआ। बड़ी संख्या में भाई-बहनों ने उपवास और एकासन कर आचार्य भिक्षु को श्रद्धांजलि अर्पित की।

दाहोद

मुनि कोमल कुमार जी के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु के 223वें चरमोत्सव पर तेरापंथ भवन दाहोद में धम्म जागरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में उदयगढ़ के पितलिया परिवार एवं दाहोद के श्रावक-श्राविकाओं ने सुमधुर संगान के द्वारा धम्म जागरण में समां बांध दिया। मुनिश्री ने भी आचार्यश्री भिक्षु के प्रति अपनी भावभरी श्रद्धांजलि गीतिका के द्वारा प्रस्तुत की।

जसोल

साध्वी रतिप्रभा जी के सान्निध्य में 223वां भिक्षु चरमोत्सव पुराना ओसवाल भवन में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीवृंद द्वारा प्रस्तुत सुमधुर गीत से हुआ।साध्वी रतिप्रभा जी ने अपने प्रवचन में कहा कि सत्य का सूर्योदय तो हुआ, किंतु लोगों में उसके प्रति रुचि दिखाई नहीं दी। तब आचार्य भिक्षु ने स्वयं साधना में मन लगाया। बाद में मुनि थिरपाल जी और मुनि फतेहचंद जी की प्रेरणा से उन्होंने जनजागृति के प्रयास किए। आचार्य भिक्षु महासेतु थे। दृढ़ सिद्धांतवादी होने के बावजूद वे आग्रही प्रवृत्ति से मुक्त थे। निश्चय और व्यवहार दोनों को आधार मानकर उन्होंने सत्य और संगठन को जोड़ा और महावीर वाणी में सत्य की खोज की।

साध्वी कलाप्रभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु जीवनभर कठिनाइयों के मार्ग पर चलते रहे और हमारे लिए सुंदर राजपथ का निर्माण कर गए, जिससे आज हम संयम के मार्ग पर साधना कर रहे हैं। वे जिनवाणी के पुजारी और तर्कशील वृत्ति के धनी थे, इसी कारण मार्ग आगे से आगे बनता गया। साध्वी मनोज्ञप्रज्ञा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु सत्य सिंधु थे। उन्होंने अपने जीवन को सत्य के लिए समर्पित कर दिया। कठिनाइयों और आंधी-तूफानों के बावजूद वे कभी सत्य मार्ग से विचलित नहीं हुए। अपने पौरुष से उन्होंने तेरापंथ संघ को ज्योतिर्मय किया। साध्वी पावनयशा जी ने कुशलतापूर्वक मंच संचालन करते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु का जीवन सत्य, त्याग, तपस्या, संयम और आत्मानुशासन का अनुपम उदाहरण है। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा समूह गीत प्रस्तुत किया गया। उपासक शांतिलाल भंसाली, सरिता, जिज्ञासा डोसी, मंडल अध्यक्ष ममता मेहता, मंत्री जयश्री सालेचा, मीना गोलेच्छा आदि ने मुक्तक, कविता और भाषणों के माध्यम से अपने आराध्य आचार्य भिक्षु के प्रति श्रद्धा व्यक्त की। रात्रि में 'एक शाम भिक्षु के नाम' धम्म जागरण का विशाल आयोजन हुआ।

जयपुर

'शासन गौरव', बहुश्रुत साध्वी कनकश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ के संस्थापक आचार्य श्री भिक्षु का 223वाँ चरमोत्सव तप-जप आराधना के साथ मनाया गया। सैंकड़ों भाई-बहनों ने उपवास, एकासन आदि तप एवं परिवार में 'ॐ भिक्षु जय भिक्षु' मंत्र का सवा लाख जप अनुष्ठान किया। प्रवचन सभा को सम्बोधित करते हुए साध्वी कनकश्रीजी ने कहा - आचार्य श्री भिक्षु हमारे आराध्य हैं, उपास्य हैं, श्रद्धेय हैं। वे समता के साधक थे, आत्मद्रष्टा थे। उन्होंने अपने साधना काल में भीषण कष्टों को सहन किया। पांच बरस तक आहार-पानी नहीं मिला, रहने को स्थान नहीं मिला, फिर भी वे सत्य मार्ग से विचलित नहीं हुए। साध्वी श्री ने कहा- आचार्य श्री भिक्षु महान ध्यान योगी थे। उन्होंने कुछ रहस्यमय संकेत भी प्रदान किए जिससे ऐसा माना जाता है, अंतिम समय में उन्हें अतीन्द्रिय ज्ञान की उपलब्धि हुई। तेरापंथ महिला मंडल जयपुर शहर की बहनों के मंगल संगान से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी मधुलता जी, साध्वी मधुलेखा जी ने आचार्य श्री भिक्षु की अभिवंदना में श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किये। साध्वी जगवत्सलाजी ने कहा - आचार्य श्री भिक्षु न होते तो तेरापंथ नहीं होता, तेरापंथ नहीं होता तो हम इस रूप में नहीं होते।

तेरापंथी सभा के अध्यक्ष शांतिलाल गोलछा, महिला मंडल अध्यक्षा कौशल्या जैन ने गुरु चरणों में अपनी श्रद्धांजलि समर्पित की। शिक्षा समिति के अध्यक्ष डॉ. नरेश मेहता, हिम्मतमल डोसी, राजेंद्र जैन, नीरू मेहता, पायल जैन आदि अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधियों की अच्छी उपस्थिति रही। पुण्य तिथि की पूर्व संध्या में महाप्रज्ञ सभागार भिक्षु भक्ति में आस्था की मधुर स्वरलहरियों से गूंज उठा। भक्ति गीत प्रतियोगिता में प्रथम राहुल छाजेड़, द्वितीय शालू भूरा, तृतीय सुन्दरलाल नाहटा रहे। तेरापंथ युवक परिषद ने सभी सम्भागियों को पुरस्कृत किया। इस कार्यक्रम में सौरभ जैन, प्रवीण जैन का पूरा सहयोग रहा।

32वें विकास महोत्सव पर सजीव हुयी आचार्य श्री तुलसी की स्मृतियां

जवाहर नगर, जयपुर

विकास महोत्सव का आयोजन जवाहर नगर स्थित महावीर साधना केंद्र में साध्वी मधुस्मिता जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल जयपुर शहर की बहनों द्वारा मंगलाचरण से किया गया। साध्वी मधुस्मिता जी ने सुंदर गीतिका की प्रस्तुति दी तथा बीकानेर में घटित एक घटना के वर्णन के द्वारा आचार्य तुलसी की सूझबूझ व दूरदर्शिता को उजागर किया। कार्यक्रम का सुंदर संयोजन साध्वी अक्षयप्रभा जी द्वारा किया गया। महिला मंडल अध्यक्ष कौशल्या जैन ने भी गुरुदेव तुलसी के प्रति अपने भाव अभिव्यक्त किए। श्रावक राजकुमार बरडिया एवं राजेंद्र बांठिया ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

जयपुर

विकास महोत्सव का आयोजन अणुविभा केंद्र में 'शासन गौरव' बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल जयपुर शहर की बहनों द्वारा मंगलाचरण से किया गया। साध्वी मधुलता जी व अन्य साध्वी वृंद ने गीतिका का सुंदर संगान किया। साध्वी संस्कृतिप्रभा जी ने विकास महोत्सव पर आचार्य तुलसी के प्रति अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी स्मृतिप्रभा जी ने गीतिका के माध्यम से भाव व्यक्त किए। साध्वी कनकश्री जी ने आचार्य तुलसी के साथ किए चातुर्मास के अनुभवों के आधार पर आचार्य तुलसी के अवदानों व धर्मसंघ में विकास पर प्रकाश डाला। सुरेश बरडिया ने भी अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

घाटकोपर

विकास महोत्सव के अवसर पर 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभाजी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि 31 वर्ष पूर्व आज के ही दिन आचार्य श्री तुलसी ने फरमाया था – 'मुझे संत तुलसी कहें, आचार्य तुलसी नहीं, क्योंकि मैंने आचार्य पद का विसर्जन कर युवाचार्य महाप्रज्ञजी को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर दिया है।' इस पर आचार्य महाप्रज्ञजी ने निवेदन किया – 'नहीं गुरुदेव! हम आपका पाट महोत्सव विकास महोत्सव के रूप में मनाएंगे।' साध्वीश्री ने कहा कि यह प्रसंग तेरापंथ धर्मसंघ के गौरवशाली इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। उन्होंने आगे कहा कि आचार्य श्री तुलसी ने पूरे भारतवर्ष की यात्रा कर जन-जन को नैतिकता और प्रामाणिकता का संदेश दिया। उनके द्वारा प्रदत्त अणुव्रत आचार संहिता के माध्यम से असाम्प्रदायिक धर्म की प्रतिष्ठा हुई, जो भारत की गरिमामय जीवनशैली का प्रतीक है। 'शासनश्री' साध्वी मंजुरेखाजी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि आज जो विकास हम देख रहे हैं, वह महामना तुलसी की ही देन है। उन्होंने समय से पहले समय को पहचाना और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के विनय से एक नया इतिहास रचा। इस अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद, महिला मंडल, साध्वी चेलनाश्रीजी, साध्वी उदितप्रभाजी और साध्वी निर्भयप्रभाजी ने भी दोनों गुरुओं के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की। महिला मंडल, युवक परिषद के सदस्यों, ख्याली भाई तातेड़, चन्द्रप्रकाश बोहरा, प्रकाश पोखरणा, राकेश बड़ाला, स्नेहलता पोखरणा, नरेन्द्र तातेड़ तथा हस्तीमल डांगी ने सुमधुर गीतों के माध्यम से भावनाएँ व्यक्त कीं। सभा में तपस्वी नीलेश मेहता के तप की अनुमोदना की गई। कार्यक्रम के अंत में आभार ज्ञापन सभा के मंत्री संजय सोनी ने किया।

विजयनगर, बैंगलोर

जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के तत्वावधान में साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन विजयनगर में विकास महोत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वी संयमलता जी ने कहा कि राष्ट्र के हित एवं उत्थान के लिए समय और श्रम का नियोजन करने वाले महापुरुष आचार्य तुलसी थे। आचार्य श्री तुलसी ने संघ और समाज के उत्थान के लिए अनेक अवदान दिए, जिनमें नया मोड़, नारी शक्ति उत्थान, परमार्थिक शिक्षण संस्थान, अणुव्रत, प्रेक्षा ध्यान और जीवन विज्ञान विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। आचार्य तुलसी ऐसे युगनायक थे जिनसे अनेक राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने भी मार्गदर्शन प्राप्त किया। वे तेरापंथ की धरती पर भोर की किरण बनकर उतरे, धूप की भांति खिले और प्रचंड सूर्य की भांति अपनी रश्मियों से संपूर्ण विश्व को आलोकित किया।

साध्वी मार्दवश्री जी ने कहा कि किसी भी देश की माटी को प्रणम्य बनाने और कालखंड को अमरता प्रदान करने में साहित्यकारों तथा धर्मगुरुओं की अहम भूमिका होती है। आचार्य तुलसी धर्मनेता होने के बावजूद राष्ट्र की अनेक समस्याओं के प्रति सजग रहे और उनके समाधान प्रस्तुत किए। साध्वी रौनकप्रभा जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ का अंकुर बोया और आज हम उसे वटवृक्ष के रूप में देख रहे हैं। तेरापंथ धर्मसंघ आज विकास की जिन ऊँचाइयों को छू रहा है, वह आचार्य तुलसी की परिकल्पना का ही प्रतिफल है। आज का यह विकास महोत्सव हमें सहनशीलता, गहनशीलता, सत्य, मानव धर्म और संकल्प शक्ति के विकास की प्रेरणा देता है। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण संगान से हुआ। सभा अध्यक्ष मंगल कोचर, अभातेमम से वीणा बैद, शशि नाहर तथा तेयुप उपाध्यक्ष पवन बैद ने अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल अध्यक्ष महिमा पटावरी ने मंडल द्वारा आगामी आयोजित होने वाले जल संरक्षण कार्यक्रम की जानकारी दी। साध्वीश्री द्वारा चित्रांग छाजेड़ को अट्ठाई तप का प्रत्याख्यान करवाया गया। सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों तथा श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति में मंगल पाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

गुवाहाटी

मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार जी, मुनि रमेश कुमार जी के सान्निध्य एवं तेरापंथी सभा के तत्वावधान में तेरापंथ धर्मस्थल में विकास महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। विकास महोत्सव समारोह में पूर्वांचल के सात राज्यों के 21 क्षेत्रों के सैकड़ों भाई-बहिनों ने भाग लिया। विकास महोत्सव समारोह को संबोधित करते हुए मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार जी ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी विकास के पर्याय थे। शिक्षा, साधना, साहित्य, कला, प्रचार - प्रसार हर क्षेत्र में तेरापंथ को नई ऊंचाइयां प्रदान की। मुनिश्री ने तपस्वियों को अपना आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा कि अपने जीवन में इसी तरह तपस्या के क्षेत्र में आगे बढ़ते रहें। मुनि रमेश कुमार जी ने कहा कि विकास के पुरोधा आचार्य तुलसी ने धर्मसंघ को अनेक आयाम दिए। तेरापंथ धर्मसंघ के विकास के तीन मौलिक आधार हैं - अनुशासन, अध्यात्म और अप्रमाद। इसके आधार पर ही इस धर्मसंघ ने विकास किया है। अनुशासन के बिना विकास की प्रक्रिया को सुनियोजित ढंग से आगे नहीं बढ़ाया जा सकता। मुनि रत्न कुमार जी ने विकास पुरुष आचार्य श्री तुलसी को नमन करते हुए इस चातुर्मास काल में संपूर्ण समाज से तप यज्ञ में आहुति प्रदान करने का आह्वान किया। इस अवसर पर मीनू नाहटा के 9, नवविवाहित राहुल - नेहा नाहटा के सजोड़े अठाई एवं सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन जम्मड़ के 7 की तपस्या के उपलक्ष्य पर तपोभिनंदन समारोह का भी आयोजन किया गया। तेरापंथी सभा, गुवाहाटी की ओर से साहित्य एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर तपस्वी भाई-बहनों के तप की अनुमोदना की गई। तपस्विनी भाई-बहनों के पारिवारिक जनों की ओर से सभा के मंत्री राजकुमार एवं प्रमोद बैद ने सुंदर गीतिका के माध्यम से तप की अनुमोदना की। नन्हीं बच्ची रक्षिता नाहटा ने अपने वक्तव्य से उपस्थित परिषद को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि पद्म कुमारजी ने किया। राजेश जम्मड़ ने तपस्विनी बहनों का परिचय दिया। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से आरंभ कार्यक्रम में तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बाबूलाल सुराणा ने समारोह में उपस्थित महानुभावों का स्वागत-अभिनंदन किया। महासभा के उपाध्यक्ष बसंत कुमार सुराणा, प्रांतीय सभा के अध्यक्ष बजरंग कुमार सुराणा, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष विकास नाहटा, अणुव्रत समिति की मंत्री रंजना बरड़िया, धुबड़ी से श्री विमल ओसवाल, जोरहाट से श्री छत्तरसिंह चौरड़िया, लखीमपुर, नाहरलगुन से छत्तरसिंह गिड़िया, इटानगर, आलोंग, हवाजान से लक्ष्मी गिड़िया, शिलोंग (मेघालय) सभा के मंत्री विनोद सुराणा, डिमापुर (नागालैंड) से अशोक जैन, धींग से पृथ्वीराज छाजेड़, नगांव से जीवनमल सुराणा, खारुपेटिया से दीपक हीरावत, तेजपुर से सुरेश धारीवाल, डिफू से सुरेंद्र भरूंठ, बरहोला से तेजकरण पिंचा, बंगाईगांव (साउथ) से सरोज सिंघी ने अपने-अपने वक्तव्य दिए। इसके अलावा मानकाचर, नलबाड़ी, मरियानी, टिह्, ढेकियाजुली एवं बरपेटारोड से भी श्रावक-श्राविका समागत हुए। धन्यवाद ज्ञापन सभा के वरिष्ठ सहमंत्री राकेश जैन ने किया।

पड़िहारा

साध्वी संघप्रभा जी के सान्निध्य में आचार्य तुलसी का 32वाँ विकास महोत्सव स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा भव्य रूप से आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रभा देवी सुराणा द्वारा सुमधुर गीतिका से मंगलाचरण के साथ हुआ। साध्वी संघप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज के इस पावन अवसर पर तीन महान आत्माओं का अभिनंदन आवश्यक है, जिनके कारण आचार्य तुलसी का विराट व्यक्तित्व और कालजयी कृतित्व तेरापंथ के विकास फलक पर सदा-सदा के लिए अंकित हो गया। प्रथम—मातुश्री वदना जी, जिन्होंने ऐसे सपूत को जन्म दिया। द्वितीय—महामना कालूगणी, जिन्होंने इस कोहिनूर समान हीरे को पहचानकर धर्मसंघ को नवमाधीश के रूप में सौंपा और तृतीय—आचार्य महाप्रज्ञ जी जिन्होंने यह विकास महोत्सव प्रदान किया।

साध्वी सोमश्री जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि आचार्य तुलसी ने आगम साधना, साध्वियों, समणियों और गृहस्थ समाज सभी के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। उनके युग में हर आयाम का समग्र विकास हुआ। साध्वी सोमश्री जी ने अपनी भावनाएँ सुमधुर स्वर लहरियों में अभिव्यक्त कीं। कार्यक्रम में मंजू देवी दूगड़ ने सुमधुर लहरियों से वातावरण को तुलसीमय बना दिया। डॉ. अमरचंद सुराणा ने आचार्य तुलसी के अवदानों पर प्रकाश डालते हुए उन्हें एक कुशल प्रवचनकार और युगपुरुष बताया। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने किया। उन्होंने 'मानवता के महामसीहा तुलसी, तुम्हें प्रणाम' कविता प्रस्तुत की।

पल्लावरम

तेरापंथ भवन में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में 32वां विकास महोत्सव जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा पल्लावरम द्वारा आयोजित किया गया। मुनि दीप कुमार जी ने कहा- आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की सूझबूझ का अवदान हमें विकास महोत्सव के रूप में मिला। तेरापंथ संघ आज विकास की ऊँचाइयों पर खड़ा है। इसकी विकास यात्रा में हमारे आचार्यों का अनन्य योगदान रहा है। आचार्य श्री तुलसी ने विकास की रफ्तार को सुपर एक्सप्रेस स्पीड में बदल दिया। विकास महोत्सव का सीधा संबंध आचार्य श्री तुलसी से है। उन्होंने तेरापंथ के इतिहास में विकास की नई लकीरें खींचीं।

मुनि काव्य कुमार जी ने कहा- आचार्य तुलसी का भाग्य प्रबल था और पुरुषार्थ में गहरा विश्वास था। उन्होंने जो सोचा और कहा, उसे करके दिखाया। विरोधों और संघर्षों ने साये की तरह उनका पीछा किया, पर वे कभी रुके नहीं, झुके नहीं और काम करते हुए थके नहीं। कार्यक्रम में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा गीत का संगान किया गया। संघ-गान के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

32वें विकास महोत्सव पर सजीव हुयी आचार्य श्री तुलसी की स्मृतियां

जसोल

साध्वी रतिप्रभा जी के सान्निध्य में विकास महोत्सव का आयोजन स्थानीय पुराणा ओसवाल भवन में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा 'विकास महोत्सव की जय-जयकार' गीत के संगान से हुआ। साध्वी रतिप्रभा जी ने कहा कि तेरापंथ के नवम अधिशास्ता आचार्य श्री तुलसी महान पुरुष थे, जिन्होंने कम उम्र में ही संघ की बागडोर संभालकर चतुर्मुखी विकास किया। अणुव्रत आंदोलन, सुदूर यात्राएँ, साहित्य सृजन, योगक्षेम वर्ष का आयोजन और शिक्षा के नये आयाम प्रस्तुत कर संघ के लिए नये द्वार खोले। उनकी नैतिक निष्ठा और निस्पृहता सदा स्मरणीय रहेगी। साध्वी कलाप्रभा जी ने बताया कि आचार्य श्री तुलसी ने अपने आचार्य पद का विसर्जन कर युवाचार्य महाप्रज्ञ जी को उत्तराधिकारी बनाया, जो अनासक्त चेतना का अद्भुत उदाहरण है। उनका आंतरिक व्यक्तित्व उनके बाह्य व्यक्तित्व से कहीं अधिक आकर्षक था। साध्वी मनोज्ञयशा जी ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी अद्भुत साहस के धनी थे। उनके लिए साहस का अर्थ था – धारा के विपरीत खड़ा होना। साध्वी पावनयशा जी ने मंच का संचालन करते हुए कहा कि भारतीय इतिहास में आचार्य तुलसी का जीवन अद्वितीय है। अणुव्रत आंदोलन से उन्होंने विश्व की चेतना को झकझोर दिया और राष्ट्र के अमर संत बन गए। तेरापंथ सभा अध्यक्ष भूपतराज कोठारी, महिला मंडल मंत्री जयश्री सालेचा, यशोदा संखलेचा, पुष्पादेवी बुरड़ और मीना देवी गोलेच्छा आदि ने गीतों और भाषणों के माध्यम से अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं।

गंगाशहर

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी तथा सेवा केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वी विशदप्रज्ञा जी व साध्वी लब्धियशा जी के सान्निध्य में विकास महोत्सव का आयोजन हुआ। मुनि कमलकुमार जी ने कहा कि अष्टमाचार्य श्री कालूगणी की कृपा से हमें नवम अधिशास्ता आचार्य श्री तुलसी जैसे पुरुषरत्न मिले। उन्होंने गहन दूरदृष्टि से धर्मसंघ को नये आयाम प्रदान किए, जिससे केवल साधु-साध्वी और श्रावक-श्राविकाएँ ही नहीं, बल्कि जन-जन का कल्याण हुआ। उनके प्रेरक योगदानों में कन्यामंडल, किशोर मंडल, युवक परिषद, महिला मंडल, तेरापंथ सभा, अणुव्रत समिति, ज्ञानशाला, प्रेक्षाध्यान और जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय जैसी संस्थाओं का विकास हुआ। आगम संपादन, जैन भारती, विज्ञप्ति, अणुव्रत पत्रिका, तेरापंथ टाइम्स और विविध साहित्य रचनाओं ने समाज को दिशा दी और संवाद का सशक्त माध्यम बनाया। विकास महोत्सव आचार्य श्री तुलसी के आयामों को स्मृति करने के लिए मनाया जाता है। यह उत्सव हमें आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की दूरदर्शिता से प्राप्त हुआ है।

साध्वी विशदप्रज्ञा जी ने कहा कि आचार्य तुलसी की विकास यात्रा अनेक रूपों में आगे बढ़ी और अनगिनत लोगों का उद्धार करती हुई अमर हो गई। साध्वी लब्धियशा जी ने विकास शब्द का अर्थ बताते हुए कहा— 'वि यानी विवेक, का यानी कार्यशीलता और स यानी सहनशीलता; आचार्य तुलसी का जीवन इन तीनों का सुंदर समन्वय था।' साध्वी मननयशा जी ने कहा कि उनका जीवन एक प्रकाश स्तंभ था, जिसने अपने ज्ञान से दुनिया को आलोकित किया। साध्वीवृंद ने सामूहिक गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम में मुनि श्रेयांसकुमार जी व मुनि मुकेशकुमार जी ने भी गीत संगान किया। सभा मंत्री जतन संचेती, न्यास से जतनलाल दुगड़, शांति प्रतिष्ठान से दीपक आंचलिया, युवक परिषद से ललित राखेचा, प्रोफेशनल फोरम से रतन छलानी और महिला मंडल से प्रेम बोथरा ने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर ज्योति बोथरा ने 8 उपवास, आशादेवी झाबक ने 15 उपवास और तारादेवी बैद ने 50 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया।

राजराजेश्वरी नगर

साध्वी पुण्ययशा जी के सान्निध्य में विकास महोत्सव का आयोजन हुआ। साध्वीश्री ने अपने उद्बोधन में कहा– ज्ञान, दर्शन, चारित्र से संघ का विकास शिखरों पर चढ़ा है। तेरापंथ के आचार्यों ने विकास का सुदीर्घ इतिहास बनाया। जिसमें आचार्य तुलसी ने अनेक अवदान दिए। आचार्य तुलसी ने अपने व्यक्तित्व और कर्तृत्व से संघ को जो दिया उसे शताब्दियों तो क्या सहशताब्दियों तक भी नहीं भूलाया जा सकता है। कार्यक्रम का मंगलाचरण साध्वी वर्धमानयशाजी ने किया। साध्वी बोधिप्रभा जी ने वक्तव्य के द्वारा अपने भावों की प्रस्तुति दी। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष राकेश छाजेड़, पूर्वाध्यक्ष कमलसिंह दूगड़, तेयुप से महेश मांडोत, तेममं से पूर्व अध्यक्षा लता बाफना ने अपने भावों को प्रस्तुत किया। तपस्वी राजेश छाजेड़ के नौ की तपस्या और भाई विपुल पितलिया के कंठी तप की अनुमोदना एवं अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी विनीतयशाजी ने किया।

हैदराबाद

डॉ साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा- आचार्य श्री तुलसी उस व्यक्तित्व का नाम है जिनकी ख्याति राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय दोनों क्षेत्रों में व्याप्त है। इसका कारण है कि आपने धर्म को नई परिभाषा दी। आप विकास के पुरोधा पुरुष थे। निर्विशेषण धर्म की व्याख्या के रूप में अणुव्रत का प्रवर्तन किया। आचार्य श्री तुलसी उस विकास पुरुष का नाम है जिनके कारण कण-कण में एक नयी ऊर्जा, नया जोश, नयी शक्ति का निर्माण होता है। आचार्य श्री तुलसी एक क्रांतिकारी आचार्य थे, उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ की छवि को सात समुद्रों पार पहुंचाया है। साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा- तेरापंथ धर्मसंध एक विकासशील धर्मसंघ है। इस संघ ने ढाई सौ वर्षों में अनेक विकास के परचम फहराये है। विकास की कई मंजिलें तय की है।

साध्वी मेरुप्रभाजी ने कुशल कार्यक्रम संचालन करते हुए कहा- आचार्य तुलसी एक कुशल साहित्यकार, कुशल प्रवचनकार, कुशल लेखक थे। साध्वी दक्षप्रभा ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत करते हुए विकास महोत्सव के महत्व को उजागर किया। कार्यक्रम का प्रारंभ चांद बैद द्वारा मंगलाचरण के रूप में हुई। महिला मंडल की गीतिका के रूप में प्रस्तुति हुई। इस अवसर पर श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुशील संचेती, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के उपाध्यक्ष निखिल कोटेचा, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष से राजेंद्र बोथरा, महिला मंडल की अध्यक्ष नमिता सिंघी, महिला मंडल की उपाध्यक्ष सुशीला मोदी, उपासिका रीता सुराणा ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

साहूकारपेट, चेन्नई

साध्वी उदितयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन साहूकारपेट, चेन्नई में 32वें विकास महोत्सव का समायोजन हुआ। नमस्कार महामंत्र समुच्चारण के साथ शुभारंभ कार्यक्रम में समुपस्थित धर्म परिषद को सम्बोधित करते हुए साध्वी उदितयशा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ सदैव विकास के मार्ग पर अग्रसर रहा है। सभी आचार्यों ने मौलिकता को सुरक्षित रखते हुए विकास के नव आयामों का सृजन किया। नवमाधिशास्ता आचार्य तुलसी ने युगानुरूप धर्मसंघ को अनेकानेक आयाम दिये। श्रावक समाज के संगठनात्मक विकास के लिए अनेकों संस्थाओं का गठन किया। वहीं सामाजिक उत्थान के लिए अणुव्रत, रूढ़ि उन्मूलन इत्यादि आन्दोलन का सूत्रपात किया। आचार्य तुलसी ने योजनाओं की संयोजना की, आयोजन को प्रयोजन सिद्ध करने वाला बनाया। साध्वीश्री ने विशेष पाथेय प्रदान कराते हुए कहा कि हम अपने भीतर श्रद्धा, आस्था का विकास करे। संघ सेवा के अवसर पर व्यक्तिगत कार्यों का भी संशोधन करे, कभी-कभार गौण भी करे। हम अपनी निजी साधना में भी आगे बढ़े, विकास करें। मूक भावों से स्तवन, स्तुति, स्मरण करने से हमारा तारतम्य एकमेव हो जाता है। समय के साथ नाम, रुप, संख्या बदल सकती है, पर तत्व, सत्व नहीं बदलता। इस अवसर पर साध्वी श्री ने गुरुदेव की अनुज्ञा से सुश्रावक माणकचंद रांका को श्रावक की पांचवी प्रतिमा 'कार्योत्सर्ग पणिमा' का संकल्प दिलवाया। इस अवसर पर पूरी धर्म परिषद ने 'ऊँ अर्हम' की ध्वनि से उनका अभिवादन किया। साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने कविता प्रस्तुत की। साध्वी भव्ययशा जी ने आचार्य तुलसी के कर्तृत्व को रेखांकित किया। साध्वी संगीतप्रभा जी ने कुशल संचालन करते हुए सुमधुर गीत का संगान किया। सभाध्यक्ष अशोक खतंग ने अपने विचार व्यक्त किए। संघ गान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

कोलकाता

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में 32वां विकास महोत्सव भिक्षु विहार में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा (कोलकाता-पूर्वांचल) ट्रस्ट द्वारा आयोजित हुआ। मुनिश्री ने कहा कि तेरापंथ अपने जन्म से निरंतर विकासशील रहा है। आचार्य श्री तुलसी ने वर्तमान का मूल्यांकन कर संघ को नये आयाम दिए। उनके विकास के पाँच आधार रहे – विद्या, विनय, विवेक, विरति और विधायक।

आचार्य तुलसी अनुशासनप्रिय, निस्पृह साधक और प्रयोगधर्मी आचार्य थे। उनके नेतृत्व में आगम संपादन, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान, अणुव्रत आंदोलन और समण श्रेणी जैसे महत्वपूर्ण कार्य हुए। उन्होंने हर परिस्थिति में संतुलन रखा और विरोध को भी विनोद में बदल दिया। आचार्य महाप्रज्ञ जी ने विकास महोत्सव की परिकल्पना की, जिसे आचार्य तुलसी ने स्वीकृति दी। आज यह महोत्सव संघ के निरंतर उत्थान का प्रतीक है। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल, बृहत्तर कोलकाता की सामूहिक संगान से हुआ। स्वागत भाषण सभा अध्यक्ष संजय सिंघी ने दिया। विकास परिषद सदस्य बनेचंद मालू, महिला मंडल अध्यक्ष बबिता तातेड़, युवक परिषद अध्यक्ष राजीव बोथरा, प्रोफेशनल फोरम अध्यक्ष इंद्राजमल नाहटा और अणुव्रत समिति हावड़ा के मंत्री वीरेन्द्र बोहरा ने अपने विचार व्यक्त किए। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया और संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। संघगान के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

पीतमपुरा, नई दिल्ली

'शासनश्री' साध्वी सुव्रता जी ने विकास महोत्सव के पावन अवसर पर जनता को संबोधित करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक विचारक थे। वे भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि पुरुष, मानवता के मसीहा और नैतिकता के अग्रदूत थे। आचार्यश्री ने तेरापंथ धर्मसंघ को अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान का अमूल्य अवदान देकर अंतरराष्ट्रीय क्षितिज तक पहुँचाया। अपनी लंबी पदयात्राओं के माध्यम से उन्होंने लाखों व्यक्तियों को नशामुक्त जीवन की ओर प्रेरित किया तथा अनेक संस्थाओं की स्थापना करके संघ की गरिमा में चार चाँद लगाए। उनका जीवन महासागर के समान है, जिसे भुजाओं से नाप पाना असंभव है। 'शासनश्री' साध्वी सुमनप्रभा जी ने कहा कि साध्वी समाज के विकास का श्रेय आचार्य तुलसी को जाता है। उन्होंने साध्वियों को माता जैसा सम्पोषण और पिता जैसा संरक्षण प्रदान किया। उनका व्यक्तित्व महान, मैत्री का महासागर और अमृत का झरना था। साध्वी कार्तिकप्रभा जी ने कहा कि जन-जन के जीवन को उजालों से आलोकित करने वाले महासूर्य का नाम है आचार्य तुलसी। वे कालूगणी की कालजयी रचना थे। कार्यक्रम में अनेक क्षेत्रों से श्रावक-श्राविकाओं की गरिमामय उपस्थिति रही। इस अवसर पर तेरापंथी महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़, शास्त्री नगर सभा के अध्यक्ष राजा कोठारी, शालीमार सभा की अध्यक्षा सज्जनबाई गिड़िया, कीर्ति नगर सभा के अध्यक्ष मनोज सुराणा, ललित जैन, राकेश जैन, कमलाबाई और पुनम सुराणा ने आचार्य श्री तुलसी के चरणों में श्रद्धा-सुमन अर्पित किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी चिन्तनप्रभा जी ने कुशलतापूर्वक किया।

संबोधि

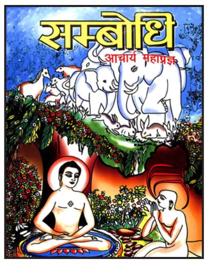

मनः प्रसाद

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

रंगों का शरीर पर प्रभाव

लाल : स्नायुमंडल को स्फूर्ति देना।

नीला : स्नायविक दुर्बलता, धातुक्षय, स्वप्न दोष में लाभ पहुंचाना और हृदय तथा मस्तिष्क को शक्ति देना।

पीला : मस्तिष्क की शक्ति का विकास, कब्ज, यकृत और प्लीहा के रोगों को शांत करने में उपयोगी।

हरा : ज्ञान-तंतुओं और स्नायु-मंडल को बल देना, वीर्य-रोग के उपशम में उपयोगी।

गहरा नीला : गर्मी की अधिकता से होने वाले आमाशय संबंधी रोगों के उपशमन में उपयोगी।

शुभ्र : नींद के लिए उपयोगी।

नारंगी : दमा तथा वात-व्याधियों के रोगों को मिटाने में उपयोगी।

बैंगनी : शरीर के तापमान को कम करने में उपयोगी।

रंगों का मन पर प्रभाव

काला रंग मनुष्य में असंयम, हिंसा और क्रूरता के विचार उत्पन्न करता है।

नीला रंग मनुष्य में ईर्ष्या, असहिष्णुता, रसलोलुपता और आसक्ति का भाव उत्पन्न करता है।

कापोत रंग मनुष्य में वक्रता, कुटिलता और दृष्टिकोण का विपर्यास उत्पन्न करता है।

अरुण रंग मनुष्य में ऋजुता, विनम्रता और धर्म-प्रेम उत्पन्न करता है।

पीला रंग मनुष्य में शांति, क्रोध, मान, माया और लोभ की अल्पता व इन्द्रिय-विजय का भाव उत्पन्न करता है।

सफेद रंग मनुष्य में गहरी शांति और जितेन्द्रियता का भाव उत्पन्न करता है।

मानसिक विचारों के रंगों के विषय में एक दूसरा वर्गीकरण भी मिलता है, जिसका प्रथम वर्गीकरण के साथ पूर्ण सामंजस्य नहीं है। यह इस प्रकार है :

विचार	रंग
भक्तिविषयक	आसमानी
कामोद्वेगविषयक	लाल
तर्कवितर्कविषयक	पीला
प्रेमविषयक	गुलाबी
स्वार्थविषयक	हरा
क्रोधविषयक	लाल-काले रंग का मिश्रण

इन दोनों वर्गीकरणों के तुलनात्मक अध्ययन से प्रतीत होता है कि प्रत्येक रंग दो प्रकार का होता है-प्रशस्त और अप्रशस्त।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री फत्तूजी (लाडनूं) दीक्षा क्रमांक 173

साध्वीश्री तपस्विनी साध्वी थी। आपने 1910 में 14 दिन, 1913 में 11 दिन, 1914 में 4 दिन, 1915 में 30 दिन व 1916 में 37 दिन, 1917 में 40 दिन का तप किया। अन्य तप का विवरण प्राप्त नहीं है।

– साभार : शासन समुद्र –

श्रमण महावीर

क्रान्ति का सिंहनाद

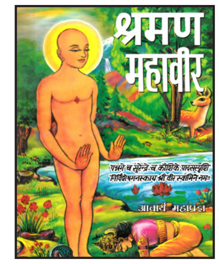

गौतम ने प्रश्न को मोड़ देते हुए कहा- 'भंते ! यदि सम्प्रदाय और धर्म का अनुबन्ध नहीं है तो फिर सम्प्रदाय की परिधि में कौन जाना चाहेगा?'

भगवान् ने कहा- 'यह जगत् विचित्रताओं से भरा है। इसमें विभिन्न रुचि के लोग हैं-

कुछ लोग सम्प्रदाय को पसन्द करते हैं, धर्म को पसन्द नहीं करते ।

कुछ लोग धर्म को पसन्द करते हैं, सम्प्रदाय को पसन्द नहीं करते।

कुछ लोग सम्प्रदाय और धर्म-दोनों को पसन्द करते हैं।

कुछ लोग सम्प्रदाय और धर्म-दोनों को पसन्द नहीं करते।

हम जगत् की रुचि में एकरूपता नहीं ला सकते। जनता का झुकाव सब दिशाओं में होता है। धर्म-विहीन सम्प्रदाय की दिशा निश्चित ही भयाक्रांत होती है।

भगवान् महावीर अहिंसा की गहराई में पहुंच चुके थे। इसलिए साम्प्रदायिक उन्माद उन पर आक्रमण नहीं कर सका। आत्मौपम्य की दृष्टि को हृदयंगम किए बिना धर्म के मंच पर आने वाले व्यक्ति के सामने धर्म गौण और सम्प्रदाय मुख्य होता है। आत्मौपम्य दृष्टि को प्राप्त कर धर्म के मंच पर आने वाले व्यक्ति के सामने सम्प्रदाय गौण और धर्म मुख्य होता है। भगवान् महावीर ने सम्प्रदाय को मान्यता दी, पर मुख्यता नहीं दी। जो धर्मनेता अपने सम्प्रदाय में आने वाले व्यक्ति के लिए ही मुक्ति का द्वार खोलते हैं और दूसरों के लिए उसे बन्द रखते हैं, वे महावीर की दृष्टि में अहिंसक नहीं हैं, अपनी ही कल्पना के ताने-बाने में उलझे हुए हैं।

- भगवान् 'अश्रुत्वा केवली' के सिद्धान्त का प्रतिपादन कर साम्प्रदायिक दृष्टि को चरम बिन्दु तक ले गये।
- किसी भी संप्रदाय में प्रव्रजित व्यक्ति मुक्त हो सकता है-यह स्थापना इस तथ्य की घोषणा थी-कोई भी सम्प्रदाय किसी व्यक्ति को मुक्ति का आश्वासन दे सकता है, यदि वह व्यक्ति धर्म से अनुप्राणित हो। कोई भी सम्प्रदाय किसी व्यक्ति को मुक्ति का आश्वासन नहीं दे सकता, यदि वह व्यक्ति धर्म से अनुप्राणित न हो।
- मोक्ष को सम्प्रदाय की सीमा से मुक्त कर भगवान् महावीर ने धर्म की असाम्प्रदायिक सत्ता के सिद्धान्त पर दोहरी मोहर लगा दी।

भगवान् महावीर मुनित्व के महान् प्रवर्तक थे। वे मोक्ष की साधना के लिए मुनि-जीवन बिताने को बहुत आवश्यक मानते थे। फिर भी उनकी प्रतिबद्धता का अन्तिम स्पर्श सचाई के साथ था, किसी नियम के साथ नहीं।

भगवान् ने 'गृहलिंगसिद्ध' को स्वीकृति दे क्या मोक्ष-सिद्धि के लिए मुनि-जीवन की एकछत्रता को चुनौती नहीं दी? 'घरवासी गृहस्थ भी मुक्त हो सकता है' - इसका अर्थ है कि आराधना अमुक प्रकार के वेश या अमुक प्रकार की जीवन-प्रणाली को स्वीकार किए बिना भी हो सकती है। जीवन-व्यापी सत्य जीवन को कभी और कहीं भी आलोकित कर सकता है-इस सत्य को अनावृत्त कर भगवान् ने धर्म को आकाश की भांति व्यापक बना दिया।

'प्रत्येक बुद्ध' का सिद्धान्त भी साम्प्रदायिक दृष्टि के प्रति मुक्त विद्रोह था। वे किसी सम्प्रदाय या परम्परा से प्रतिबद्ध होकर प्रव्रजित नहीं होते। अपने ज्ञान से ही प्रबुद्ध होते हैं। भगवान् ने उनको उतनी ही मान्यता दी, जितनी अपने तीर्थ में प्रव्रजित होने वालों को प्राप्त थी।

महावीर की ये चार स्थापनाएं- (१) अश्रुत्वा केवली, (२) अन्यलिंगसिद्ध, (३) गृहलिंगसिद्ध, (४) और प्रत्येक बुद्ध 'मेरे सम्प्रदाय में आओ, तुम्हारी मुक्ति होगी अन्यथा नहीं होगी-इस मिथ्या आश्वासन के सम्मुख खुली चुनौती के रूप में प्रस्तुत हुई।

भगवान् महावीर के युग में पचासों धर्म-सम्प्रदाय थे। उनमें कुछ शाश्वतवादी थे और कुछ अशाश्वतवादी। वे दोनों परस्पर प्रहार करते थे। इस साम्प्रदायिक अभिनिवेश के दो फलित सामने आ रहे थे-

१. अपने सम्प्रदाय की प्रशंसा और दूसरे सम्प्रदाय की निन्दा।

२. ऐकान्तिक आग्रह- दूसरों के दृष्टिकोण को समझने का प्रयत्न न करना।

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

जागृत और प्रशस्त विवेक के धनी आचार्यश्री कालूगणी

उनके प्रशस्त विवेक का प्रभाव उनकी चर्या पर पड़ा। उनकी चर्या भी प्रशस्त और विवेकपूर्ण थी। प्रशस्तता में विशवास होता है। उनका विश्वास जितना प्रत्यक्षतः फलित था उतना ही परोक्षतः भी फलित था। अतः उनके प्रति शिकायत का प्रायः कोई अवकाश ही नहीं था।

जब कालूगणी बालवय में थे। एक मुनि मघवागणी के पास आये और कहने लगा, 'मुनि कालू प्रतिलेखन में प्रमाद करता है।'

मघवागणी ने कहा, 'मैं इसे नहीं मान सकता। वह तुम्हारे से अच्छा प्रतिलेखन करता है क्योंकि वह सदा मेरे पास करता है और मैंने कई बार उसे प्रतिलेखन करते हुए देखा है।'

शिकायत करने वाला मुनि कुछ बोल नहीं सका और चला गया। वस्तुतः कालूगणी आत्मानुशासी थे। उनका आत्मानुशासन इतना प्रबल था कि प्रमाद उनसे दूर ही रहता था। ऐसी जागृत, अप्रमत्त, विवेकशील और परिपक्व पुण्यात्मा के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि तभी होगी जब हम उनके गुणों को आत्मसात् करने का प्रयत्न करेंगे।

समाज-सुधार के सूत्रधर : गुरुदेव श्री तुलसी

हिन्दुस्तान की सन्त परमपरा गौरवपूर्ण एवं महिमामण्डित रही है। भारतीय संस्कृति में साधु-समाज को सम्मानपूर्ण स्थान मिला है। सन्त की मूलभूत पहचान है-पवित्रता। व्यवहार के दर्पण में पवित्रता को परखा जा सकता है। निम्नांकित संस्कृत श्लोक में मुनि के चार लक्षण प्रस्तुत है—

वदनं प्रसाद-सदनं, सदयं हृदयं सुधामुधो वाचः।
करणं परोपकरणं, येषां केषां नते वन्द्याः ।।

१. सहज प्रसन्नता
२. प्राणीमात्र के प्रति दयाभाव
३. अमृतमयी वाणी
४. परोपकारिता

भारत को वसुन्धरा ने अमूल्य सन्त-रत्नों को प्रसूत किया है। उन्होंने उपरिनिर्दिष्ट चार मूल्य-मानकों का उपदेश ही नहीं दिया, उन्हें आत्मसात् कर जीया है। समय-समय पर उन्होंने प्रशासक वर्ग का भी योग्य आध्यात्मिक नेतृत्व किया है। देश के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में उनका तपः-पूत दिशा-दर्शन और अविश्रान्त श्रम रहा है।

अणुव्रत अनुशास्ता पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। परमाराध्य गुरुप्रवर की पुनीत प्रज्ञा को हम अनेकानेक विशेषणों से विशिष्ट कर सकते हैं। उनके वर्चस्वी व्यक्तित्व को हम विविध भागों में विभक्त कर सकते हैं। उनके ऊर्जस्वल कर्तृत्व को विभिन्न उपमाओं से उपमित कर सकते हैं। गुरुवर की बहुमुखी क्रियाशीलता में समाज-सुधार का भी प्रमुख स्थान है। आध्यात्मिकता के अवतरण के लिए सामाजिक सुधार भी अत्यन्त आवश्यक है। धार्मिक और आध्यात्मिक कहलाने वाले समाज भी अगर अर्थशून्य रूढ़ियों और अन्धविश्वासों को पनपाते रहें तो उस समाज की आध्यात्मिकता और धर्म-परायणता प्रशनचिहांकित बन जाती है।

हिन्दुस्तान की धर्म-प्रधान धरती पर अनेक समाज-सुधारक महापुरुषों ने जन्म लिया है। उन्होंने अपने निष्णात चिन्तन के द्वारा मानव-जाति को अभिनव पथ प्रदान किया है। उन महान् विभूतियों की प्रलम्ब श्रृंखला में बीसवीं सदी के देदीप्यमान नक्षत्र, प्रसिद्ध जैनाचार्य तेरापंथ धर्म संघ के नवमाधिशास्ता स्वनाम धन्य गुरुदेव श्री तुलसी का नाम भी गौरव के साथ लिया जाता है।

हिन्दुस्तान आजाद हुआ, नेतागण ने देश के बहुमुखी विकास का स्वप्न ले रखा था। उसी समय भारत के महान् सन्त आचार्यश्री तुलसी के चिन्तन-क्षितिज पर एक विचार उभरा-यदि देश का चारित्रिक विकास और आध्यात्मिक शक्ति का संवर्धन, जो कि मूल प्राण है, नहीं हुआ तो अन्यान्य विकास-योजनाएं बहुत फलदायी नहीं होंगी। धर्म और अध्यात्म आत्मावलोकन का साधन और सुख-समाधि- पूर्वक जीवन-यापन का एक तरीका है। किन्तु बहुलांश धार्मिक वर्ग ने धर्म के क्रियाकाण्डात्मक और उपासनापरक पक्ष को दृढ़ता से पकड़ा उसके आचरणात्मक पक्ष का समुचित मूल्यांकन नहीं किया। फलस्वरूप धार्मिक का जीवन भी हिंसा, क्रूरता, धोखाधड़ी आदि अनैतिक आचरणों से अछूता नहीं रहा। धर्म तथा धार्मिक की इस करुणदशा से पूज्य गुरुदेव का सदय हृदय द्रवित हो उठा। एक धर्म-क्रान्ति की अपेक्षा अनुभूत हुई। देश के चारित्रिक विकास और धर्म-क्रान्ति की समुत्कण्ट ने २ मार्च, १९४९ को एक व्यापक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। वह अणुव्रत आन्दोलन के नाम से विख्यात हुआ।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा 8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

अक्टूबर 2025
सप्ताह के विशेष दिन

05 अक्टूबर	**06 अक्टूबर**
तेरस	भगवान संभवनाथ केवलज्ञान कल्याणक एवं पक्खी
07 अक्टूबर	**11 अक्टूबर**
भगवान नमिनाथ च्यवन कल्याणक	भगवान संभवनाथ केवलज्ञान कल्याणक

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री कालूरामजी युग

मुनिश्री हस्तीमलजी (बड़ू) दीक्षा क्रमांक 416

मुनिश्री ने अपने जीवन में अनेक तप किए। आपके तप की तालिका इस प्रकार है– उपवास/588, 2/14, 3/6, 4/2, 5/1, 6/1, 8/1, 11/1, 15/1, 17/1, 30/1, 34/1, 35/1।

– साभार : शासन समुद्र –

शपथ ग्रहण समारोह

कोलकाता। मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, ईस्ट जोन व बृहत्तर कोलकाता की पांच शाखाओं पूर्वांचल, साउथ कोलकाता, दक्षिण हावड़ा, उत्तर हावड़ा व कोलकाता जनरल की नव मनोनीत कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह भिक्षु विहार में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, ईस्ट जोन द्वारा आयोजित किया गया। इस अवसर पर उपस्थित टीपीएफ के पदाधिकारियों, सदस्यों व धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा - तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम बुद्धिजीवियों की संस्था है। बुद्धिजीवी लोग संघ की संपदा है। बुद्धि का सदुपयोग करके संघ की सेवा करना है। शपथ को भार नहीं उपहार समझे। शपथ तो एक व्यवस्था है। मूलतः सेवा करना ही दायित्व है। मुनिश्री ने आगे कहा - तेरापंथ प्रोफेशनल रत्नों की माला है। आचार्य तुलसी के शासन काल में कल्पना हुई और साकार रूप आचार्य महाप्रज्ञ जी के शासन में मिला। प्रत्येक श्रावक का कर्तव्य है कि हमने जिस संघ से पाया है उस संघ की सेवा करें। बृहत्तर कोलकाता तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के सदस्य सक्रिय हैं और अधिक सक्रिय होकर संघ की सेवा करे। कार्यक्रम का शुभारंभ टीपीएफ सदस्यों द्वारा टीपीएफ गीत के संगान से हुआ। शपथ ग्रहण टीपीएफ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रकाश मालू ने करवाया। इस अवसर पर ईस्ट जोन के अध्यक्ष प्रवीण सिशोदिया, ट्रस्टी सुशील चोपड़ा ने टीपीएफ के कार्यों की अवगति देते हुए अपने विचार व्यक्त किये। साउथ कोलकाता के अध्यक्ष नरेंद्र सिशोदिया ने राष्ट्रीय अधिवेशन में अपनी शाखा को प्राप्त हुए अवार्ड की अजानकारी प्रदान की। इस अवसर पर टीपीएफ ईस्ट जोन के अध्यक्ष प्रवीण सिशोदिया, पूर्वांचल के अध्यक्ष राकेश सिंघी, टीपीएफ साउथ कोलकाता के अध्यक्ष नरेंद्र सिशोदिया, टीपीएफ साउथ हावड़ा के अध्यक्ष राजेश दुगड़, टीपीएफ, उत्तर हावड़ा के अध्यक्ष रितेश दुगड़ व टीपीएफ, कोलकाता जनरल के अध्यक्ष प्रवीण दुगड़ ने अपनी कार्यकारिणी सदस्यों के साथ शपथ ग्रहण की। आभार ज्ञापन ईस्ट जोन की मंत्री खुशबू कोठारी ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

चेन्नई। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (टीपीएफ) चेन्नई की नवगठित टीम का शपथ ग्रहण समारोह किलपॉक स्थित भिक्षु निलयम में मुनि मोहजीत कुमार जी के सान्निध्य में प्रवचन के दौरान आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मोनिका आच्छा के मंगलाचरण से हुआ। मंत्री जयेश डागा ने सभी अतिथियों का स्वागत किया तथा विगत वर्ष में अध्यक्षा बबिता चोपड़ा के नेतृत्व में किए गए कार्यों का उल्लेख किया। टीपीएफ साउथ जोन के अध्यक्ष विक्रम कोठारी ने सभा को संबोधित करते हुए फोरम की गतिविधियों पर प्रकाश डाला और 'SHINE' की व्याख्या की। उन्होंने नवगठित टीम को शपथ दिलाई। नव-निर्वाचित अध्यक्षा प्रमीला जैन ने अपने नेतृत्व में विश्वास जताने के लिए सभी को धन्यवाद दिया, आगामी वर्ष की कार्य-योजना प्रस्तुत की तथा फोरम और उसके सदस्यों को मजबूत करने के अपने विजन को साझा किया। मुख्य अतिथि राजस्थान रत्न कैलाश मल दुगड़ ने अपने संबोधन में नई अध्यक्षा प्रमीला जैन को प्रोत्साहित किया। मुनि मोहजीत कुमार जी ने अपने उद्बोधन में संदेश दिया कि व्यक्तिगत पदों से ऊपर हमेशा संघ को रखना चाहिए। उन्होंने नवगठित टीम को आध्यात्मिक आशीर्वाद भी प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन जयेश डागा ने किया और धन्यवाद ज्ञापन नव-सचिव गौरव सुराणा ने प्रस्तुत किया।

32वें विकास महोत्सव पर सजीव हुयी आचार्य श्री तुलसी की स्मृतियां

सुजानगढ़

तेरापंथ भवन में 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभा जी के सान्निध्य में 32वां विकास महोत्सव आयोजित किया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। सर्वप्रथम महिला मंडल अध्यक्ष राजकुमारी भुतोडिया और शोभा सेठिया ने तुलसी अष्टकम से मंगलाचरण किया। सरोज बैद और शोभा सेठिया ने अपने भाव व्यक्त किए। महिला मंडल की बहनों ने सामूहिक गीतिका का संगान किया। विमला लोढ़ा ने गीतिका के माध्यम से आचार्य श्री तुलसी के प्रति अपने भाव अभिव्यक्त किए।

साध्वी पल्लवप्रभा जी ने बताया कि आचार्य श्री की गायन शैली इतनी अद्भुत थी कि उन्हें 'बांसुरी महाराज' कहकर पुकारा जाता था। साध्वी मनीषाश्री जी ने बताया कि उनका जीवन संघ के लिए समर्पित था। वे स्वयं के साथ-साथ सम्पूर्ण समाज के विकास के लिए भी निरंतर अग्रसर रहते थे। 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभा जी ने उनके जीवन वृतांत का उल्लेख करते हुए विकास महोत्सव मनाए जाने का कारण बताया। कार्यक्रम का सफल संयोजन साध्वी मुकुलयशा जी ने किया।

मदुरै

विकास महोत्सव बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ तेरापंथ भवन, मदुरै में मुनि हिमांशु कुमार जी के सान्निध्य में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि हिमांशु कुमार जी ने 'जिनशासन के मुकुटमणि' गीतिका के साथ किया। तत्पश्चात मुनि हेमंत कुमार जी ने विकास के महत्व और आचार्य श्री तुलसी के स्वप्न पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आचार्य तुलसी द्वारा आचार्य पद ग्रहण करने के दिन को ही विकास महोत्सव के रूप में मनाया जाता है। मुनि हिमांशु कुमार जी ने अपने वक्तव्य में आचार्य श्री तुलसी के जीवन, उनके पुरुषार्थ, श्रम और ज्ञान साधना का सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया गया। उन्होंने समझाया कि आचार्य तुलसी ने सदैव परिवर्तन से अधिक विकास पर ध्यान केंद्रित करने का संदेश दिया और अवरोधों को अवसर में बदलने की अद्भुत प्रेरणा दी। आचार्य श्री तुलसी की दिवास्वप्न दृष्टि, श्रमशीलता और समर्पण भावना ने उन्हें महान साधक और समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत बनाया। उनके पुरुषार्थ से समाज में नई जागरूकता और आत्मबल का संचार हुआ।

मनोबल से सम्भव है तपस्या

सिटीलाइट, सूरत।

तेरापंथ भवन में आयोजित मासखमण तप अभिनंदन के अवसर पर प्रोफेसर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि बहन विस्मिता डोशी ने अठाई तप का संकल्प किया था। हमने उन्हें तप मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी और आज वे मनोबल के साथ मासखमण साधिका के रूप में उपस्थित हैं। शरीर भले ही दुर्बल रहा हो, लेकिन उन्होंने अपना मनोबल दृढ़ बनाए रखा। प्रायः वे दर्शन और प्रत्याख्यान के लिए निरंतर आती रही हैं। साध्वीश्री ने कहा कि विस्मिता ने वास्तव में विस्मित करने वाला कार्य किया है। यह उल्लेखनीय है कि वाव के डोशी परिवार में यह पहला मासखमण तप है। प्रबल आत्मबल और मनोबल से उन्होंने अपना लक्ष्य पूर्ण कर लिया है।

पारिवारिक जनों ने तप अभिनंदन गीत का संगान किया। जिग्नेश भाई और यश सिंघवी ने तपस्विनी बहन को शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर साध्वी प्रमुखाश्री जी द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष नमन मेड़तवाल ने किया।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष हजारीमल भोगर ने तप अभिनंदन पत्र का वाचन किया। साध्वी सुदर्शनप्रभाजी, साध्वी अतुलयशा जी और साध्वी शौर्यप्रभा जी ने सामूहिक संगान कर तप अनुमोदन किया।

मासखमण साधिका विस्मिता बेन ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए साध्वीश्री एवं परिजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। कांदिवली से समागत तेयुप अध्यक्ष शक्ति सिंघवी ने साध्वीश्री के कांदिवली चातुर्मास को अविस्मरणीय बताया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की पूर्व अध्यक्षा शांता पुगलिया ने तपस्विनी बहन के तप की अनुमोदना की। सभा मंत्री महेंद्र गांधी मेहता ने भी विचार व्यक्त किए। तेरापंथ सभा द्वारा तपस्विनी विस्मिता बहन का सम्मान किया गया।

'आओ नींद को अपनी ताकत बनाएं' कार्यशाला का आयोजन

आमेट।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार स्थानीय महिला मंडल द्वारा तेरापंथ भवन में विराजित साध्वी सम्यकप्रभा जी के सान्निध्य में 'आओ नींद को अपनी ताकत बनाएं' कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुआ तथा महिला मंडल की बहनों मंजू हिरण, संगीता पामेचा, संगीता चंडालिया, रेणु छाजेड़, मीना पामेचा ने प्रेरणा गीत का संगान किया।

साध्वी दीक्षितप्रभा जी ने ध्यान का विशेष प्रयोग करवाते हुए कहा कि किसी भी ध्यान मुद्रा को एकाग्रता और तन्मयता से किया जाए तो ध्यान सर्व सिद्ध होता है। साध्वी मलयप्रभा जी ने कहा कि नींद को इतना प्रश्रय न दें, जो जागता है वही जानता है। हर व्यक्ति के अंदर बहुत शक्ति छिपी होती है, जिसे ध्यान से उजागर किया जा सकता है।

साध्वी सम्यकप्रभा जी ने अपने प्रवचन में कहा कि यदि नींद पर विजय प्राप्त करना चाहते हैं तो ध्यान एक सशक्त माध्यम है। प्रेक्षाध्यान के द्वारा हम अपनी चिंताओं से दूर होकर आत्मशक्ति को जागृत कर सकते हैं।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की देन प्रेक्षाध्यान हमें मिला है। नियमित ध्यानाभ्यास से शरीर में नई ऊर्जा का संचार होता है। इस अवसर पर सभी संस्थाओं के पदाधिकारीगण व श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही।

मासखमण तप अनुमोदना समारोह

मालवीय नगर, जयपुर। अणुविभा केन्द्र में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा 'शासन गौरव' बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में मासखमण तप अनुमोदना समारोह का आयोजन हुआ। साध्वी वृन्द द्वारा सुमधुर गीतिका संगान प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात 31 बहनों ने सामूहिक रूप से गीतिका का संगान कर वातावरण को भक्तिमय बनाया। साध्वी कनकश्री जी ने अपने उपदेश में धर्म और तपस्या का महत्व बताया। महिला मंडल द्वारा सुरभि कोठारी के मासखमण तप की अनुमोदना व अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर 250 प्रत्याखान हुए।

पर्युषण महापर्व के उपलक्ष्य में विविध आयोजन

बालोतरा

'शासनश्री' साध्वी सत्यप्रभाजी एवं साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में भगवती संवत्सरी की आराधना विशाल जनमेदिनी की उपस्थिति में संपन्न हुई। राजेश बाफना ने बताया कि पर्युषण महापर्व के दौरान पूरा भवन अखंड जप की तरंगों से तरंगित होता रहा। चौबीस घंटे चलने वाले छह दिन के जप अनुष्ठान में सैकड़ों भाई-बहनों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। तप मंदाकिनी में अनेक भाई-बहनों ने स्नान कर आत्मा को उज्ज्वल, पवित्र एवं निर्मल बनाया। संवत्सरी महापर्व के एक दिन पूर्व लगभग नब्बे भाई-बहनों की अट्ठाई तप की अनुमोदना की गई। इसी क्रम में मीना मेहता ने प्रखर तप, बाबूलाल सालेचा ने कंठी तप, आयुषी भंडारी ने ग्यारह, मयंक वेद मुथा ने नौ, आयुषी जीरावला, प्राची संकलेचा, अंतिमा गोलेछा एवं बालक आर्यन ने अट्ठाई तप का साध्वीश्री से प्रत्याख्यान किया। 'शासनश्री' साध्वी सत्यप्रभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भगवती संवत्सरी का महापर्व आत्मावलोकन का पर्व है, ग्रंथि विमोचन का पर्व है, आत्मा को विशुद्ध एवं विशुद्धतर बनाने का उत्सव है। राग-द्वेष की गांठों को खोलकर हल्का होने का यह उत्तम अवसर है। साध्वीश्री ने संवत्सरी के इतिहास का विश्लेषण करते हुए गणधरवाद की सारगर्भित प्रस्तुति दी। साध्वी अणिमाश्रीजी ने अपने वक्तव्य में कहा— 'संवत्सरी महापर्व ऋजुता व मृदुता का महापर्व है। अष्ट की उपासना, वीतरागता की साधना एवं आत्मआराधना का पर्व है। यह आत्म-संपदा से संपन्न बनने का समय है—बाहर से लौटकर भीतर की ओर दृष्टिपात करने का अवसर है। आत्मा को जानने व समझने का यह स्वर्णिम अवसर है।'

साध्वीश्री ने महासती चंदनबाला की रोचक कथा का प्रभावोत्पादक शैली में प्रस्तुतीकरण किया एवं तेरापंथ की यशस्वी आचार्य परंपरा का वाचन किया। साध्वीश्री ने क्षमायाचना के दिन 'खमतखामणा' के महत्व को प्रतिपादित करते हुए निशल्य बनने की प्रेरणा दी। साध्वी कर्णिकाश्रीजी ने तीर्थंकर चरित्र की व्याख्या की। साध्वी ध्यानप्रभाजी ने निन्हववाद का सटीक विश्लेषण किया। साध्वी सुधाप्रभाजी ने जैन धर्म के प्रभावक आचार्यों का प्रभावी शैली में प्रतिपादन किया। साध्वी समत्वयशाजी ने कल्पसूत्र का वाचन किया। साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने भगवान महावीर के साधना काल की रोचक घटनाओं को सुंदर अभिव्यक्ति दी। 'खमतखामणा' का दृश्य भी बड़ा ही भावपूर्ण एवं निराला था। सभाध्यक्ष महेंद्र बैद मुथा ने संपूर्ण श्रावक समाज एवं सभी संस्थाओं की ओर से गुरुदेव, साध्वीवृंद एवं समस्त समाज से खमतखामणा की। सभा के सहमंत्री राजेश जैन ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

गंगावती

पर्युषण महापर्व के अवसर पर मुनि आकाशकुमार जी ने भगवान ऋषभदेव के बारे में विस्तार से जानकारी दी तथा बताया कि सृष्टि के आदिक्रम में लोग कल्पवृक्ष पर आश्रित थे। उस समय भगवान ने लोगों के लिए असि, मसि और कृषि का प्रवर्तन किया, लिपि और ज्ञान का विकास किया। मुनिश्री ने भगवान महावीर के 27 भवों का भी विस्तार से विवेचन करते हुए कहा कि उन्हें नयसार के भव में सम्यक्त्व की प्राप्ति हुई और उनके जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आए। कभी वे वासुदेव बने, कभी चक्रवर्ती, कभी सिंह, कभी नरक या देव गति में रहे। अंततः प्रवर पुरुषार्थ से समस्त कर्मों का क्षय कर वे सिद्ध, बुद्ध और मुक्त बने।

मुनि हितेन्द्रकुमार जी ने तेरापंथ के आचार्यों के बारे में रोचक जानकारी दी। उन्होंने बताया—आचार्य भिक्षु की क्रांति और अनुशासन, आचार्य भारमल जी की विनम्रता, आचार्य रायचंद जी की साधना, आचार्य जीतमल जी की स्थिरता, साधना और रचनाएँ, आचार्य मघवा की कोमलता, आचार्य माणक की निष्पृहता, आचार्य डालचंद की तेजस्विता, आचार्य कालूगणी का वात्सल्य, आचार्य तुलसी की विकासमुखी दृष्टि और संघर्षों में तपकर स्वर्णवत निखरने की क्षमता, आचार्य महाप्रज्ञ की करूणा और ज्ञान, तथा आचार्य महाश्रमण जी में पूर्वाचार्यों के सभी गुणों का समावेश। कार्यक्रम में गंगावती की दीक्षार्थी प्रेक्षा कोचर ने दिवस के गीत प्रस्तुत किए और संस्था के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने संस्था के उद्भव से लेकर अब तक के सर्वांगीण विकास पर प्रकाश डाला। संवत्सरी के उपलक्ष्य में तेरापंथ सभा अध्यक्ष महावीर बागेरचा, तेयुप और तेरापंथ महिला मंडल आदि ने अपनी-अपनी प्रस्तुतियाँ दीं। पर्युषण के दौरान तपस्याओं की विशेष बहार रही। सकल जैन समाज ने मिलकर लगभग 50 से 100 से अधिक उपवास किए। 15 से अधिक अठाई और नौ की तपस्याएँ हुईं। पौषध करने वालों की संख्या लगभग 30 रही।

जसोल

पूराणा ओसवाल सभा भवन में पर्वाधिराज संवत्सरी महापर्व के अवसर पर साध्वी रतिप्रभा जी ने कहा कि संवत्सरी महापर्व आत्मोदय का महापर्व है। यह आत्मावलोकन एवं आत्मशुद्धि का महत्त्वपूर्ण उपक्रम है। संवत्सरी आत्मशक्ति में मैत्री, प्रेम और सौहार्द के बीज बोने का सफल अवसर है। जीवन के पावन मंदिर में क्षमाधर्म का दीप जलाने तथा मैत्रीरूपी गुण-सुमनों की सुवास से अपने जीवन को महकाने, और क्षमा के लहराते दरिये में प्रवेश करके वैमनस्य की आमूल-चूल ग्रंथियों को खोलकर गद्‌गद् हृदय से पूरी शुद्धि के साथ खमत-खामणा करके आगामी भविष्य के लिए कोई रेशमी गांठ न बनाने का ही उद्देश्य क्षमापर्व है।

साध्वी कलाप्रभा जी ने कहा कि क्षमा हमारा आत्मधर्म है, क्षमा हमारे जीवन का सार है। क्षमा जैन धर्म का प्राण है। अनंत-अनंत जीवों ने क्षमा की साधना, आराधना और उपासना करके परमतत्त्व को प्राप्त किया। साध्वी मनोज्ञयशा जी ने कहा कि क्षमा की साधना जितनी सरल प्रतीत होती है, उतनी ही कठिन है। क्षमा है—अपने भीतर के आवेश और आग्रह को नियंत्रित करना। सभी साध्वियों ने श्रावक समाज से खमत-खामणा किया। साध्वी पावनयशा जी ने अपनी जन्मभूमि होने के नाते कहा कि मैं भी तपस्या, जाप और गोचरी- पानी की दृष्टि से यदि किसी भाई-बहन का मन न रखा हो तो मैं हृदय से खमत-खामणा करती हूँ।

इस अवसर पर सभा मंत्री धनपत संखलेचा, ज्ञानशाला प्रभारी संपतराज चौपड़ा, महिला मंडल मंत्री जयश्री सालेचा, युवक परिषद आदि ने अपने विचार व्यक्त करते हुए खमत-खामणा की।

पीतमपुरा, दिल्ली

'शासनश्री' साध्वी सुव्रता जी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व की आराधना हर्ष और उल्लासपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई। खाद्य संयम दिवस पर साध्वी श्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि जैन धर्म के जितने भी पर्व हैं, उनमें पर्युषण पर्व अति प्राचीन और सर्वोत्तम माना जाता है। यह पर्व हमें राग से विराग, अहं से अर्हम् और वासना से उपासना की ओर ले जाने की प्रेरणा देता है। साध्वीश्री ने कहा कि मंत्रजप, आगम अध्ययन, चिकित्सा या ध्यान—सभी साधनाओं की नींव खाद्य संयम है। 'ठाणं आगम' में रोग उत्पत्ति के चार कारण भोजन से संबंधित बताए गए हैं—अति भोजन, प्रतिकूल भोजन, इन्द्रिय-उत्तेजक भोजन और अहित भोजन। अतः रोग उत्पन्न करने वाले भोजन से परहेज करना चाहिए। साध्वी चिन्तनप्रभा जी ने खाद्य संयम पर प्रकाश डाला, साध्वी कार्तिकप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की और 'शासनश्री' साध्वी सुमनप्रभा जी ने गजसुकुमाल के जीवन का संदर्भ प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ पीतमपुरा महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ।

स्वाध्याय दिवस पर साध्वी सुव्रता जी ने दस प्रकार के दानों की व्याख्या करते हुए धर्मदान की विशेष महत्ता बताई, जिसमें ज्ञानदान, अभयदान और स्थितिदान का विस्तार से विवेचन किया। साध्वी चिन्तनप्रभा जी ने भी स्वाध्याय दिवस पर विचार रखे। साध्वी कार्तिकप्रभा जी ने गीतिका का संगान किया और साध्वी सुमनप्रभा जी ने अन्तकृतदशा आगम के आधार पर प्रवचन किया। त्रिनगर सभा के सदस्यों ने मंगलाचरण किया।

सामायिक दिवस पर पूर्णिया श्रावक की कथा का उल्लेख करते हुए साध्वी सुव्रता जी ने कहा कि सामायिक एक अमूल्य साधना है। श्रेणिक ने अरबों-खरबों स्वर्ण देकर पूणिया श्रावक से सामायिक खरीदना चाहा, परंतु पूणिया श्रावक ने कहा— 'इसकी कीमत भगवान महावीर से पूछिए।' तब भगवान ने स्पष्ट किया कि सामायिक अमूल्य है, धन से नहीं खरीदी जा सकती। शास्त्रों के अनुसार, एक सामायिक से 1 करोड़ 58 लाख 25 हजार 900 पल्योपम नारकी आयु का नाश होता है। साध्वी चिन्तनप्रभा जी ने अभिनव सामायिक का प्रयोग कराया। साध्वी सुमनप्रभा जी ने आगम का वाचन किया और कीर्तिनगर महिला मंडल ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया।

वाणी संयम दिवस पर साध्वी सुव्रता जी ने कहा कि मनुष्य को दो अमूल्य वरदान मिले हैं—मधुर मुस्कान और भाषा। भाषा से ही व्यक्तित्व की पहचान होती है। मुख से निकला प्रत्येक शब्द रत्न से भी अधिक मूल्यवान होता है। विवेकपूर्वक भाषा का प्रयोग जटिल समस्याओं का समाधान कर देता है। साध्वी सुमनप्रभा जी ने वाणी संयम पर अपने विचार रखे, साध्वी कार्तिकप्रभा जी व साध्वी चिन्तनप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम का शुभारंभ मानसरोवर गार्डन महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ।

अणुव्रत चेतना दिवस पर साध्वी सुव्रता जी ने कहा कि आज विश्व हिंसा और आतंक की विभीषिका से जर्जर है। ऐसे समय में अणुव्रत ही आशा की किरण है। यह जीवन का आधार, दर्शन और उन्नति का माध्यम है। संयम के बिना जीवन में सुख-शांति का आगमन असंभव है। साध्वी सुमनप्रभा जी ने भी अपने विचार रखे। साध्वी कार्तिकप्रभा जी और साध्वी चिन्तनप्रभा जी ने क्रमशः व्यक्तव्य और गीतिका प्रस्तुत की। शालीमार बाग महिला मंडल ने मंगलाचरण किया।

जप दिवस पर साध्वी सुव्रता जी ने कहा कि मंत्र जप से बिखरी हुई मानसिक शक्तियाँ एकत्रित होती हैं, वायुमंडल शुद्ध होता है, रक्तसंचार संतुलित होता है और मस्तिष्क की सुप्त शक्तियाँ जाग्रत हो जाती हैं। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी स्वयं मंत्रस्रष्टा और मंत्रविज्ञाता थे। उन्होंने मंत्रों के द्वारा अनेक व्यक्तियों की समस्याओं का समाधान किया। साध्वी सुमनप्रभा जी ने अन्तकृतदशा आगम का वाचन किया, साध्वी कार्तिकप्रभा जी ने विचार रखे और साध्वी चिन्तनप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। शास्त्रीनगर महिला मंडल ने मंगलाचरण किया।

साध्वी सुव्रता जी ने ध्यान दिवस पर कहा— 'प्रेक्षा का अर्थ है देखना। श्वास, चैतन्य केन्द्रों और मन में उठने वाले विचारों की तरंगों को देखना ही प्रेक्षा है।' प्रेक्षा ध्यान हमें अतीत और भविष्य से मुक्त होकर वर्तमान में जीना सिखाता है। साध्वी कार्तिकप्रभा जी ने ध्यान का प्रयोग कराया, साध्वी चिन्तनप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की और साध्वी सुमनप्रभा जी ने अन्तगडदसाओ का वाचन किया। उत्तरी दिल्ली महिला मंडल ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया।

भगवती संवत्सरी महापर्व के अवसर पर साध्वी सुव्रता जी ने भगवान महावीर के जीवन, जैन धर्म के प्रभावशाली आचार्यों और महासती चंदनबाला के प्रेरक प्रसंगों का विस्तृत वर्णन किया। साध्वी सुमनप्रभा जी ने अन्तकृद्दशा आगम के आधार पर गजसुकुमाल और अर्जुनमाली के जीवन का विवेचन किया।

साध्वी कार्तिकप्रभा जी ने विपाकसूत्र और तेरापंथ की यशस्वी आचार्य परंपरा के जीवन संदर्भ प्रस्तुत किए। साध्वी चिन्तनप्रभा जी ने जैन धर्म और तेरापंथ धर्मसंघ के साहित्य के रोचक एवं प्रेरक इतिहास की अभिव्यक्ति दी। तेरापंथी महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के जीवन प्रसंगों को भावपूर्ण रूप से प्रस्तुत किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
06 अक्टूबर - 12 अक्टूबर, 2025

पर्युषण महापर्व के उपलक्ष्य में विविध आयोजन

पड़िहारा

साध्वी संघप्रभा जी के सान्निध्य में पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व का कार्यक्रम उल्लासपूर्ण वातावरण में आयोजित किया गया। केंद्र द्वारा निर्धारित दिवसों एवं विषयों के आधार पर प्रतिदिन साध्वीवृंद के क्रमशः प्रेरक प्रवचन एवं महिला मंडल द्वारा प्रस्तुत किए गए सुमधुर भावपूर्ण गीत सराहनीय रहे। खाद्य संयम दिवस एवं जयाचार्य निवारण दिवस पर साध्वी संघप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि पर्युषण उत्कृष्ट धर्म आराधना, आत्म प्रक्षालन एवं ग्रंथि विमोचन का ऐसा महापर्व है जो मानव मन को नई दिशा देता है। उन्होंने कहा कि खाद्य संयम के बिना कोई भी साधक आत्मशुद्धि के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकता। जयाचार्य ने इसी तप के बल पर अपनी प्रज्ञा जगाकर साढ़े तीन लाख पद्यों की रचना की। साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने खाद्य संयम की महत्ता को उजागर करते हुए कहा कि भोजन हमारे जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है, किन्तु हित, मित, ऋत और अनासक्त भाव से शांत मन रखकर प्रकाशयुक्त स्थान में भोजन करने वाला व्यक्ति जीवों की विराधना से बच जाता है और स्वस्थ भी रह सकता है। साध्वी सोमश्री जी ने जयाचार्य के जीवन के कई प्रभावक प्रसंग सुनाए।

स्वाध्याय दिवस पर साध्वी संघप्रभा जी ने कहा कि केवल पुस्तकें पढ़कर डिग्रियां हासिल करना ही पर्याप्त नहीं है, वास्तविक स्वाध्याय वही है जिससे विवेक चेतना का जागरण होता है। साध्वी सोमश्री जी ने स्वाध्याय को मुक्ति का द्वार बताते हुए कहा कि इसके माध्यम से भटकता हुआ इंसान अपनी मंजिल प्राप्त कर लेता है। साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने मुक्तकों द्वारा स्वाध्याय को स्वदर्शन का अमोघ उपाय बताया। साध्वीश्री ने भगवान महावीर के सत्ताईस भवों की रोमांचक यात्रा का वर्णन भी प्रारंभ किया।

सामायिक दिवस पर साध्वी संघप्रभा जी ने कहा कि सामायिक में सर्व सावद्ययोग का प्रत्याख्यान वस्तुतः निषेधात्मक भावों से विरत होकर सकारात्मकता की ओर अग्रसर होना है। साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने अभिनव सामायिक का प्रयोग कराते हुए श्रुत, सम्यक्त्व एवं चारित्र सामायिक का वर्णन किया। वाणी संयम दिवस पर साध्वी संघप्रभा जी ने अपने प्रवचन में कहा कि गम्भीर, उत्कृष्ट और महान व्यक्तित्व का परिचायक है वाणी संयम। वाणी संसार की वह अद्भुत शक्ति है जो परिवार, समाज और राष्ट्र को जोड़ने का आधार बनती है। साध्वीश्री ने वाणी के सम्यक उपयोग पर बल देते हुए भगवान महावीर के पूर्व भवों के जीवन प्रसंगों का रोमांचक वर्णन किया। साध्वी सोमश्री जी ने वाणी को व्यक्ति के चरित्र की पहचान बताते हुए अल्पभाषी, मधुरभाषी और सत्यभाषी बनने की प्रेरणा दी।

अणुव्रत चेतना दिवस पर साध्वी संघप्रभा जी ने कहा कि भारतीय संस्कृति व्रतों की संस्कृति रही है। हर धर्म में किसी न किसी रूप में व्रतों की आराधना का विधान है। जैन धर्म में श्रावक के बारह व्रत बताए गए हैं, जिनका मूल ध्येय असीमित भोगाकांक्षाओं का परिसीमन कर संयममय जीवनशैली को अपनाना है। साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने अणुव्रत के ग्यारह नियमों की व्याख्या करते हुए श्रावक समाज को चरित्रनिष्ठ, प्रामाणिक, नशामुक्त और नैतिक जीवन जीने का सरल मार्ग बताया।जप दिवस पर साध्वी संघप्रभा जी ने कहा कि जीवन में बदलाव लाने का महत्वपूर्ण सूत्र है जप। जप करते समय साधक को अपने इष्ट और लक्ष्य के साथ तादात्म्य जोड़ना चाहिए तथा धनीभूत श्रद्धा, दृढ़ संकल्प और मन की एकाग्रता के साथ जप करना चाहिए। साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने वाचिक और मानसिक जप की व्याख्या करते हुए विशेष रूप से नमस्कार महामंत्र और लोगस्स के जप को कठिन परिस्थितियों से उबरने का माध्यम बताया।

ध्यान दिवस पर साध्वी संघप्रभा जी ने कहा कि ध्यान बाहरी चंचलता से हटकर अंतर्मुखी होने का विशिष्ट प्रयोग है, जिससे आत्मशक्तियों का विस्फोट और अतीन्द्रिय चेतना का जागरण होता है। साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने आत्मसाक्षात्कार प्रेक्षाध्यान को गीत के मधुर स्वर में प्रस्तुत कर वातावरण को ध्यानमय बना दिया। साध्वी सोमश्री जी ने ध्यान का प्रयोग कराते हुए आगम का उपदेश दिया। साध्वी संघप्रभा जी ने भगवान महावीर की भवयात्रा की अंतिम कड़ी का वर्णन करते हुए तीर्थंकर गोत्र उपार्जन के बीस कारणों का उल्लेख किया।

संवत्सरी महापर्व के अवसर पर स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल भवन में कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा मंगल सूत्रों के संगान से हुआ। साध्वी संघप्रभा जी ने अपने उद्बोधन में भगवान महावीर के 27वें भव के साधनाकाल के भीषण उपसर्गों का रोमांचकारी वर्णन किया और संवत्सरी के इतिहास सहित इस दिन को उपवास, पौषध और प्रतिक्रमण द्वारा आत्मनिरीक्षण के पर्व के रूप में मनाने की प्रेरणा दी। अपराह्न सत्र में उन्होंने जैन धर्म के आचार्यों और जैन शासन के गौरवशाली इतिहास को प्रस्तुत किया। साध्वी सोमश्री जी ने तीर्थंकरों के जीवन चरित्र एवं आचार्य अकलंक और आचार्य जिनदत्तसूरी के प्रसंग सुनाए। साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने महासती चंदनबाला का जीवन वृत्त भावपूर्ण शैली में प्रस्तुत करते हुए शील की महिमा का गायन किया और तेरापंथ के ग्यारह आचार्यों तथा प्रमुख साध्वियों की जीवन गाथा का वर्णन किया। महिला मंडल की बहनों ने 'यह संवत्सर का पर्व सुहाना सबको भाया रे' गीत प्रस्तुत कर कार्यक्रम को और भव्य बनाया।

क्षमापना दिवस पर साध्वी संघप्रभा जी ने कहा कि क्षमा चित्त की निर्मलता, हृदय की सरलता और आत्मा की उज्ज्वलता की महत्वपूर्ण निष्पत्ति है। क्षमा वह औषधि है जो भीतर के गहरे घावों को भी भर सकती है। खमत-खामणा महज शब्द उच्चारण नहीं, बल्कि भावों की पवित्रता का झरना है जिसमें जन्म-जन्मांतरों का वैर भी घुल जाता है। साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने क्षमा को वीरों का आभूषण बताया और साध्वी सोमश्री जी ने इतिहास के कई उदाहरण प्रस्तुत किए। इस अवसर पर तेरापंथ सभा अध्यक्ष लक्ष्मीपत सुराना, महिला मंडल की ओर से प्रभा देवी सुराना व मंजुदेवी दुग्गड़ तथा ब्राह्मण समाज की ओर से बजरंगलाल जोशी ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में साध्वी वृंद और श्रावक समाज ने परस्पर सामूहिक क्षमायाचना कर वातावरण को मंगलमय बना दिया।

विशेष आध्यात्मिक उपक्रमों के अंतर्गत साध्वीश्री की प्रेरणा से घर-घर नमस्कार महामंत्र का जप तथा 'ॐ भिक्षु' का सवा लाख जप सम्पन्न हुआ।

पर्युषण में भाईयों द्वारा रात्रिकालीन तथा बहनों द्वारा दिवसकालीन अखंड जप उल्लेखनीय रहा। प्रतिदिन सामूहिक प्रतिक्रमण में भी अच्छी उपस्थिति रही। इसके अतिरिक्त जयाचार्य वर्णाक्षरी, गीताक्षरी, अंताक्षरी, काव्य संध्या, संस्मरण गोष्ठी और कथा गोष्ठी जैसे विविध सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक कार्यक्रम आयोजित हुए। तपस्या एवं पौषध-आवास, मौन साधना, ध्यान साधना, सामायिक साधना आदि के अनेक उपक्रम भी संपन्न हुए।

शिरपूर

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, शिरपूर के तत्वावधान में पर्युषण पर्व की आराधना हेतु उपासक जवेरीलाल संकलेचा (अहमदाबाद) एवं खूबीलाल छत्रावत (सूरत) का आगमन हुआ। उपासक द्वय ने भगवान महावीर के पूर्वभव, साधना काल, सर्वज्ञता काल, तेरापंथ के आचार्यों का जीवन-चित्र, खाद्य संयम दिवस, स्वाध्याय दिवस, सामायिक दिवस, वाणी संयम दिवस, व्रत चेतना दिवस, जप दिवस, ध्यान दिवस, भगवती संवत्सरी महापर्व पर मार्मिक प्रकाश डाला। सायंकालीन प्रतिक्रमण व अर्हत् वंदना, तत्वज्ञान, तेरापंथ दर्शन व तेरापंथ प्रबोध के विवेचन के पश्चात तनाव प्रबंधन, कैसे करें सहनशक्ति का विकास?, क्रोध के कारण व निवारण, जीवन में सफलता का राज, कैसे करे स्मरणशक्ति का विकास?, बुढ़ापा वरदान कैसे बने? आदि विषयों पर प्रेक्षाध्यान के माध्यम से वर्तमान समस्याओं का व जिज्ञासा समाधान द्वारा मार्मिक प्रकाश डाला। उपस्थित जनता ने रात्रि में 11 से प्रातः 5 बजे तक मोबाईल नहीं देखने का संकल्प स्वीकार किया।

जैन विद्या के लगभग 34 फॉर्म्स भरवाये गये। दोपहर में पच्चीस बोल, जैन विद्या एवं बारह व्रत की क्लास चली। सुबह प्रार्थना, प्रेक्षाध्यान एवं योगासन की कक्षा नियमित चली। इस अवसर पर कर्मणा जैन, पाटील, गुजर, चौधरी भाई-बहनों ने भी लाभ लिया। महिला मंडल, तेयुप, ज्ञानशाला एवं कन्या मंडल का विशेष सहयोग रहा। सामायिक पचरंगी, मौन पचरंगी, अभिनव सामायिक एवं जप दिवस पर नमस्कार महामंत्र का अखंड जप का क्रम चला।

आचार्य भिक्षु ने कष्टों पर समता भाव से प्राप्त की विजय

बायतु।

स्थानीय तेरापंथ भवन में 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में सम्यक् दर्शन कार्यशाला आयोजित की गई। तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष गौतम चौपड़ा ने जानकारी दी कि अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद एवं समण संस्कृति संकाय के संयुक्त तत्वावधान में तेयुप बायतु द्वारा साध्वीश्री के सान्निध्य में 15 दिवसीय सम्यक दर्शन कार्यशाला का आयोजन किया गया जो कि तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु के आचार-विचार, सिद्धांतों पर आधारित 'शासन गौरव मुनि बुद्धमल जी द्वारा लिखित पुस्तक पर आधारित है।

इस अवसर पर साध्वी जिनरेखा जी ने कहा आचार्य भिक्षु के जीवन में अनेक कष्ट आए लेकिन उन्होंने उन कष्टों पर समता भाव से विजय प्राप्त कर नव युगदृष्टा बने।

यह कार्यशाला आचार्य भिक्षु के जीवन के सभी दृष्टांतों को समाहित करती हुई उनके जीवन का सजीव चित्रण करती है।

एक आचार्य, एक आचार, एक विचार और एक सामाचारी जैसे मूल्यों से तेरापंथ को उन्होंने अन्य सभी धर्मसंघों के लिए अनुकरणीय बना दिया। साध्वीश्री ने कहा कि आचार्य भिक्षु दूरदर्शी सोच के धनी थे।

सादा जीवन उच्च विचार को अपनाकर कषाय रूपी क्रोध, मान, माया, लोभ जैसी प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त कर व्यक्ति अपने जीवन को सारगर्भित बना कर सफल बना सकता है। संयोजक मनोज चौपड़ा एवं प्रज्ञा जैन ने जानकारी दी कि कार्यशाला को रोचक बनाने के लिए प्रतिदिन प्रश्नोत्तर के माध्यम से विद्यार्थियों के ज्ञान को परखा गया एवं प्रतिदिन पारितोषिक वितरण किया गया।

कार्यशाला में तेरापंथी सभा अध्यक्ष राकेश जैन, तेयुप अध्यक्ष गौतम चौपड़ा, महिला मंडल अध्यक्ष अनिता जैन सहित अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने कार्यशाला में भाग लिया।

संक्षिप्त खबर

पूज्य कालूगणी का महाप्रयाण दिवस आयोजित

पल्लावरम। मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में आचार्य श्री कालूगणी का 90वां महाप्रयाण दिवस तेरापंथी सभा पल्लावरम द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम में दिशा कटारिया ने 8 की तपस्या का प्रत्याख्यान भी ग्रहण किया। मुनि दीप कुमार जी ने कहा- आचार्य श्री कालूगणी अप्रमत्त योगी थे। उनकी हर क्रिया जागरूकता पूर्वक हुआ करती थी। मघवागणी फरमाते- 'मुनि कालू कईयों की अपेक्षा अपना कार्य अधिक ढंग से करता है।' मघवागणी की अमाप्य कृपा उन्हें प्राप्त हुई। कालूगणी की पुण्याई प्रबल थी। उसके सामने विघ्न भी महोत्सव बन जाते थे। उनकी पुण्यवक्ता और तेजस्विता का इतना प्रभाव था कि जो व्यक्ति उन्हें मौत के घाट उतारने आया था, उनकी तेजस्वी मुख-मुद्रा के सामने नतमस्तक हो गया। उन्होंने संघ को आचार्य श्री तुलसी जैसा आचार्य प्रदान कर महान उपकार किया। मुनि काव्य कुमार जी ने कहा- कालूगणी के शासनकाल में तेरापंथ ने हर क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की। कटारिया परिवार की बहनों ने दिशा कटारिया की तपस्या के उपलक्ष्य में गीत का संगान किया।

लघु नाटिका का मंचन

जयपुर। सोडाला, श्याम नगर स्थित भिक्षु साधना केंद्र में तेरापंथ महिला मंडल (सी-स्कीम) ने आचार्य भिक्षु के गृहस्थ जीवन से संबंधित एक प्रसंग को लघु नाटिका के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने इससे समाज को कुरूतियों से मुक्त होने का संदेश दिया। इस अवसर पर मुनि तत्त्व रुचि जी 'तरुण' ने अपने उदबोधन में कहा - आचार्य भिक्षु 18वीं शताब्दी के महान समाज सुधारक और क्रांतिकारी संत थे। जिन्होंने तत्कालीन समाज में व्याप्त दम्भ, कुरूतियों और अंधविश्वासों का विरोध किया तथा समाज को नई दिशा प्रदान की। मुनि संभवकुमार जी ने कहा - आचार्य भिक्षु जागृत प्रज्ञा के धनी थे। उनकी बुद्धि चाणक्य से भी अधिक निखरी हुई थी। वे औत्पातिकी बुद्धि वाले महापुरुष थे। वे जटिल से जटिल सवालों और समस्याओं को सहजता से समाहित कर देते। ऐसा व्यक्तित्व सदियों में कभी-कभी अवतरित होता है। कार्यक्रम में महिलाओं द्वारा सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी गयी। अन्त में मुनिश्री ने लोगों को रोचक प्रश्नोत्तरी द्वारा आचार्य भिक्षु के जीवन से परिचित कराया।

दिव्य भक्तामर अनुष्ठान का आयोजन

यशवंतपुर। स्थानीय तेरापंथ भवन में साध्वी सोमयशाजी के सान्निध्य में दिव्य भक्तामर जप अनुष्ठान संपन्न हुआ। अनुष्ठान में लगभग 85 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। साध्वीश्री ने भक्तामर अनुष्ठान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि नियमित भक्तामर पाठ करने से हमारी सोच बदल जाती है, विचार शुद्ध बनते हैं और भीतर में आनन्द की अनुभूति होती है। विघ्न बाधा का निवारण होता है। यह एक ऐसा स्तोत्र है जो श्वेताबर, दिगंबर सभी अपनी श्रद्धा, आस्था से स्वीकार करते हैं। यह स्तोत्र जैन परपरा में सर्वमान्य है। पूरी परिषद ने तन्मय होकर भक्तामर स्तोत्र का सामूहिक उच्चारण किया। श्रद्धालुओं ने नियमित भक्तामर पाठ करने का साध्वीश्री से संकल्प लिया। डॉ साध्वी सरलयशा जी एवं साध्वी ऋषिप्रभा जी ने गीत का संगान किया।

तप समाचार

पीलीबंगा। डॉ. मुनि विनोद कुमार जी के सान्निध्य में सरला सुराणा धर्मपत्नी छगन सुराणा ने 11 की तपस्या की।

गुवाहाटी। मुनि डॉ. ज्ञानेंद्र कुमारजी, एवं मुनि रमेश कुमारजी के सान्निध्य में महिमा भूरा, सायर देवी नाहर, मंजुला भादानी, प्रिया सेठिया ने 11, मंजुलता सेठिया ने 10 और संगीता कोठारी ने 8 की तपस्या की।

रोहतक। साध्वी सुमनश्री जी के सानिध्य में लोकेश जैन एवं श्वेता जैन ने सजोड़े एवं संगीता जैन, नीलम जैन, आशु जैन एवं नीतिश जैन ने अठाई की तपस्या की।

डीडवाना। साध्वी गुप्तिप्रभाजी के सान्निध्य में प्रियांशी घोड़ावत ने अट्ठाई की तपस्या की।

'आओ नींद को अपनी ताकत बनाएं' कार्यशाला का आयोजन

पूर्वी दिल्ली।

बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि नींद दर्शनावरणीय कर्म से जुड़ी है। उसके उदय से नींद अधिक या कम हो सकती है। अच्छी नींद वही है जिससे उठते ही ताजगी महसूस हो और तुरंत उठ जाया जाए। आचार्य महाप्रज्ञ जी के अनुसार नींद की मुख्य साइकिल 17 मिनट की होती है जिसमें 3 मिनट की गहरी नींद (sound sleep) होती है। मुनिश्री ने नींद को साधना में सहायक बताते हुए 'प्रतिक्रिया विरति' साधना का महत्व समझाया और 'ह्रूं ह्रं' मंत्र का विशुद्धि केंद्र पर ध्यान करवाया।

शुभारंभ के बाद लक्ष्मीनगर क्षेत्र की बहनों ने प्रेरणा गीत प्रस्तुत किया। पूर्वी दिल्ली महिला मंडल अध्यक्ष मंगला कुण्डलिया ने स्वागत किया। प्रशिक्षिका शिल्पा दूगड़ ने नींद की परिभाषा, वैज्ञानिक पक्ष समझाते हुए बताया कि मेलाटोनिन हार्मोन अच्छी नींद के लिए आवश्यक है। उन्होंने इसके लिए चार उपाय सुझाए – सुबह धूप में टहलना, योग व प्राणायाम; प्रतिदिन मनपसंद गतिविधि करना; संतुलित खानपान और ध्यान का नियमित अभ्यास। उन्होंने ध्यान का प्रयोग भी करवाया। कार्यक्रम में सुनीता जैन, विजया मालू, राजेंद्र सिंघी, निर्मल छल्लाणी, आनंद बुच्चा, क्रांति बरडिया आदि गणमान्य उपस्थित रहे। शिल्पा दूगड़ का सम्मान महिला मंडल पदाधिकारिणियों ने किया।

दूसरे चरण में तेरापंथ प्रबोध की 20 गाथाओं पर आधारित प्रतियोगिता हुई जिसमें 28 बहनों ने भाग लिया। प्रथम स्थान सुप्रिया दूगड़ व कविता मालू, द्वितीय कनक भंसाली व मंजू जैन और तृतीय अंजू बैद व मंजू बैद ने प्राप्त किया। सभी विजेताओं को सम्मानित किया गया। संचालन व आभार ज्ञापन मंत्री दीपिका नाहटा ने किया। कार्यशाला में लगभग 150 लोग उपस्थित रहे।

सामूहिक नीवी तप कार्यक्रम का आयोजन

आमेट।

साध्वी सम्यकप्रभाजी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा श्रृंखलाबद्ध सामूहिक नीवी तप का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र के जप अनुष्ठान के साथ सभी को एक साथ नीवी का प्रत्याख्यान करवाया।

साध्वी श्री ने कहा कि जैन दर्शन में तप का बड़ा महत्व बताया गया है, तप कोई भी हो उसे करने से कर्म निर्जरा होती है। तप से आत्मा निर्मल बनती है। इस आयोजन में तेरापंथ सभा, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल आदि का सहयोग रहा। नीवी तप में 70 श्रावक-श्राविका सहभागी बने।

सामूहिक क्षमापना कार्यक्रम एवं जैन महिला सम्मेलन का भव्य आयोजन

चेन्नई।

श्री जैन महासंघ के तत्वावधान में श्री श्वेताम्बर, मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथ एवं दिगंबर संप्रदाय का सामूहिक क्षमायाचना कार्यक्रम महिला वर्ग हेतु साहुकारपेट सभा भवन में सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण और गीतिका से किया गया। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा हेमलता नाहर ने साध्वी वृंद और सभी उपस्थित बहनों से विनम्रतापूर्वक क्षमायाचना करते हुए कहा कि आप सभी की उपस्थिति से इस आयोजन की शोभा और बढ़ गई है।

साध्वी उदितयशा जी ने कहा कि मैत्री शब्द भले छोटा हो, लेकिन उसकी आत्मा असीम और विराट है। हर जीव के प्रति मैत्री की भावना रखना ही महावीर संदेश का सार है। मैत्री दिवस गांठें खोलने और आत्मा को जागृत करने का पर्व है। अंतर से क्षमायाचना ही आत्मा को हल्का करने और रिश्तों को प्रगाढ़ बनाने का वास्तविक मार्ग है। साध्वी भव्ययशा जी और साध्वी शिक्षाप्रभा जी ने मैत्री दिवस पर गीतिका प्रस्तुत कर वातावरण को आध्यात्मिक और मैत्रीभाव से आलोकित कर दिया। इस अवसर पर आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी उदितयशा जी, साध्वी विज्ञप्तियशा श्रीजी म.सा., साध्वी पर्वनिधि श्रीजी म.सा., साध्वी नीलमप्रभा जी म.सा. और साध्वी आज्ञानिधि श्रीजी म.सा. आदि साध्वी वृन्द ने अपने विचार रखे। शीतल मुथा ने जैन महासंघ की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। स्थानकवासी समाज से संगीता बांठिया ने अपने विचार रखे। जैन महासंघ से लता पारख ने तेरापंथ संप्रदाय का प्रतिनिधित्व किया।

द्वितीय सत्र महिला सम्मेलन का शीर्षक था— 'कहाँ हैं आप? ज़रा पीछे मुड़ें देखें, क्या छोड़ेंगे छाप?' इस अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने विशेष प्रस्तुति दी। गीतिका साध्वी संगीतप्रभा जी द्वारा लिखी गई थी और समर्पण टीम की बहनों ने स्वरबद्ध किया। साध्वी भव्ययशा जी ने पेंसिल के पाँच गुणों के उदाहरण द्वारा जीवन संदेश दिए और कहा कि जैसे पेंसिल अपनी छाप छोड़ती है, वैसे ही हमें भी प्रेम, करुणा और सौहार्द के कार्य करने चाहिए। इसके बाद महिला मंडल मंत्री वंदना पगारिया ने टॉक शो पैनलिस्ट बहनों का परिचय कराया। पैनलिस्ट दीपा पारख, सुनीता यशपाल और डॉ. अंजू सोनी ने प्रश्नों के सारगर्भित उत्तर देकर मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम की संयोजिकाएं—सूरज मुथा, सुमन बरमेचा, उषा धोका, प्रीति डुंगरवाल, सूरज बोथरा, लीला सेठिया और रेखा गादिया—ने आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्या माला कातरेला और दीपा पारख की गरिमामय उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। लगभग 500 बहनों की सहभागिता और सभी संप्रदायों से 22 मंडलों की उपस्थिति से यह आयोजन ऐतिहासिक और प्रेरणादायी बन गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी संगीत प्रभा जी ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
06 अक्टूबर - 12 अक्टूबर, 2025

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. 8905995002 पर व्हाट्सअप अथवा abtyptt@gmail.com पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

आत्मा को उज्ज्वल बनाने का सरल उपाय है तप

विजयनगर, बैंगलोर।

केवल पढ़ा-लिखा व्यक्ति ही विद्वान या पंडित नहीं होता। भगवान महावीर ने कहा है कि जो समय को जानता है और उसे समझकर आगे बढ़ता है, वास्तव में वही पंडित कहलाता है। प्रत्येक मनुष्य में संकल्प शक्ति और दृढ़ निश्चय होना चाहिए, तभी वह जीवन में सफल हो सकता है। उपरोक्त विचार साध्वी संयमलता जी ने जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, विजयनगर के तत्वावधान में आयोजित तप अभिनंदन समारोह में कहे। साध्वीश्री ने कोमल बाफना, जिन्होंने महज 21 वर्ष की आयु में तथा काजल पीतलिया, जिन्होंने 28 वर्ष की लघु आयु में मासखमण तप कर अपनी दृढ़ संकल्प शक्ति के बल पर इतिहास रचा, उनका तपोभिनंदन करते हुए कहा कि संकल्प शक्ति के धनी ही तप समरांगण में अपना शौर्य दिखा पाते हैं।

साध्वी श्री ने आगे कहा कि आत्मा को उज्ज्वल और पवित्र बनाने का सरल उपाय है तप। तप रूपी झूले में झूलने वाला ही वास्तविक आनंद प्राप्त करता है तथा भव-भव के संचित कर्मों को तोड़ता है। साध्वी वृंद ने स्व-रचित गीत द्वारा दोनों तपस्वी बहनों का अभिनंदन किया। साध्वी मनीषा प्रभा जी ने कहा कि तपस्या बहुत दुर्लभ कार्य है। तप को अनेक रोगों को ठीक करने वाली दवा बताया गया है। इसे अपने जीवन में उतारने वाला स्वस्थ तथा आध्यात्म से संपन्न बनता है। साध्वी रौनकप्रभा जी ने ध्यान का प्रयोग करवाया। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। मंडल की उपाध्यक्ष सुमित्रा बरडिया एवं सह मंत्री अनिता जीरावला ने तपोभिनंदन के क्रम में लघु नाटिका प्रस्तुत की। तपस्वियों के पारिवारिक सदस्यों ने गीत की प्रस्तुति दी एवं अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। बंसीलाल पीतलिया ने साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी का संदेश वाचन किया। तेयुप अध्यक्ष विकास बांठिया, तेयुप मंड्या अध्यक्ष कमलेश जैन, अणुव्रत समिति अध्यक्ष महेंद्र टेबा, जितेंद्र घोषल एवं विक्रम दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वीश्री द्वारा तपस्वी बहनों को प्रत्याख्यान करवाया गया। सभा एवं महिला मंडल द्वारा तपस्वी बहनों का सम्मान किया गया।

साहस, संयम और दृढ़ निश्चय वाले ही तपस्या कर सकते हैं

ओसवाल भवन, दिल्ली।

बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में विवेक विहार, ओसवाल भवन दिल्ली में दो तपस्वियों – विमल सिंह बैद (75 दिन की तपस्या) एवं हनुमान सेठिया (38 दिन की तपस्या) – के तप अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। मंगलाचरण के साथ प्रारंभ हुए इस कार्यक्रम में उद्बोधन प्रदान करते हुए बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी ने कहा – तपस्या वह अमूल्य साधना है, जो व्यक्ति के जीवन को संवारती है। उन्होंने कहा कि केवल साहस, संयम और दृढ़ निश्चय वाले व्यक्ति ही सच्ची तपस्या कर सकते हैं। मुनिश्री ने तपस्या का महत्व बताते हुए कहा कि यह व्यक्ति के चरित्र को परिपक्व बनाती है और मानसिक शक्ति को मजबूत करती है। समारोह में उन्होंने तपस्वियों के तप अनुमोदन में रचित दो गीतों का संगान किया। इस अवसर पर स्थानीय समाज के विभिन्न संगठन, परिवारजन और शुभचिंतकों ने तपस्वियों के प्रति अपनी आध्यात्मिक मंगल कामना व्यक्त की। तेरापंथ सभा शाहदरा दिल्ली द्वारा तपस्वियों का सम्मान किया गया। अनुमोदन के इस कार्यक्रम में उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

सर्वमंगलकारी अनुष्ठान का आयोजन

पल्लावरम। मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में पुष्य नक्षत्र के शुभ अवसर पर सर्वमंगलकारी अनुष्ठान का भव्य आयोजन तेरापंथी सभा पल्लावरम द्वारा किया गया। अनुष्ठान में सभी ने तन्मय होकर अच्छी संख्या में लाभ लिया। मुनि दीप कुमार जी ने कहा- अशुभ और अमंगल के निवारण के लिए अनुष्ठान की साधना बहुत उपयोगी, कारगर और लाभदायक सिद्ध होती है। पुष्य नक्षत्र में की गई साधना का सुखद परिणाम मिलता है। मुनि दीप कुमार जी और मुनि काव्य कुमार जी ने मंत्रों द्वारा अनुष्ठान को अलग ढंग और रोचक तरीके से कराया।

स्वास्थ्य जांच शिविर का समायोजन

राजाजीनगर। तेरापंथ आद्य प्रवर्तक महामना आचार्य श्री भिक्षु के 223वें चरमोत्सव के उपलक्ष में तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर एंड डेंटल केयर श्रीरामपुरम के अंतर्गत रियायती दर पर मधुमेह जांच शिविर का समायोजन किया गया।

शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। मधुमेह जांच शिविर के अंतर्गत चार विभिन्न प्रकार की जांचे समावेश की गई। कुल 35 सदस्यों ने अपनी जांच करवाई। इस अवसर पर तेयुप से राजेश देरासरिया, मुकेश भण्डारी एवं भवेश बोथरा ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

ज्ञानवर्धक कार्यशाला के विविध आयोजन

यशवंतपुर, बैंगलोर।

साध्वी सोमयशा जी के सान्निध्य में तेरापंथ महिला मंडल के अंतर्गत तेरापंथ कन्या मंडल – यशवंतपुर द्वारा कई प्रेरणादायी एवं ज्ञानवर्धक कार्यशालाओं का सफल आयोजन किया गया। प्रथम चरण में 'क्विज़ प्रतियोगिता – सब खेलो, सब जीतो' का आयोजन हुआ। साध्वीश्री के मार्गदर्शन में जैन धर्म की संस्कृति और नैतिक मूल्यों से जुड़े प्रश्न पूछे गए, जिनका प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक उत्तर दिया। विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। अपने उद्बोधन में साध्वीश्री ने ज्ञानार्जन की महत्ता और जीवन में धर्म के व्यवहारिक अनुपालन पर प्रकाश डाला।

द्वितीय चरण में 'तेरापंथ प्रबोध' कार्यशाला का आयोजन हुआ, जिसमें साध्वी सोमयशा जी ने आचार्य भिक्षु द्वारा दिखाए गए सत्य धर्म की व्याख्या की। उन्होंने बताया कि भीखणजी ने पुत्र और पुत्री में कभी भेदभाव नहीं किया, उनकी पुत्री का नाम प्यारीबाई था। साध्वीश्री ने कन्या होने के वास्तविक अर्थ एवं महत्व पर प्रकाश डालते हुए कन्याओं को आत्मविश्वास, सकारात्मक दृष्टिकोण और तेरापंथी संस्कारों को आत्मसात करने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर साध्वी सरलयशा जी ने 'तेरापंथ प्रबोध' का संगान किया तथा साध्वी ऋषिप्रभा जी ने कहा कि आज के आधुनिक युग में अपने मूल धर्म को साथ लेकर आगे बढ़ना चाहिए, जिससे लक्ष्य प्राप्ति में कोई बाधा नहीं आती।

अणुव्रत दिवस के अवसर पर कन्या मंडल ने प्रेरणादायी प्रस्तुति एवं गीतिका का आयोजन किया। इसमें समाज के समक्ष अणुव्रत के मुख्य सिद्धांत जैसे – नशामुक्ति, अहिंसा, दहेज उन्मूलन, असत्य भाषण का परित्याग और मिलावट से दूरी – को सरल और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया। गीतिका और प्रस्तुति ने सभी उपस्थितजनों को गहराई से प्रभावित किया और सभी ने अणुव्रत मार्ग को अपनाने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम का संचालन कन्या मंडल की संयोजिका दृष्टि गन्ना और सह-संयोजिका दिया पोरवाड़ ने किया। प्रभारी गीता गन्ना ने स्वागत किया। मंडल अध्यक्ष रेखा पितलिया और मंत्री टीना पितलिया ने विचार व्यक्त किए।

पुरस्कार वितरण सभा के उपाध्यक्ष ताराचंद गन्ना एवं मंडल की संगठन मंत्री प्रियंका डुंगरवाल ने किया। सभा एवं परिषद के सदस्य भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। आभार सह-प्रभारी नीलम तातेड़ ने व्यक्त किया।

दीक्षार्थी का मंगल भावना समारोह

विजयनगर, बैंगलोर।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा विजयनगर के तत्वावधान में साध्वी संयमलता जी के सानिध्य में दीक्षार्थी हनुमानमल दुगड़ का मंगल भावना समारोह का तेरापंथ सभा भवन में आयोजित किया गया।

साध्वी संयमलता जी ने दीक्षार्थी के प्रति मंगलभावना व्यक्त करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति का एक महान उपक्रम है दीक्षा। दीक्षा दिखावा नहीं, दर्शन है। दीक्षा प्रदर्शन नहीं, प्रयोग है।

जीवन का सृजन करने में हनुमानमल जी ने उत्तम सोपान की ओर अपना कदम बढ़ाया है।

राजवंशी परिवार के दीक्षार्थी तेरापंथ धर्म संघ के महाराजा आचार्य श्री महाश्रमण जी के चरणों में हनुमान बनने को उत्सुक हैं।

अपने नाम की तरह ही भगवान के प्रति भक्ति, समर्पण, श्रद्धा, विनम्रता के भावों के साथ आगे बढ़ते रहे एवं धर्म संघ की सेवा करते हुए आत्मा की गति प्रगति करते रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ।

सभा एवं महिला मंडल द्वारा दीक्षार्थी का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम में सभा के अध्यक्ष मंगल कोचर, उपाध्यक्ष भंवर लाल मांडोत, बाबूलाल बोथरा, युवक परिषद अध्यक्ष विकास बांठिया तथा महिला मंडल उपाध्यक्ष सुमित्रा बरडिया एवं श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही।

तप, जप एवं स्तुति का हुआ संगम

बेंगलुरु।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में, तेरापंथ युवक परिषद बेंगलुरु द्वारा महामना आचार्य श्री भिक्षु के 223वें चरमोत्सव के उपलक्ष्य में तेरापंथ सभा भवन, गांधीनगर में एक भव्य धम्म जागरण का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत डॉ मुनि पुलकित कुमार जी द्वारा मंगलाचरण के साथ हुई। तत्पश्चात मुनि आदित्य कुमार जी द्वारा गीतिका का संगान किया गया।

प्रज्ञा संगीत सुधा ने अपने आद्य प्रवर्तक गुरु भिक्षु स्वामी के प्रति भावांजलि अर्पित करते हुए भावपूर्ण भजनों की प्रस्तुतिया अर्पित की, जिसने सभी को आध्यात्मिकता से सराबोर कर दिया। इस विशेष अवसर पर तेयुप साथी, किशोर मंडल, महिला मंडल एवं श्रावक-श्राविका समाज की सराहनीय उपस्थिति रही। 'अभ्यर्थना एक क्रांति की 2.0' अंतर्गत युवा साथियों ने उपवास, एकासन आदि तप किए। साथ ही, 24 घंटे अखंड ॐ भिक्षु-जय भिक्षु जाप का सफलतापूर्वक आयोजन हुआ। इस आयोजन को सफल बनाने में जप संयोजक प्रकाश सालेचा, तपोयज्ञ संयोजक मोहित सुराणा एवं प्रज्ञा संगीत सुधा संयोजक आदित्य सेठिया का विशेष योगदान रहा।

तेयुप बेंगलुरु ने तेरापंथ सभा, महिला मंडल एवं सभी सहयोगी संस्थाओं और संपूर्ण श्रावक समाज के सहयोग के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त की।

पृष्ठ 1 का शेष

मीडिया का व्यक्ति हो....

आचार्यश्री तुलसी के उत्तराधिकारी आचार्यश्री महाप्रज्ञजी हुए। उन्होंने प्रेक्षाध्यान का क्रम प्रारंभ किया। आज इन्हीं दोनों के नाम से आचार्य तुलसी–महाप्रज्ञ विचार मंच है, जिसके द्वारा आचार्यश्री तुलसी सम्मान प्रदान किया जाना है। यह सम्मान मीडिया से जुड़े श्री रजत शर्मा को दिया जाना है।

मीडिया का व्यक्ति निर्भीक होना चाहिए और उसमें निर्लोभता भी होनी चाहिए। समाज को मीडिया के माध्यम से पथदर्शन प्राप्त होता है।

आचार्य प्रवर ने सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की प्रेरणा दी, साथ ही आचार्यश्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष व प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के संदर्भ में भी प्रेरणा पाथेय प्रदान किया।

आचार्य प्रवर के पावन संबोध के पश्चात् आचार्य तुलसी–महाप्रज्ञ विचार मंच की ओर से रजत शर्मा को 'आचार्यश्री तुलसी' सम्मान प्रदान किया गया। रजत शर्मा ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि आचार्यश्री महाश्रमणजी ऐसे व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने अपना जीवन मानवता की सेवा के लिए समर्पित कर दिया है। मेरा सौभाग्य है कि आपकी सन्निधि में राज्यपाल महोदय के हाथों से यह सम्मान प्राप्त हुआ है।

गुजरात व महाराष्ट्र के राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी ने संबोधन में कहा कि मैं आचार्यश्री महाश्रमणजी को सादर प्रणाम करता हूं। जब व्यक्ति सृष्टि के नियमों को तोड़ता है, तो वह दुःखी बन जाता है। अहिंसा और सत्य ऐसे शाश्वत सिद्धांत हैं, जो सुख और निर्भयता प्रदान करते हैं।

इसी प्रकार अचौर्य, ब्रह्मचर्य, संयम और अपरिग्रह भी शाश्वत नियम हैं। मैं रजत शर्माजी को बधाई देता हूं कि आज भी हमारे बीच ऐसे लोग हैं, जो निर्भीक होकर पत्रकारिता कर रहे हैं और मीडिया के माध्यम से समाज निर्माण का कार्य कर रहे हैं।

मीनाक्षी भूतोड़िया द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई। आचार्य तुलसी–महाप्रज्ञ विचार मंच के अध्यक्ष राजकुमार पुगलिया व नवभारत टाइम्स के पूर्व संपादक विश्वनाथ सचदेव ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। अमराईवाड़ी ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका संगीता सिंघवी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। अमराईवाड़ी ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने मुनि अतिमुक्तक के संदर्भ में अपनी प्रस्तुति दी।

आचार्यश्री ने ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों को आशीर्वचन एवं प्रेरणा प्रदान की। श्रीचंद दूगड़ ने आभार ज्ञापित किया। तदुपरान्त राष्ट्रगान के गायन के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

आज्ञा में हो पुरुषार्थ...

व्यक्ति को हमेशा आज्ञा में ही पुरुषार्थ करना चाहिए और अनाज्ञा में पुरुषार्थ करने से बचना चाहिए। मंगल प्रवचन के उपरांत पूज्य गुरुदेव की सन्निधि में राज्यसभा सांसद लहर सिंह सिरोया उपस्थित हुए और उन्होंने अपनी श्रद्धासिक्त भावाभिव्यक्ति दी। आचार्यश्री ने उन्हें आशीर्वचन प्रदान किया।

बोलती किताब

संपन्न बनो

आदमी के भीतर भय संज्ञा रहती है । जो कष्टकारी स्थिति होती है या अप्रिय स्थिति होती है, उससे आदमी डरता है । प्रस्तुत प्रसंग में दो स्थितियों का उल्लेख किया जा रहा है ह्न जरा और मृत्यु । जरा यानी बुढ़ापे की स्थिति भी कष्टकारी होती है और मृत्यु से भी आदमी डरता है । आदमी कामना करता है कि मैं चिर युवा बना रहूं, किन्तु ऐसा नहीं हो सकता । वह यौवन कभी न कभी चला जाता है । यौवन के चले जाने पर बुढ़ापा आ जाता है । बुढ़ापे में शरीर के अंगों पर भी असर आ सकता है ।

भाव जीव का स्वरूप है और मूल स्वरूप में क्षायिक भाव है । सारे कर्मों के क्षय से जो स्थिति निष्पन्न होती है, वह आत्मा का स्वभाव है। ज्ञानावरणीय कर्म क्षीण होने से अनंत ज्ञान की प्राप्ति होती है । दर्शनावरणीय कर्म के क्षय होने से अनंत दर्शन की प्राप्ति होती है । मोहनीय कर्म क्षय होने से अनंत आनंद की प्राप्ति होती है । अंतराय कर्म क्षीण होने से अनंत बल की प्राप्ति होती है और चार अघाती कर्मों के क्षीण होने से अटल-अवगाहन,अमूर्तिकपन, अगुरुलघुपन और आत्मिक सुख ह्न ये गुण प्राप्त होते हैं । ये गुण ही जीव का स्वरूप है । साधना करते-करते ज्यों-ज्यों व्यक्ति क्षायिक भाव की ओर आगे बढ़ता है, त्यों-त्यों वह अध्यात्म की गहराई में उतरता जाता है ।

कुछ लोग यह सोच सकते हैं कि जिन्दगी भर पाप कर लो, अंतिम समय में अच्छे परिणाम आ जाएंगे तो हमारी गति ठीक हो जाएगी, किन्तु ऐसा नहीं होता है । जिन्दगी भर में जैसे परिणाम ज्यादा आते हैं, वैसे ही परिणाम अंतिम समय में आने की ज्यादा संभावना रहती है । अगर जिन्दगी में पाप ही पाप किया है तो अंतिम समय में शुभ भाव आ जाएं, यह कम संभव है । कुछ लोग ऐसे मिल सकते हैं, जिन्होंने जिन्दगी में खूब पाप किया, किन्तु बुढ़ापे में वे धर्माचरण करने लगते हैं । श्रीकृष्ण कहते हैं कि आदमी जिस भाव में रहा है, वही भाव अंतिम समय में आने की संभावना रहती है ।

गीता में बड़ा सुन्दर कहा गया कि जो साधक-पुरुष हर्ष, अमर्ष यानी क्रोध और भय ह्न इन तीनों से मुक्त रहता है, वह न स्वयं उद्विग्न होता है और न दूसरों को उद्विग्न बनाता है । हम अपने बारे में ध्यान दें कि ये तीनों चीजें ह्न हर्ष, अमर्ष और भय हमारे भीतर कितनी मात्रा में हैं ? ये ज्यादा हैं या कम हैं या मध्यम स्थिति वाले हैं ? कोई हमारी प्रशंसा कर देता है तो क्या हमें हर्ष नहीं होता है ? कोई हमारा अपमान कर दे तो क्या हमें अमर्ष नहीं आता ? रात को अंधेरे में अकेले रहना हो तो क्या हमें डर नहीं लगता ? भय यथार्थ की साधना में बाधा है । भयभीत आदमी मृषावाद का भी प्रयोग कर लेता है । भयभीत आदमी हिंसा में भी प्रवृत्त हो जाता है, इसलिए अहिंसा की साधना करने के लिए, यथार्थ की आराधना के लिए अभय की साधना करना आवश्यक होता है । हमारे में न गुस्सा जागे, न भय का भाव जागे और न ज्यादा खुशी का भाव जागे । साधक संतता से संपन्न बनने का प्रयास करे । यह वीतरागता की स्थिति का नमूना या वीतरागता की स्थिति होती है ।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

ज्ञानशाला दिवस का आयोजन

राउरकेला।

ज्ञानशाला दिवस राउरकेला में उपासक प्रकाश सिंघवी व सुरेंद्र बोथरा के मार्गदर्शन में बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र से की गई। तत्पश्चात प्रशिक्षिकाओं द्वारा मंगलाचरण किया गया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष रूपचंद बोथरा ने बच्चों को ज्ञानशाला में आने के लिए प्रोत्साहित किया। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष संगीता दूगड़ ने बताया कि संस्कारों के बीज ज्ञानशाला में ही डलते हैं। तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष सिद्धार्थ कोचर ने जीवन में ज्ञानशाला के महत्व को बताया। बच्चों की सुंदर प्रस्तुति ने सबका मन मोह लिया। कैसे मोबाइल ने हमारे जीवन को वश में कर लिया और उससे कैसे छुटकारा पाया जाए, यह एक छोटी सी नाटिका के माध्यम से ज्ञानशाला के बच्चों ने बताया।

छोटे-छोटे बच्चों ने सुंदर नृत्य प्रस्तुत किए। 'जैन प्रोडक्ट खरीदो' के माध्यम से एकासन, अयंबिल, उपवास आदि करने की विधि को बच्चों ने दर्शाया। भिक्षु स्वामी के जीवन की झांकियों को नाटिका के माध्यम से सजीव कर दिया गया।

व्यवस्थापिका कनक बोथरा ने बच्चों को ज्ञानशाला में भेजने के लिए समाज के प्रत्येक परिवार से आह्वान किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
06 अक्टूबर - 12 अक्टूबर, 2025

अनाग्रह का अभ्यास करने से हो सकती है सत्य की आराधना : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
22 सितम्बर, 2025

आश्विन शुक्ला प्रतिपदा, सोमवार का दिन, शारदीय नवरात्रा का प्रारंभ। अहमदाबाद के कोबा स्थित प्रेक्षा विश्व भारती परिसर में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्म संघ के वर्तमान अधिशास्ता अखण्ड परिव्राजक, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में नवरात्र के संदर्भ में नवाहिक आध्यात्मिक अनुष्ठान का प्रारंभ हुआ।

परम पूज्य आचार्यश्री ने विशाल जन समूह के बीच मंगल मंत्रों का समुच्चारण करते हुए जप किया। जप अनुष्ठान के पश्चात् आचार्यवर ने 'आयारो' आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जो व्यक्ति मध्यस्थ होता है, अनाग्रही होती है, निष्पक्ष होता है, वही व्यक्ति सच्चाई की अच्छी आराधना करने में सफल हो सकता है। जहां पक्षपात और आग्रह का भाव आ जाता है, वहां व्यक्ति सच्चाई से दूर रह सकता है। संस्कृत में कहा गया कि मध्यस्थ व्यक्ति का मन रूपी बछड़ा युक्ति रूपी गाय के पीछे-पीछे चलता है। दुराग्रह रूपी बन्दर उस बछड़े की पूंछ खींचता है। अर्थात् मध्यस्थ व्यक्ति का मन जो न्यायपूर्ण है, युक्ति संगत है, उसका अनुगमन करता है, परन्तु जहां दुराग्रह आ जाता है, वह उस युक्ति को भी अपनी बात को सिद्ध करने के लिए, अपनी ओर खींचता है। अतः यदि किसी मध्यस्थ भाव रखने वाले व्यक्ति को कोई दुराग्रही व्यक्ति मिल जाए तो उसे भी मध्यस्थ भाव, सच्चाई का भाव रखने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

सच्चाई के प्रति निष्ठा रखने वाले व्यक्ति, मध्यस्थ भाव रखने वाले व्यक्ति महान होते हैं। वे युक्ति संगत बात का समर्थन करते हैं, किसी प्रकार का आग्रह नहीं रखते। अपनी मान्यता अपने स्थान पर है, परन्तु जो विचार समीक्षापूर्वक सही की स्थिति में आए, औचित्य की स्थिति में आए, उसे सम्मान देना चाहिए। मध्यस्थ भाव रखते हुए अपनी प्रतिभा का सदुपयोग करने का प्रयास करना चाहिए। अनाग्रह भाव से किया गया चिन्तन और निर्णय फलदायी हो सकता है।

आचार्यश्री ने कहा कि आध्यात्मिक अनुष्ठान का यह क्रम गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के समय से लगातार चल रहा है। व्यक्ति को इसके माध्यम से, मुख्य रूप से अपनी आत्मा के कल्याण का प्रयास करना चाहिए।

पूज्य गुरुदेव की पावन सन्निधि में आज अमृतवाणी के वार्षिक अधिवेशन का मंचीय उपक्रम हुआ। इस संदर्भ में अमृतवाणी के अध्यक्ष ललित दूगड़ व मंत्री अशोक पारख ने अपनी अभिव्यक्ति दी। अमृतवाणी के उपाध्यक्ष पन्नालाल पुगलिया ने अमृतवाणी द्वारा आयोजित 'स्वर संगम' के ग्रान्ड फिनाले के सम्बन्ध में जानकारी दी। इस संदर्भ में आचार्यश्री ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि परम पावन आचार्यश्री तुलसी के समय में हमारे धर्म संघ में कई नवीन उन्मेष आए थे। जैन विश्व भारती में अमृतवाणी का भवन है। जहां हमारे गुरुओं की वाणियां सुरक्षित है। गुरुकुल वास में अमृतवाणी बारह ही महीने साथ चलता है। इस संस्था के द्वारा अच्छा धार्मिक-आध्यात्मिक कार्य होता रहे।

डॉ. प्रेमसुख मरोठी ने अपनी कविता संग्रह की पुस्तक 'ब्रह्मकमल' आचार्यश्री के समक्ष लोकार्पित करते हुए अपनी भावाभिव्यक्ति दी। आचार्यश्री ने इस संदर्भ में मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

शक्ति का उद्देश्य हो स्व और पर कल्याण : आचार्यश्री महाश्रमण

कोबा, गांधीनगर।
23 सितम्बर, 2025

शारदीय नवरात्रा के द्वितीय दिवस आराधना के क्रम में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्म संघ के एकादशमाधिशास्ता महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने समुपस्थित चतुर्विध धर्म संघ को आध्यात्मिक अनुष्ठान के क्रम में मंत्र जाप का प्रयोग करवाया। अनुष्ठान के पश्चात् पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से पावन संबोध प्रदान करते हुए फरमाया कि उत्थित और स्थित की गति को सम्यकतया देखो। उत्थित का अर्थ है उठा हुआ और स्थित का अर्थ है ठहरा हुआ और गति का अर्थ है - गमन क्रिया। शरीर के संदर्भ में व्यक्ति बैठा हुआ था और यदि खड़ा हो गया तो उत्थित हो गया और स्थित था अर्थात् गति निवृत्ति थी या खड़ा रह गया वह स्थिर और चलना गति हो जाती है। उठना एक विकास की बात भी हो सकती है।

यदि हम आध्यात्मिक विकास की दृष्टि से विचार करें तो अभी नवरात्र में आध्यात्मिक अनुष्ठान का क्रम चल रहा है। यह समशीतोष्ण काल का समय है। इस समय सर्दी और गर्मी की दृष्टि से मौसम समान सा रहता है साथ ही दिन और रात भी लगभग बराबर से रहते हैं। व्यक्ति का आध्यात्मिक दृष्टि से उत्थान हो और शक्ति का भी विकास हो। प्रश्न हो सकता है कि शक्ति क्यों चाहिए और शक्ति कौनसी चाहिए? शरीर की दृष्टि से बात करें तो शारीरिक शक्ति भी महत्त्वपूर्ण होती है। व्यक्ति का शरीर स्वस्थ रहे, बीमारी आदि न हों, शरीर तंत्र अच्छा कार्य करे, शारीरिक श्रम हो सके इसलिए शरीर की शक्ति का भी महत्त्व है। दूसरी शक्ति मन की शक्ति होती है। जिस व्यक्ति के पास मन की शक्ति होती है, वह कठिन और चुनौतीपूर्ण कार्य भी सम्पन्न कर सकता है। उपर्युक्त दोनों तन और मन की शक्ति के साथ सहन शक्ति और वचन शक्ति भी होनी चाहिए। व्यक्ति में सहिष्णुता होनी चाहिए जिससे वह अच्छा विकास कर सकता है। किसी विषय पर भाषण देना हो, बात करनी हो तो वचन की शक्ति भी अपेक्षित होती है। व्यक्ति धाराप्रवाह बोल भी सके और सामने वाले उस बात को सुन सकें और समझ भी सकें। गृहस्थों को धन की शक्ति और राजनेताओं को जन बल, जन शक्ति की भी आवश्यकता हो सकती है। कभी विघ्न-बाधाएं आए तो उसके निवारण के लिए देवी-देवताओं की शक्ति की भी अपेक्षा हो सकती है।

आध्यात्मिक संदर्भ में चारित्र मोहनीय और दर्शन मोहनीय के क्षयोपशम की शक्ति और बाद में क्षायिक शक्ति नितान्त आवश्यक होती है। इस प्रकार शक्ति क्यों चाहिए का उत्तर है - कि मैं स्वकल्याण कर सकूं और दूसरों की सेवा कर सकूं, इसलिए मुझे शक्ति चाहिए। कैसी शक्ति चाहिए इसका उत्तर हो सकता है कि स्वकल्याण और परकल्याण के लिए शरीर की शक्ति, मनोबल अर्थात् मन की शक्ति, वचन की शक्ति और आध्यात्मिक शक्ति यानी क्षयोपशम की शक्ति चाहिए। शक्ति का उद्देश्य ऐसा नहीं होना चाहिए कि किसी का बिगाड़ करने की बात सोचें, शक्ति और साधना का उद्देश्य केवल स्व और पर कल्याण होना चाहिए।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन के पश्चात् मुनि ध्यानमूर्ति जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

एक आचार्य का नेतृत्व

आचार्य भिक्षु ने वर्तमान की परिस्थितियों तथा साधु-संस्थाओं का गहरे में उतर कर अध्ययन किया। उन्होंने पाया—ये साधु विवेकशून्य व्यक्तियों को मूंड लेते हैं। उनमें न विराग होता है, न तत्त्वज्ञान। वे शिष्यों के लिए परस्पर झगड़ा करते हैं। दूसरे के शिष्यों को फंटाकर अपना बनाने का प्रयास करते हैं। उनमें शिष्यों का लोभ है। वे अपनी-अपनी शिष्य-शाखा को बढ़ाना चाहते हैं। इस स्थिति में वैराग्य घट रहा है, भेख ऊपर उठ रहा है।

उन्हीं के शब्दों में—

वैराग घट्यो नै भेख बधियो, हाथ्यां रो भार गधा लदियो।
गधा थाक्या बोझ दियो रालो, एहवा भेखधारी पंचम कालो।।

आचार्य भिक्षु ने अनुभव किया—

इस समस्या को सुलझाये बिना साधुत्व की गरिमा नहीं बढ़ सकती। इस चिन्तन के आधार पर उन्होंने शिष्य शाखा के संतोष का सूत्र दिया और व्यवस्था दी—कोई साधु अपना शिष्य न बनाए। सब शिष्य एक ही आचार्य के हों।

इस व्यवस्था से साधु संघ की गरिमा बढ़ी। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है—तेरापंथ।

भिक्षु की कहानी

जयाचार्य की जुबानी

माधोपुर में श्रावक गूजरमलजी और केसूरामजी परस्पर चर्चा में उलझ गए। गूजरमलजी ने श्रावक में आठ आत्माएं बतलाई और केसूरामजी ने सात। गूजरमलजी बोले-'यदि चारित्र आत्मा श्रावक में न हो तो उसके सचित वनस्पति खाने के त्याग का क्या अर्थ ?'

इतने में वहां स्वामीजी पधारे। उनके परस्पर बढ़े हुए विवाद को देखकर 'कोई कानों में बात न कर सके' इस दृष्टि से स्वामीजी ने अपने दोनों और पट्ट रखवा दिए। फिर अपेक्षा-दृष्टि का प्रयोग कर दोनों को समझाया। स्वामीजी ने कहा-'श्रावक में पांचों ही 'चारित्र' नहीं होते, इस दृष्टि से उसमें आत्माएं सात कही जा सकती हैं और त्याग की अपेक्षा उसमें आंशिक चारित्र होता है इस दृष्टि से उसमें आत्माएं आठ कही जा सकती हैं। यह कह कर उनकी उलझन सुलझा दी।

क्या आप जानते हैं ?

विगय व्यवस्था

विगय के छह प्रकार हैं-

1. दूध, 2. दही 3. तैल 4. घी 5. मिष्ट 6. कढाई-मिश्रित ।

दूध - फीका दूध, फीका छन्ना, दूध का पाउडर, दूध का फीका पेड़ा, फीका मावा आदि।

दही - केवल दही, बंधा हुआ दही, चीनी आदि से रहित मट्ठा। (मक्खन रहित छाछ व छाछ की राबड़ी विगय नहीं।)

तैल - केवल तैल, जैसे सरसों, बादाम, नारियल का तैल। तैल से कुल्ला करने में विगय नहीं लगती। काजु, बादाम आदि मेवा सामान्य विगय वर्जन में वर्जनीय नहीं है।

घृत - घी, मक्खन, वनस्पति घी, चुपड़ा फलका, घी से चुपड़ा पापड़ आदि।

मिष्ट - चीनी, गुड़, खजूर का गुड़, मखाणा, बताशा, खांड, ओला, मिश्री, चपड़ा, महलमालिया, ताल मिश्री, सेक्रिन, चीनी युक्त सिकंजी, चीनीयुक्त जूस आदि। गुलकन्द, मिठासयुक्त खारक व अनारदाणा आदि का खाटा।

कड़ाही-मिश्रित - कड़ाही वह वस्तु, जिसे घी अथवा तेल से तला जाए, जैसे भुजिया, कचोड़ी, समोसा, घेवर, जलेबी, लड्डू आदि। जिसमें मिष्ट विगय डालकर गर्म किया जाए, जैसे - बादाम की कतली, चिटकी की रोटी, मिश्री की रोटी, हलुवा (सीरा), झाझरिया, मिष्टयुक्त अंजीर की कतली, चासनीयुक्त सिकंजी, चाय, कॉफी, उकाली, कष्टर्ड, च्यवनप्राश, आंवला आदि का मुरब्बा व कैरी पाक आदि तथा घी अथवा तेल वाला व्यंजन (साग), पाइनएपल आदि डिब्बाबन्द पदार्थ, गुडराब, टमाटर सोस, रेवड़ी, गोटा-पापड़ी, तिलपट्टी, गजक, तली हुई सोयास्टिक, केला की तली हुई चिप्स आदि।

मिश्रित - एकाधिक विगय मिश्रण वाला पदार्थ, जैसे-मिष्टयुक्त दूध, मिष्टयुक्त दही, चीनी तथा दूध से युक्त आमरस आदि, श्री खण्ड, दूध व मिष्ट युक्त आईस्क्रीम आदि।

साप्ताहिक प्रेरणा

इस सप्ताह महावीर अष्टकम कंठस्थ करने का प्रयास करें।

जानें तेरापंथ को पहचानें स्वयं को

सत्य

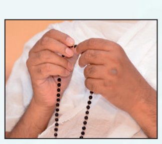

यदि पूछा जाए कि संसार में सारभूत क्या है, तो इसका उत्तर हमें आगम वचन में मिलता है — 'सच्चं लोयम्मि सारभूयं' अर्थात् सत्य ही लोक में सारभूत है।

सत्य की इतनी महत्ता है कि उसे भगवान भी कहा गया है — 'सच्चं भयवं'। सच बोलने वाले को केवल एक बार सोचना पड़ता है, जबकि झूठ बोलने वाले को हर बार। सामान्य व्यक्ति भी झूठ बोलते समय अच्छा नहीं लगता और यदि हम श्रावक की बात करें, तो उसके लिए यह सत्य व्रत के अंतर्गत आता है। यह व्रत ऐसी विशेषताओं से युक्त है कि यदि व्यक्ति सत्यव्रती है तो उसे अनेक सिद्धियाँ और लब्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं, जिनमें वचन सिद्धि एक है।

श्रावक को व्यापार अथवा व्यवहार में सच्चाई का पालन करना चाहिए। विवाह के संदर्भ में वर या वधू के बारे में असत्य नहीं बोलना चाहिए। पशुओं के क्रय–विक्रय में भी असत्य का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

शास्त्रों में यहाँ तक कहा गया है कि व्यक्ति सच बोले, परंतु ऐसा सच नहीं बोले जो अप्रिय और मर्मभेदी हो। उदाहरण के लिए दसवे आलियं के सातवें अध्ययन 'वाक्-शुद्धि' में स्पष्ट निर्देश है कि अप्रिय और मर्मभेदी वाणी नहीं बोलनी चाहिए — जैसे मुनि चोर को 'चोर' न कहे, गोले को 'गोला' न कहे आदि।

अतः — 'सत्यं वयं पावनं' — सत्य वचन पवित्र है और उसका पालन करने वाला भी।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
06 अक्टूबर - 12 अक्टूबर, 2025

मन को संयम में रखने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने किया आचार्य प्रवर से चंडीगढ़ में चातुर्मास हेतु निवेदन

कोबा, गांधीनगर।
27 सितम्बर, 2025

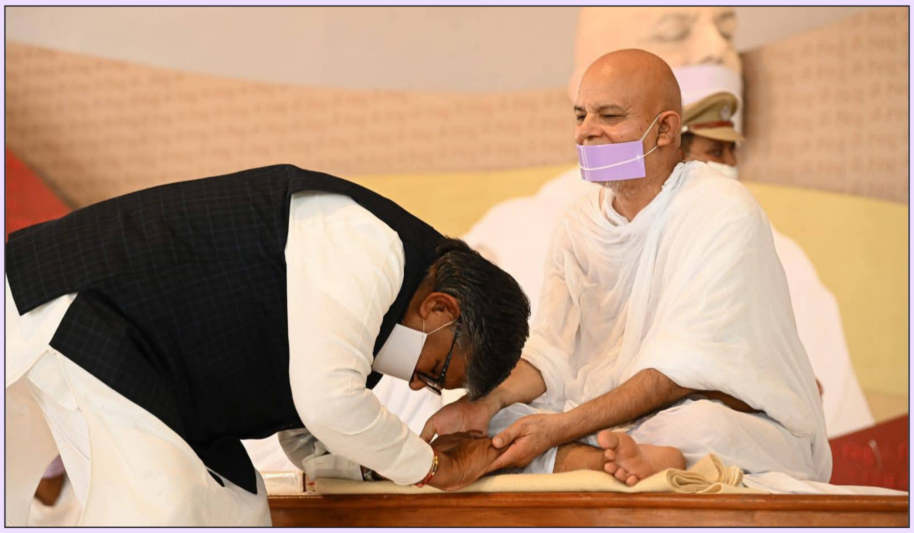

वीतराग साधक महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने नवरात्र के आध्यात्मिक अनुष्ठान के संदर्भ में मंगल मंत्रों का जप करवाया। आज मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान पंजाब के राज्यपाल एवं चण्डीगढ़ के उपराज्यपाल गुलाबचन्द कटारिया पूज्य गुरुदेव की सन्निधि में उपस्थित हुए। राज्यपाल महोदय के आगमन के पश्चात राष्ट्रगान का संगान हुआ।

तत्पश्चात् ज्ञान की धारा बहाते हुए आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'आयारो' आगम के माध्यम से अमृत देशना प्रदान करते हुए कहा कि हमारे जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ में बत्तीस आगम मान्य हैं। इनमें ग्यारह अंग हैं और अंग आगमों में प्रथम आगम है – आचारंग। इस आगम में भगवान महावीर की अति संक्षिप्त जीवनी है और फिर दर्शन, सिद्धांत और अध्यात्म की बातें हैं। आयारो आगम के पांचवें अध्याय में कहा गया है कि मन को असंयम में नहीं ले जाना चाहिए। दुनिया में दो तत्त्व हैं – जीव और अजीव। हमारे जीवन में दो ही तत्त्व हैः एक जीव अर्थात् आत्मा और दूसरा अजीव अर्थात् शरीर। आत्मा जब तक शरीर में रहती है, तब तक जीवन होता है और आत्मा के शरीर से पृथक हो जाने की प्रक्रिया ही मृत्यु कहलाती है। इस प्रकार आत्मा और शरीर का संयुक्त रूप हमारा जीवन है।

इस जीवन में शरीर के साथ-साथ वाणी और मन भी होते हैं। मन एक ऐसा तत्त्व है जो सामने स्पष्ट दिखाई नहीं देता, जबकि वाणी स्पष्ट हो जाती है, ज्ञात हो जाती है। यद्यपि मनःपर्यव ज्ञानी दूसरों के मन के पर्यायों को भी जान सकता है। मन भी सब प्राणियों के पास नहीं होता; संज्ञी प्राणियों, देवताओं, नारकों के पास मन होता है। यहां शास्त्र में कहा गया है कि आदमी को अपने मन को बुरे कार्यों में लगने से बचाने का प्रयास करना चाहिए। जितने भी अपराध या गलत कार्य होते हैं, उनमें मन का भी बड़ा महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसलिए आदमी को अपने मन को संयम में रखने का प्रयास करना चाहिए। मन को सर्वाधिक गतिशील कहा गया है। मन में बुरे विचार न आएं, चंचलता ज्यादा न आए, इसका प्रयास करना चाहिए।

प्रेक्षाध्यान की साधना में भी मन की चंचलता कम करने और मन को राग-द्वेष से मुक्त रखने का प्रयास करना चाहिए। दूसरों के साथ हमारा व्यवहार अहिंसात्मक हो, सद्भावनापूर्ण होना चाहिए। आदमी जो भी कार्य करे, उसमें ईमानदारी रखने का प्रयास करना चाहिए। इसके साथ ही नशीली चीजों के सेवन से बचना चाहिए।आचार्यश्री के पास बैठे राज्यपाल महोदय श्री कटारिया एवं उनके सुरक्षा अधिकारी द्वारा मुखवस्त्रिका लगाई गई थी। आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा कि राज्यपाल महोदयों का अनेकों बार आगमन हुआ है, परन्तु कार्यक्रम के दौरान मुखवस्त्रिका लगाकर बैठने का यह संभवतः पहला अवसर है और यह बहुत बड़ी बात है। हम सभी आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ें।

पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने अपनी श्रद्धासक्ति भावाभिव्यक्ति देते हुए कहा कि मैं परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी को सादर वंदन करता हूं। आज मेरे पुण्य का उदय है जो आपकी वाणी सुनने का अवसर प्राप्त हुआ और आपने कम समय में ही आत्मा, मन, संयम और वाणी के तत्त्व को समझा दिया। साधु-साध्वियां भगवान महावीर की वाणी को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर रहे हैं। मेरा सौभाग्य रहा है कि मुझे आचार्यश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के चरणों में बैठने का अवसर मिला। ये राज्यपाल, मंत्री पद तो जीवन में आएगा, जाएगा, लेकिन मैं ऐसे गुरुओं का श्रावक हूं, यह मुझे अगले जीवन में मिलेगा या नहीं, मैं नहीं जानता। आपकी वाणी बहुत ही प्रभावशाली होती है और दिल को छूने वाली है।

मैं आपसे ऐसा आशीर्वाद मांगता हूं कि मैं राजनीति के रास्ते पर हूं, लेकिन मरते दम तक आपके श्रावक के रूप में अपने धर्म का पालन करता रहूं। राज्यपाल महोदय ने आचार्य प्रवर से चण्डीगढ़ में चातुर्मास हेतु प्रार्थना की।

पूज्य प्रवर के मंगल प्रवचन से पूर्व और जप अनुष्ठान के पश्चात् साध्वीवर्या श्री सम्बुद्धयशाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हम धर्म की क्रियाएं तो कर रहे हैं, परन्तु हमारे भीतर अहिंसा, करुणा, सत्यनिष्ठा आदि मूल्य हैं या नहीं, यह विचारणीय है। हमारी धार्मिकता में वास्तविकता हो, इसके लिए हमें भगवान महावीर के तीन मुख्य सिद्धांतों – अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त को आत्मसात करना होगा। अहिंसा के संदर्भ में जानकारी देते हुए कहा कि जीवों का प्राण-हनन ही हिंसा नहीं है, बल्कि अनेक ऐसे कार्य हैं जो हिंसात्मक होते हैं। हमें जागरूकता रखते हुए अहिंसा का पालन करने का प्रयास करना चाहिए।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा ९वें डॉक्टर सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस संदर्भ में डॉ. धीरज मरोठी, डॉ. चेतन, डॉ. अनिल जैन ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। आचार्यश्री ने मंगल आशीष प्रदान किया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमणजी : झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।